?॥ नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स ॥

मोग्गल्लानसुत्तपाठो

(१) पठमो कण्डो (सञ्ञादि)

१. अआदयो तितालीस वण्णा।

२. दसा-दो सरा।

३. द्वेद्वे सवण्णा।

४. पुब्बो रस्सो।

५. परो दीघो।

६. कादयो ब्यञ्जना।

७. पञ्च पञ्चका वग्गा।

८. बिन्दु निग्गहीतं।

९. इयुवण्णा झला नामस्सन्ते।

१०. पित्थियं।

११. घा।

१२. गो स्यालपने।

(सञ्ञा)

१३. विधिब्बिसेसनन्तस्स।

१४. सत्तमियं पुब्बस्स।

१५. पञ्चमियं परस्स।

१६. आदिस्स।

१७. छट्ठियन्तस्स।

१८. वानुबन्धो।

१९. टानुबन्धा-नेकवण्णा सब्बस्स।

२०. ञकानुबन्धाद्यन्ता।

२१. मानुबन्धो सरानमन्ता परो।

२२. विप्पटिसेधे।

२३. सङ्केतो-नवयवो-नुबन्धो।

२४. वण्णपरेन सवण्णो-पि।

२५. न्तु वन्तुमन्त्वावन्तुतवन्तुसम्बन्धी।

परिभासा

२६. सरो लोपो सरे।

२७. परो क्वचि।

२८. न द्वे वा।

२९. युवण्णानमेओ लुत्ता।

३०. यवा सरे।

३१. एओनं।

३२. गोस्सावङ।

३३. ब्यञ्जने दीघरस्सा।

३४. सरम्हा द्वे।

३५. चतुत्थदुतियेस्वेसं ततियपठमा।

३६. वी-तिस्से-वे वो।

३७. एओनम वण्णे।

३८. निग्गहीतं।

३९. लोपो।

४०. परसरस्स।

४१. वग्गे वग्गन्तो।

४२. येवहिसु ञो।

४३. ये संस्स।

४४. मयदा सरे।

४५. वनतरगा चा-गमा।

४६. छा ळो।

४७. तदमिनादीनि।

४८. तवग्गवरणानं ये चवग्गबयञा।

४९. वग्गलसेहि ते।

५०. हस्स विपल्लासो।

५१. वे वा।

५२. तथनरानं टठणला।

५३. संयोगादिलोपो।

५४. विच्छाभिक्खञ्ञेसु द्वे।

५५. स्यादिलोपो पुब्बस्से-कस्स।

५६. सब्बादीनं वीतिहारे।

५७. यावबोधं सम्भमे।

५८. बहुलं।

इति मोग्गल्लाने ब्याकरणे सञ्ञादिकण्डो पठमो।

(२) दुतियो कण्डो (स्यादि)

१. द्वे द्वेका-नेकेसु नामस्मा सि यो, अं यो, ना हि, स नं, स्मा हि, स नं, स्मिं सु।

२. कम्मे दुतिया।

३. कालद्धानमच्चन्तसंयोगे।

४. गतिबोधाहारसद्दत्थाकम्मकभज्जादीनं पयोज्जे।

५. हरादीनं वा।

६. न खादादीनं।

१. वहिस्सा-नियन्तुके (गण)।

२. भक्खिस्साहिंसायं (गण)।

७. ध्यादीहि युत्ता।

८. लक्खणित्तम्भूतविच्छास्वभिना।

९. पतिपरीहि भागे च।

१०. अनुना।

११. सहत्थे।

१२. हीने।

१३. उपेन।

१४. सत्तम्याधिक्ये।

१५. सामित्ते-धिना।

१६. कत्तुकरणेसु ततिया।

१७. सहत्थेन।

१८. लक्खणे।

१९. हेतुम्हि।

२०. पञ्चमीणे वा।

२१. गुणे।

२२. छट्ठी हेत्वत्थेहि।

२३. सब्बादितो सब्बा।

२४. चतुत्थी सम्पदाने।

२५. तादत्थ्ये।

२६. पञ्चम्यवधिस्मा।

२७. अपपरीहि वज्जने।

२८. पटिनिधिपटिदानेसु पतिना।

२९. रिते दुतिया च।

३०. विना-ञ्ञत्र ततिया च।

३१. पुथनानाहि।

३२. सत्तम्याधारे।

३३. निमित्ते।

३४. यब्भोवो भावलक्खणं।

३५. छट्ठी चा-नादरे।

३६. यतो निद्धारणं।

३७. पठमा-त्थमत्ते।

३८. आमन्तणे।

३९. छट्ठी सम्बन्धे।

४०. तुल्यत्थेन वा ततिया।

४१. अतो योनं टाटे।

४२. निनं वा।

४३. स्मास्मिन्नं।

४४. सस्सा-य चतुत्थिया।

४५. घपते-कस्मिं नादीनं यया।

४६. स्सा वा ते-ति-मामूहि।

४७. नम्हि नुक द्वादीनं सत्तरसन्नं।

४८. बहुकतिन्नं।

४९. ण्णंण्णन्नं तितो झा।

५०. उभिन्नं।

५१. सुउ सस्स।

५२. स्संस्सास्सायेस्वितरेकञ्ञेतिमानमि।

५३. ताय वा।

५४. तेतिमातो सस्स स्साय।

५५. रत्यादीहि टो स्मिनो।

५६. सुहिसु-भस्सो।

५७. ल्तुपितादीन मा सिम्हि।

५८. गे अ च।

५९. अयूनं वा दीघो।

६०. घ ब्रह्मादिते।

६१. ना-म्मादीहि।

६२. रस्सो वा।

६३. घो स्संस्सास्सायंतिंसु।

६४. एकवचनयोस्वघोनं।

६५. गे वा।

६६. सिस्मिंना-नपुंसकस्स।

६७. गोस्सागसिहिनंसु गावगवा।

६८. सुम्हि वा।

६९. गवं सेन।

७०. गुन्नं च नंना।

७१. नास्सा।

७२. गावुम्हि।

७३. यं पीतो।

७४. नंझीतो।

७५. योनं नोने पुमे।

७६. नो।

७७. स्मिंनो नि।

७८. अम्ब्वादीहि।

७९. कम्मादितो।

८०. नास्से-नो।

८१. झला सस्स नो।

३. इतो क्वचि सस्स टानुबन्धो (गण)।

८२. ना स्मास्स।

८३. ला योनं वो पुमे।

८४. जन्त्वादितो नो च।

८५. कूतो।

८६. लोपो-मुस्मा।

८७. न नो सस्स।

८८. योलोपनिसु दीघो।

८९. सुनंहिसु।

९०. पञ्चादीनं चुद्दसन्नम।

९१. य्वादो न्तुस्स।

९२. न्तस्स च ट वंसे।

९३. योसु झिस्स पुमे।

९४. वेवोसु लुस्स।

९५. योम्हि वा क्वचि।

९६. पुमा-लपने वेवो।

९७. स्माहिस्मिन्नं म्हाभिम्हि।

९८. सुहिस्वस्से।

९९. सब्बादीनं नंम्हि च।

४. पुब्बपरावरदक्खिणुत्तराधरानि ववत्थायमसञ्ञायं (गण)।

१००. संसानं।

१०१. घपा सस्स स्सा वा।

१०२. स्मिनो स्सं।

१०३. यं।

१०४. तिंसभापरिसाय।

१०५. पदादीहि सि।

१०६. नास्स सा।

१०७. कोधादीहि।

१०८. अतेन।

१०९. सिस्सो।

११०. क्वचे वा।

१११. अं नपुंसके।

११२. योनं नि।

११३. झला वा।

११४. लोपो।

११५. जन्तुहेत्वीघपेहि वा।

११६. ये पस्सिवण्णस्स।

११७. गसीनं।

११८. असङ्ख्येहि सब्बासं।

११९. एकत्थतायं।

१२०. पुब्बस्मा मादितो।

१२१. ना-तो-मपञ्चमिया।

१२२. वा ततियासत्तमीनं।

१२३. राजस्सि नाम्हि।

१२४ सुनंहिसू।

१२५. इमस्सानित्थियं टे।

१२६. नाम्ह-निमि।

१२७. सिम्ह-नपुंसकस्सायं।

१२८. त्यतेतानं तस्स सो।

१२९. मस्सा-मुस्स।

१३०. के वा।

१३१. ततस्स नो सब्बासु।

१३२. ट सस्मास्मिंस्सायस्संस्सासंम्हाम्हिस्विमस्स च।

१३३. टे सिस्सिसिस्मा।

१३४. दुतियस्स योस्स।

१३५. एकच्चादीह-तो।

१३६. न निस्स टा।

१३७. सब्बादीहि।

१३८. योनमेट।

१३९. नाञ्ञं-च नामप्पधाना।

१४०. ततियत्थयोगे।

१४१. चत्थसमासे।

१४२. वेट।

१४३. पुब्बादीहि छहि।

१४४. मनादीहि स्मिंसंनास्मानं सिसोओसासा।

५. सुमेधादीन मवुद्धिच (गण)।

६. सरवयायवासचेता जलासयक्खयलोहपटमनेसु (गण)।

१४५. सतोसबभे।

१४६. भवतो वा भोन्तो गयोनासे।

१४७. सिस्सग्गितो नि।

१४८. न्तस्सं।

१४९. भूतो।

१५०. महन्तारहन्तानं टा वा।

१५१. न्तुस्स।

१५२. अंङं नपुंसके।

१५३. हिमवतो वा ओ।

१५४. राजादियुवादित्वा।

७. धम्मो वा-ञ्ञत्थे (गण)।

८. इमो भावे (गण)।

१५५. वा-म्हानङ।

१५६. योनमानो।

१५७. आयोनो च सखा।

१५८. टे स्मिनो।

१५९. नोनासेस्वि।

१६० स्मानंसु वा।

१६१. योस्वंहिसु चारङ।

१६२. ल्तुपितादीनमसे।

१६३. नंम्हि वा।

१६४. आ।

१६५. सलोपो।

१६६. सुहिस्वारङ।

१६७. नज्जायोस्वाम।

१६८. टि कतिम्हा।

१६९. ट पञ्चादीहि चुद्दसहि।

१७०. उभगोहि टो।

१७१. आरङस्मा।

१७२. टोटे वा।

१७३. टा नास्मानं।

१७४. टि स्मिनो।

१७५. दिवादितो।

१७६. रस्सारङ।

१७७. पितादीनमनत्वादीनं।

१७८. युवादीनं सुहिस्वानङ।

१७९. नोनानेस्वा।

१८०. स्मास्मिंनं नाने।

१८१. योनं नोने वा।

१८२. इतो-ञ्ञत्थे पुमे।

१८३. ने स्मिनो क्वचि।

१८४. पुमा।

१८५. नाम्हि।

१८६. सुम्हा च।

१८७. गस्सं।

१८८. सास्सं से चानङ।

१८९. वत्तहा सनन्नं नोनानं।

१९०. ब्रह्मस्सु वा।

१९१. नाम्हि।

१९२. पुमकम्मथामद्धानं वा सस्मासु च।

१९३. युवा सस्सिनो।

१९४. नो-त्तातुमा।

१९५. सुहिसु नक।

१९६. स्मास्स ना ब्रह्मा च।

१९७. इमेतानमेना-न्वादेसे दुतियायं।

१९८. किस्स को सब्बासु।

१९९. कि सस्मिंसु वा-नित्थियं।

२००. किमंसिसु सह नपुंसके।

२०१. इमस्सिदं वा।

२०२. अमुस्सादुं।

२०३. सुम्हा-मुस्सा-स्मा।

२०४. नंम्हि तिचतुन्नमित्थियं तिस्सचतस्सा।

२०५. तिस्सो चतस्सो योम्हि सविभत्तीनं।

२०६. तीणिचत्तारि नपुंसके।

२०७. पुमे तयोचत्तारो।

२०८. चतुरो वा चतुस्स।

२०९. मयमस्मा-म्हास्स।

२१०. नंसेस्व-स्माकंममं।

२११. सिम्ह-हं।

२१२. तुम्हस्स तुवं त्वमम्हि च।

२१३. तयातयीनं त्व वा तस्स।

२१४. स्माम्हि त्वम्हा।

२१५. न्तन्तूनं न्तो योम्हि पठमे।

२१६. तं नंम्हि।

२१७. तोतातिता सस्मास्मिंनासु।

२१८. टटाअं गे।

२१९. योम्हि द्विन्नं दुवे द्वे।

२२०. दुविन्नं नंम्हि वा।

२२१. राजस्स रञ्ञं।

२२२. नास्मासु रञ्ञा।

२२३. रञ्ञोरञ्ञस्सराजिनो से।

२२४. स्मिंम्हि रञ्ञेराजिनि।

२२५. समासे वा।

२२६. स्मिंम्हि तुम्हम्हानं तयिमयि।

२२७. अंम्हि तं मं तवं ममं।

२२८. नास्मासु तयामया।

२२९. तव मम तुय्हं मय्हं से।

२३०. वंवाकं नंम्हि।

२३१. दुतिये योम्हि वा।

२३२. अपादादो पदतेकवाक्ये।

२३३. योनंहिस्म-पञ्चम्या वोनो।

२३४. तेमे नासे।

२३५. अन्वादेसे।

२३६. सपुब्बा पठमन्ता वा।

२३७. न च वाहाहेवयोगे।

२३८. दस्सनत्ते-नालोचने।

२३९. आमन्तणं पुब्बमसन्तंव।

२४०. न सामञ्ञवचनमेकत्थे।

२४१. बहूसु वा।

इति मोग्गल्लाने ब्याकरणे स्यादिकण्डो दुतियो।

(३) ततियो कण्डो (समासो)

१. स्यादि स्यादिनेकत्थं।

२. असङ्ख्यं विभत्तिसम्पत्तिसमीपसाकल्या-भावयथा पच्छायुगपदत्थे।

३. यथा न तुल्ये।

४. यावा-वधारणे।

५. पय्यपाबहितिरोपुरेपच्छा वा पञ्चम्या।

६. समीपायामेस्वनु।

७. तिट्ठग्वादीनि।

८. ओरे परि वति पारे मज्झे हेट्ठुद्धा धोन्तो वा छट्ठिया।

९. तं नपुंसकं।

१०. अमादि।

११. विसेसनमेकत्थेन।

१२. नउ।

१३. कुपादयो निच्चमस्यादिविधिम्हि।

९. पादयो गताद्यत्थे पठमाय। (गण)

१०. अच्चादयो कन्ताद्यत्थे दुतियाय। (गण)

११. अवादयो कुट्ठाद्यत्थे ततियाय। (गण)

१२. परियादयो गिलानाद्यत्थे चतुत्थिया। (गण)

१३. न्यादयो कन्ताद्यत्थे पञ्चमिया। (गण)

१४. ची क्रियत्थेहि।

१५. भूसना-दरा-नादरेस्वलंसासा।

१६. अञ्ञे च।

१७. वा-नेकञ्ञत्थे।

१८. तत्थ गहेत्वा तेन पहरित्वा युद्धे सरूपं।

१९. चत्थे।

२०. समाहारे नपुंसकं।

२१. सङ्ख्यादि।

२२. क्वचे-कत्तञ्च छट्ठिया।

२३. स्यादीसु रस्सो।

२४. घपस्सन्तस्सा-प्पधानस्स।

२५. गोस्सु।

२६. इत्थियमत्वा।

२७. नदादितो ङी।

१४. गोतो वा। (गण)

२८. यक्खादित्विनी च।

२९. आरामिकादीहि।

१५. सञ्ञायं मानुसो। (गण)

३०. युवण्णेहि नी।

३१. क्तिम्हा-ञ्ञत्थे।

३२. घरण्यादयो।

१६. आचरिया वा यलोपो च। (गण)

३३. मातुलादित्वानी भरियायं।

१७. अभरियायं खत्तिया वा। (गण)

१८. पुन्नामस्मा योगा अपालकन्ता। (गण)

३४. उपमासंहितसहितसंयतसहसफवामलक्खणादितूरुतू।

३५. युवा ति।

३६. न्तन्तूनं ङीम्हितो वा।

३७. भवतो भोतो।

३८. गोस्सा-वङ।

३९. पुथुस्स पथवपुथवा।

४०. समासन्त्व।

४१. पापादीहि भूमिया।

४२. सङ्ख्याहि।

४३. नदीगोदावरीनं।

४४. असङ्ख्येहि चाङ्गुल्यानञ्ञासङ्ख्यत्थेसु।

४५. दीघाहोवस्सेकदेसेहि च रत्त्या।

४६. गोत्वचत्थे चालोपे।

४७. रत्तिन्दिवदारगवचतुरस्सा।

४८. आयामे-नुगवं।

४९. अक्खिस्मा-ञ्ञत्थे।

५०. दारुमह्यङ्गुल्या।

५१. चि वीतिहारे।

५२. ल्त्वित्थियूहि को।

५३. वा-ञ्ञतो।

५४. उत्तरपदे।

५५. इमस्सिदं।

५६. पुं पुमस्स वा।

५७. ट न्तन्तूनं।

५८. अ।

५९. मनाद्यापादीन मो मयेच।

६०. परस्स सङ्ख्यासु।

६१. जने पुथस्सु।

६२. सो छस्सा-हायतने वा।

६३. ल्तुपितादीन मारङ्गरङ्ग।

६४. विज्जायोनिसम्बन्धानमा तत्र चत्थे।

६५. पुत्ते।

६६. चिस्मिं।

६७. इत्थियं भासितपुमित्थी पुमेवे-कत्थे।

६८. क्वचि पच्चये।

६९. सब्बादयो वुत्तिमत्थे।

७०. जायाय जयं पतिम्हि।

७१. सञ्ञाय मुदोदकस्स।

७२. कुम्भादीसु वा।

७३. सोतादीसू लोपो।

७४. ट नउस्स।

७५. अन सरे।

७६. नखादयो।

७७. नगो वा-प्पाणिनि।

७८. सहस्स सोञ्ञत्थे।

७९. सञ्ञायं।

८०. अप्पच्चक्खे।

८१. अकाले सकत्थे।

८२. गन्थन्ता-धिक्ये।

८३. समानस्स पक्खादीसु वा।

८४. उदरे इये।

८५. रीरिक्खकेसु।

८६. सब्बादीनमा।

८७. न्तकिमिमानं टाकीटी।

८८. तुम्हा-म्हानं तामेकस्मिं।

८९. तं मम-ञ्ञत्र।

९०. वे-तस्सेट।

९१. विधादीसु द्विस्स दु।

९२. दि गुणादीसु।

९३. तीस्व।

९४. आ सङ्ख्यायासतादोनञ्ञत्थे।

९५. तिस्से।

९६. चत्तालीसादो वा।

९७. द्विस्सा च।

९८. बाचत्तालीसा दो।

९९. वीसतिदसेसु पञ्चस्स पण्णपन्ना।

१००. चतुस्स चुचो दसे।

१०१. छस्स सो।

१०२. एकट्ठानमा।

१०३. र सङ्ख्यातो वा।

१०४. छतीहि ळो च।

१०५. चतुत्थततियानमड्ढुड्ढभिया।

१०६. दुतियस्स सह दियड्ढदिवड्ढा।

१०७. सरे कद कुस्सुत्तरत्थे।

१०८. का-प्पत्थे।

१०९. पुरिसे वा।

११०. पुब्बा-परज्जसायमज्झेहा-हस्स ण्हो।

इति मोग्गल्लाने ब्याकरणे समासकण्डो ततियो।

(४) चतुत्थो कण्डो (णादि)

१. णो वा पच्चे।

२. वच्छादितो णानणायना।

१९. कता णियोव। (गण)

२०. कण्हो ब्राह्मणे। (गण)

३. कत्तिकाविधवादीहि णेय्यणेरा।

४. ण्य दिच्चादीहि।

५. आ णि।

६. राजतो ञ्ञो जातियं।

७. खत्ता यिया।

८. मनुतो स्ससण।

९. जनपदनामस्मा खत्तिया रञ्ञे च णो।

१०. ण्य कुरुसिवीहि।

११. ण रागा तेन रत्तं।

१२. नक्खत्ते-निन्दुयुत्तेन काले।

१३. सा-स्स देवता पुण्णमासी।

१४. तमधीते तं जानाति कणिका च।

१५. तस्स विसये देसे।

१६. निवासे तन्नामे।

१७. अदूरभवे।

१८. तेन निब्बत्ते।

१९. तमीधत्थि।

२०. तत्र भवे।

२१. अज्जादीहि तनो।

२२. पुरातो णो च।

२३. अमात्वच्चो।

२४. मज्झादित्विमो।

२५. कण णेय्य णेय्यक यिया।

२६. णिको।

२७. तमस्स सिप्पं सीलं पण्यं पहरणं पयोजनं।

२८. तं हन्त रहति गच्छतुञ्छति चरति।

२९. तेन कतं कीतं बद्धमभिसङ्खतं संसट्ठं हतं हन्ति जितं जयति दिब्बति खणति तरति चरति वहति जीवति।

३०. तस्स संवत्तति।

३१. ततो सम्भूतमागतं।

३२. तत्थ वसति विदितो भत्तो नियुत्तो।

३३. तस्सिदं।

३४. णो।

३५. गवादीहि यो।

३६. पिततो भातरि रेय्यण।

३७. मातितो च भगिनियं छो।

३८. मातापितूस्वा-महो।

३९. हिते रेय्यण।

४०. निन्दा-ञ्ञात-प्पपटिभागरस्स दयासञ्ञासु को।

२१. वत्थितो इवत्थे एय्यो। (गण)

२२. सिलाय णेय्यो च। (गण)

२३. साखादीहि इयो। (गण)

२४. मुखादीहि यो। (गण)

२५. आकस्मिके भिधेये ईयो। (गण)

२६. सक्करादीहि णो। (गण)

२७. अङ्गुल्यादीहि णिको। (गण)

४१. तमस्स परिमाणं णिको च।

४२. यते-तेहि त्तको।

४३. सब्बा चा-वन्थु।

४४. किम्हा रति रीव रीवतक रित्तका।

४५. सञ्जातं तारकादित्वितो।

४६. माने मत्तो।

४७. तग्घो चुद्धं।

४८. णो च पुरिसा।

४९. अयुभद्वितीहंसे।

५०. सङ्ख्याय सच्चुतीसा-स, दसन्ता-धिका-स्मिं सतसहस्से डो।

५१. तस्स पूरणे-कादसादितो वा।

५२. म पञ्चादिकतीहि।

५३. सतादीनमि च।

५४. छा ट्ठट्ठमा।

५५. एका काक्य-सहाये।

५६. वच्छादीहि तनुत्ते तरो।

५७. किम्हा निद्धारणे रतर रतमा।

५८. तेन दत्ते लिया।

५९. तस्स भावकम्मेसु त्त ता त्तन ण्य णेय्यणिय णिया।

६०. ब्य वद्धदासा वा।

६१. नण युवा बो च वस्स।

६२. अण्वादित्विमो।

६३. भावा तेन निब्बत्ते।

६४. तर तमि-स्सिकियिट्ठातिसये।

६५. तन्निस्सिते ल्लो।

६६. तस्स विकारावयवेसु ण णिक णेय्य मया।

६७. जतुतो स्सण वा।

६८. समूहे कण ण णिका।

६९. जनादीहि ता।

७०. इयो हिते।

७१. चक्ख्वादितो स्सो।

७२. ण्यो तत्थ साधु।

७३. कम्मा नियञ्ञा।

७४. कथादित्विको।

७५. पथादीहि णेय्यो।

७६. दक्खिणाया-रहे।

७७. रायो तुमन्ता।

७८. तमेत्थ-स्स-त्थीति मन्तु।

७९. वन्त्ववण्णा।

८०. दण्डादित्विक ई वा।

२८. उत्तमीणे व धना इको। (गण)

२९. असन्निहिते अत्था। (गण)

३०. तदन्ता च। (गण)

३१. वण्णन्ता ईयेव। (गण)

३२. हत्थ दन्तेहि जातियं। (गण)

३३. वण्णतो ब्रह्मचारिम्हि। (गण)

३४. पोक्खरादितो देसे। (गण)

३५. नावायि-को। (गण)

३६. सुखदुक्खा ई। (गण)

३७. बला बाहूरुपुब्बा च। (गण)

८१. तपादीहि स्सी।

८२. मुखादितो रो।

३८. दन्तस्सु च उन्नतदन्ते। (गण)

८३. तुन्धादीहि भो।

८४. सद्धादित्व।

८५. णो तपा।

८६. आल्वभिज्झादीहि।

८७. पिच्छादित्विलो।

८८. सीलादितो वो।

३९. अण्णा निच्चं। (गण)

४०. गाण्डिराजीहि सञ्ञायं। (गण)

८९. मायामेधाहि वी।

९०. सिस्सरे आम्युवामी।

९१. लक्ख्या णो अ च।

९२. अङ्गा नो कल्याणे।

९३. सो लोमा।

९४. इमिया।

९५. तो पञ्चम्या।

९६. इतो तेत्तो कुतो।

९७. अभ्यादीहि।

९८. आद्यादीहि।

९९. सब्बादितो सत्तम्या त्रत्था।

१००. कत्थे-त्थकुत्रा-त्रक्वे-हिध।

१०१. धि सब्बा वा।

१०२. या हिं।

१०३. ता हं च।

१०४. कुहिं कहं।

१०५. सब्बे-कञ्ञ य तेहि काले दा।

१०६. कदा कुदा सदा-धुने-दानि।

१०७. अज्जसज्ज्वपरज्ज्वे-तरहिकरहा।

१०८. सब्बादीहि पकारे था।

१०९. कथमित्थं।

११०. धा सङ्ख्याहि।

१११. वेका ज्झं।

११२. द्वितीहेधा।

११३. तब्बति जातियो।

११४. वारसङ्ख्याय क्खत्तुं।

११५. कतिम्हा।

११६. बहुम्हा धा च पच्चासत्तियं।

११७. सकिं वा।

११८. सो वीच्छा पकारेसु।

११९. अभूततब्भावे करासभूयोगे विकारा ची।

१२०. दिस्सन्तञ्ञेपि पच्चया।

१२१. अञ्ञस्मिं।

१२२. सकत्थे।

१२३. लोपो।

१२४. सरानमादिस्सा-युवण्णस्सा ए ओ णानुबन्धे।

१२५. संयोगे क्वचि।

१२६. मज्झे।

१२७. कोसज्जाज्जव पारिसज्ज सोहज्ज मद्दवारिस्सासभाजञ्ञ थेय्य बाहुसच्चा।

१२८. मनादीनं सक।

१२९. उवण्णस्सा-वङ सरे।

१३०. यम्हि गोस्स च।

१३१. लोपो-वण्णिवण्णानं।

१३२. रानुबन्धे-न्तसरादिस्स।

१३३. किसमहतमिमे कसमहा।

१३४. आयुस्सा-यस मन्तुम्हि।

१३५. जो वुद्धस्सियिट्ठेसु।

१३६. बाळ्हन्तिकपसत्थानं साध नेद सा।

१३७. कणकना-प्पयुवानं।

१३८. लोपो वीमन्तुवन्तूनं।

१३९. डे सतिस्स तिस्स।

१४०. एतस्सेट त्तके।

१४१. णिकस्सि यो वा।

१४२. अधातुस्स के-स्यादितो घे-स्सि।

इति मोग्गल्लाने ब्याकरणे कादिकण्डो चतुत्थो।

(५) पञ्चमो कण्डो (खादि)

१. तिजमानेहि खसा खमावीमंसासु।

२. किता तिकिच्छासंसयेसु छो।

३. निन्दायं गुपबधा बस्स भोच।

४. तुंस्मा लोपो चिच्छायं ते।

५. ईयो कम्मा।

६. उपमा-नाचारे।

७. आधारा।

८. कत्तुता-यो।

९. च्यत्थे।

१०. सद्दादीनि करोति।

११. नमोत्वस्सो।

१२. धात्वत्थे नामस्मि।

१३. सच्चादीहापि।

१४. क्रियत्था।

१५. चुरादितो णि।

१६. पयोजकब्यापारे कापि च।

१७. क्यो भावकम्मेस्वपरोक्खेसु मानन्तत्यादीसु।

१८. कत्तरि लो।

१९. मं च रुधादीनं।

२०. णिणाप्यापीहि वा।

२१. दिवादीहि यक।

२२. तुदादीहि को।

२३. ज्यादीहिक्ना।

२४. क्यादीहि क्णा।

२५. स्वादीहि क्णो।

२६. तनादित्वो।

२७. भावकम्मेसु तब्बानीया।

२८. घ्यण।

२९. आस्से च।

३०. वदादीहि यो।

४१. भुजान्ने। (गण)

३१. किच्च घच्च भच्च भब्ब लेय्या।

४२. सञ्ञायं भरा। (गण)

३२. गुहादीहि यक।

३३. कत्तरि ल्तुणका।

३४. आवी।

३५. आसिंसाय-मको।

३६. करा णनो।

३७. हातो वीहिकालेसु।

३८. विदा कू।

३९. वितो ञातो।

४०. कम्मा।

४१. क्व चण।

४२. गमा रू।

४३. समानञ्ञभवन्तयादितूपमाना दिसा कम्मेरीरिक्खाका।

४४. भावकारके स्वघणघका।

४५. दाधात्वि।

४६. वमादीह्यथु।

४७. क्वि।

४८. अनो।

४९. इत्थियमण त्ति क यकया च।

५०. जाहाहि नि।

५१. करा रिरियो।

५२. इ कि ती सरूपे।

५३. सीला-भिक्खञ्ञा-वस्सकेसु णी।

५४. थावरि-त्तर, भङ्गुर, भिदुर, भासुर, भस्सरा।

५५. कत्तरि भूते क्त्वन्तुत्तावी।

५६. क्तो भावकम्मेसु।

५७. कत्तरि चारम्भे।

५८. ठा-स, वस, सिलिस, सी, रुह, जर, जनीहि।

५९. गमनत्था कम्मकाधारे च।

६०. आहारत्था।

६१. तुं ताये तवे भावे भविस्सति क्रियायं तदत्थायं।

६२. पटिसेधे-लंखलूनं, तुनक्त्वान, क्त्वा वा।

६३. पुब्बे-ककत्तुकानं।

६४. न्तो कत्तरि वत्तमाने।

६५. मानो।

६६. भावकम्मेसु।

६७. ते स्सपुब्बा-नागते।

६८. ण्वादयो।

६९. खछसानमेकस्सरोदि द्वे।

७०. परोक्खायञ्च।

७१. आदिस्मा सरा।

७२. न पुन।

७३. यथिट्ठं स्यादिनो।

७४. रस्सो पुब्बस्स।

७५. लोपो-नादिब्यञ्जनस्स।

७६. खछसेस्वस्सि।

७७. गुपिस्सुस्स।

७८. चतुत्थ दुतियानं ततियपठमा।

७९. कवग्गहानं चवग्गजा।

८०. मानस्स वी परस्स च मं।

८१. कितस्सा-संसये ति वा।

८२. युवण्णानमे ओ पच्चये।

८३. लहुस्सुपान्तस्स।

८४. अस्सा णानुबन्धे।

८५. न ते कानुबन्धनागमेसु।

८६. वा क्वचि।

८७. अञ्ञत्रा पि।

८८. प्ये सिस्सा।

८९. एओनमयवा सरे।

९०. आयावा णानुबन्धे।

९१. आस्सा णापिम्हि युक।

९२. पदादीनं क्वचि।

९३. मं वा रुधादीनं।

९४. क्विम्हि लोपो-न्त ब्यञ्जनस्स।

९५. पररूपमयकारे ब्यञ्जने।

९६. मनानं निग्गहीतं।

९७. न ब्रूस्सो।

९८. कगा चजानं घानुबन्धे।

९९. हनस्स घातो णानुबन्धे।

१००. क्विम्हि घो परिपच्चासमोहि।

१०१. परस्स घंसे।

१०२. जिहरानं गी।

१०३. धास्स हो।

१०४. णिम्हि दीघो दुसस्स।

१०५. गुहिस्स सरे।

१०६. मुहबहानञ्च ते कानुबन्धे त्वे।

१०७. वहस्सुस्स।

१०८. धास्स हि।

१०९. गमादिरानं लोपो-न्तस्स।

११०. वचादीनं वस्सुट वा।

१११. अस्सु।

११२. वद्धस्स वा।

११३. यजस्स यस्स टियी।

११४. ठास्सि।

११५. गापानमी।

११६. जनिस्सा।

११७. सासस्स सिस वा।

११८. करस्सा तवे।

११९. तुंतुनतब्बेसु वा।

१२०. ञास्स ने जा।

१२१. सकापानं कुणकू णे।

१२२. नितो चिस्स छो।

१२३. जरसदानमीम वा।

१२४. दिसस्स पस्स दस्स दस द दक्खा।

१२५. समाना रो रीरिक्खकेसु।

१२६. दहस्स दस्स डो।

१२७. अनघणस्वापरीहि ळो।

१२८. अत्यादिन्तेस्वत्थिस्स भू।

१२९. अआस्सआदीसु।

१३०. न्तमानान्तियियुं स्वादिलोपो।

१३१. पादितो ठास्स वा ठहो क्वचि।

१३२. दास्सि यङ।

१३३. करोतिस्स खो।

१३४. पुरा स्मा।

१३५. नितो कमस्स।

१३६. युवण्णानमियङुवङ सरे।

१३७. अञ्आदिस्सास्सी क्ये।

१३८. तनस्सा वा।

१३९. दीघो सरस्स।

१४०. सा-नन्तरस्स तस्स ठो।

१४१. कसस्सिम च वा।

१४२. धस्तोत्रस्ता।

१४३. पुच्छादितो।

१४४. सास, वस, संस, ससा थो।

१४५. धो धहभेहि।

१४६. दहा ढो।

१४७. बहस्सुम च।

१४८. रुहादीहि हो ळ च।

१४९. मुहा वा।

१५०. भिदादितो नो क्तक्तवन्तूनं।

१५१. दात्विन्नो।

१५२. किरादीहि णो।

१५३. तरादीहि रिण्णो।

१५४. गो भन्जादीहि।

१५५. सुसा खो।

१५६. पचा को।

१५७. मुचा वा।

१५८. लोपो वड्ढा क्तिस्स।

१५९. क्विस्स।

१६०. णिणापीनं तेसु।

१६१. क्वचि विकरणानं।

१६२. मानस्स मस्स।

१६३. ञि लस्से।

१६४. प्यो वा त्वास्स समासे।

१६५. तुंयाना।

१६६. हना रच्चो।

१६७. सासाधिकरा च च रिच्च्या।

१६८. इतो च्चो।

१६९. दिसा वानवास च।

१७०. ञि ब्यञ्जनस्स।

१७१. रा नस्स णो।

१७२. न न्तमानत्यादीनं।

१७३. गमयमिसासदिसानं वा च्छङ।

१७४. जरमरानमीयङ।

१७५. ठापानं तिट्ठ पिवा।

१७६. गमवददानं घम्म वज्ज दज्जा।

१७७. करस्स सोस्स कुब्ब कुरु कयिरा।

१७८. गहस्स घेप्पो।

१७९. णो निग्गहीतस्स।

इति मोग्गल्लाने ब्याकरणे खादिकण्डो पञ्चमो।

(६) छट्ठो कण्डो (त्यादि)

१. वत्तमाने ति अन्ति, सि थ, मि म, ते अन्ते, से व्हे, ए म्हे।

२. भविस्सति स्सति स्सन्ति, स्ससि स्सथ, स्सामि स्साम, स्सते स्सन्ते, स्ससे स्सव्हे, स्सं स्साम्हे।

३. नामे गरहाविम्हयेसु।

४. भूते ई उं, ओ त्थ, इं म्हा, आ ऊ, से व्हं, अ म्हे।

५. अनज्जतने आ ऊ, ओ त्थ, अ म्हा, त्थ त्थुं, से व्हं, इं मुसे।

६. परोक्खे अ उ, ए त्थ, अ म्ह, त्थ रे, त्थो व्हो, इ म्हे।

७. एय्यादो वा तिपत्तियं स्सा स्संसु, स्से स्सथ, स्सं स्साम्हा, स्सथ स्सिंसु, स्ससे स्सव्हे, स्सिं स्साम्हसे।

८. हेतुफलेस्वेय्य एय्युं, एय्यासि एय्याथ, एय्यामि एय्याम, एथ एरं, एथो एय्याव्हो, एय्यं एय्याम्हे।

९. पञ्चपत्थनाविधीसु।

१०. तु अन्तु, हि थ, मिम, तं अन्तं, स्सु व्हो, ए आमधस।

१९. सत्यरहेस्वेय्यादी।

१२. सम्भावने वा।

१३. मायोगे ईआआदी।

१४. पुब्बापरच्छक्कान मेकानेकेसु तुम्हाम्हसेसेसु द्वेद्वे मज्झिमुत्तमपठमा।

१५. आईस्सादीस्वउ वा।

१६. अआदीस्वाहो ब्रूस्स।

१७. भूस्स वुक।

१८. पुब्बस्स अ।

१९. उस्सं स्वाहा वा।

२०. त्यन्तीनं टटू।

२१. ईआदो वचस्सोम।

२२. दास्स दं वा मिमेस्वद्वित्ते।

२३. करस्स सोस्स कुं।

२४. का ईआदीसु।

२५. हास्स चाहङ स्सेन।

२६. लभवसच्छिदभिदरुदानं च्छङ।

२७. भुज मूच वच विसानं क्खङ।

२८. आईआदीसु हरस्सा।

२९. गमिस्स।

३०. डंसस्स च छङ।

३१. हूस्स हे हेहि होही स्सत्यादो।

३२. णानासु रस्सो।

३३. आईऊम्हास्सास्सम्हानं वा।

३४. कुसरुहेही-स्स छि।

३५. अईस्सआदीनं ब्यञ्जनस्सिउ।

३६. बूतो तिस्सीउ।

३७. क्यस्स।

३८. एय्याथस्सेअआईथानं ओअअंत्थत्थोव्होक।

३९. उंस्सिं स्वंसु।

४०. एओत्ता सुं।

४१. हूतो रेसुं।

४२. ओस्स अइत्थत्थो।

४३. सि।

४४. दीघा ईस्स।

४५. म्हात्थान म्ह।

४६. इंस्स च सिउ।

४७. एय्युंस्सुं।

४८. हिस्स-तो लोपो।

४९. क्यस्स स्से।

५०. अत्थितेय्यादिच्छन्नं स सु स सथ सं साम।

५१. आदिद्विन्नमियाइयुं।

५२. तस्स थो।

५३. सिहिस्वट।

५४. मिमानं वा मिम्हा च।

५५. एसुङ।

५६. ईआदो दीघो।

५७. हिमिमेस्वस्स।

५८. सका णास्स ख ईआदो।

५९. स्से वा।

६०. तेसु सुतो क्णोक्णानं रोट।

६१. ञास्स सनास्स नायो तिम्हि।

६२. ञाम्हि जं।

६३. एय्यास्सियाञा वा।

६४. ईस्सत्यादीसु क्रालोपो।

६५. स्सस्स हि कम्मे।

६६. एतिस्मा।

६७. हना छ खा।

६८. हतो ह।

६९. दक्खखहेहि होहीहि लोपो।

७०. कयिरेय्यस्सेय्युमादीनं।

७१. टा।

७२. एथस्सा।

७३. लभा इंईनं थंथा वा।

७४. गुरुपुब्बा रस्सा रे-न्ते-न्तिनं।

७५. एय्येय्यासेय्यन्नं टे।

७६. ओविकरणस्सु परच्छक्के।

७७. पुब्बच्छक्के वा क्वचि।

७८. एय्यामस्से मुच।

इति मोग्गल्लाने ब्याकरणे त्यादिकण्डो छट्ठो।

(७) सत्तमो कण्डो (ण्वादि)

१. चर दर कर रह जन सन तल साद साध कसास चटा य वाहि णु।

२. भर मर चर तर अर गर हन तन मन भम कित धन बंह कम्बम्ब चक्ख भिक्ख संकिन्दन्द यज पटाणास वस पस पंस बन्धा उ।

३. बन्धा ऊ वधो च।

४. जम्बादयो।

५. तपुस विध कुर पुथ मुदा कु।

६. सिन्धादयो।

७. इ।

८. दध्यादयो।

९. युवण्णुपन्ता कि।

१०. वप वर वस रस नभ हर हन पणा ईण।

११. भू गमा ईण।

१२. तन्द लक्खा ई।

१३. गमा रो।

(इति सरपच्चया)

१४. इ भी का करार वक सक वाहि को।

१५. ऊकादको।

१६. भीत्वा नको।

१७. सिङ्घा आणि काटका।

१८. करादित्वको।

१९. बल पते ह्याको।

२०. सामाकादयो।

२१. विच्छा ल गम मुसा किको।

२२. किं कणिकादयो।

२३. इ सा कीको।

२४. कम पदा णुको।

२५. मण्ड सला णूको।

२६. लूकादयो।

२७. कसा सको।

२८. करा तिको।

२९. इसा ठकन।

३०. समा खो।

३१. मुखादयो।

३२. अज वज मुद गद गमा गक।

३३. सिङ्गादयो।

३४. अगा गि।

३५. यावला गु।

३६. फेग्वादयो।

३७. जना घो।

३८. मेघादयो।

(इति कवग्गपच्चया)

३९. चुसर वरा चो।

४०. मरा चुईचीच।

४१. कुस पसा छिक।

४२. कसउसा छुक।

४३. अस मस वस कुच कचा छो।

४४. गुच्छादयो।

४५. अरा जु उट च।

४६. रज्जादयो।

४७. गिधा झक।

४८. वञ्च्यादयो।

४९. कम यजा ञो।

५०. पुञ्ञं।

५१. अरहाञ्ञो हास्स हिर च।

(इति चवग्गपच्चया)

५२. किर तरा कीटो।

५३. सकादीह्यटो।

५४. मकुटावाट कवाट कुक्कुटा।

५५. कमुस कुस कसा ठो।

५६. कुट्ठादयो।

५७. वर करा अण्डो।

५८. मनन्ता डो।

५९. कुण्डादयो।

६०. तिज कस तस दक्खा किणो जस्स खो च।

६१. वीआदितो णि।

६२. गहादीह्य णि।

६३. रीवीभाहि णु।

६४. खाण्वादयो।

६५. क्वादितोणो।

६६. सुवीहि णक।

६७. तिणादयो।

६८. रवण वरण पूरणादयो।

(इति टवग्गपच्चया)

६९. पावसा अति।

७०. धाहिसि तन जन जर गम सचा तु।

७१. अरिस्सुट च।

७२. पित्वादयो।

७३. जन करा रतु।

७४. सका उन्तो।

७५. कपा ओतो।

७६. वसादीह्यन्तो।

७७. हिसीनं मुक च।

७८. हर रुह कुला इतो।

७९. भरादीह्यतो।

८०. किरादीह्या-तक।

८१. अमादीह्य-त्तो।

८२. वादीहि तो।

८३. घरादीहि तक।

८४. नेत्तादयो।

८५. समादीह्यथो।

८६. उपवसा वस्सोट च।

८७. रमा थक।

८८. तित्थादयो।

८९. वस मस कुसा थु।

९०. सक वसा थि।

९१. वीतो थिक।

९२. सारिस्मा रथि।

९३. ता ता इथि।

९४. इसा थी।

९५. रुद खुद मुद मद छिद सूद सप कमा दक।

९६. कुन्दादयो।

९७. ददा दु।

९८. खनान दम रमा धो।

९९. मुद्धादयो।

१००. सीतो धुक।

१०१. वरार कर तर दर यमअज्ज मिथसका कुनो।

१०२. अजा इनो।

१०३. विपिनादयो।

१०४. किरा कनो।

१०५. दी जि इ मीहि नक।

१०६. सि धा वी वाहि नो।

१०७. ऊनादयो।

१०८. वीपता तनो।

१०९. रमा तनक।

११०. सू भाहि नुक।

१११. धास्से च।

११२. वत्ता टाव धमासेह्यनि।

११३. युतो नि।

(इति तवग्गपच्चया)

११४. चमाप पा वपा पो।

११५. यु थु कुनं दीघो च।

११६. खिप सुप नी सू पूहि पक।

११७. सिप्पादयो।

११८. सासा अपो।

११९. विटपादयो।

१२०. गुपा फो।

१२१. गर सरादीहि बो।

१२२. निम्बादयो।

१२३. दरा बि।

१२४. कर सर सल कल वल्ल वसा अभो।

१२५. गदा रभो।

१२६. उसरा सा कतो।

१२७. इतो भक।

१२८. गरावा भो।

१२९. सोब्भादयो।

१३०. उस कुस पद सुखा कुमो।

१३१. वटुमादयो।

१३२. गुधा उमो।

१३३. पठ चरा अमिमा।

१३४. हि धूहि मक।

१३५. तीतो रीसनो च।

१३६. खी सु वी या गा हि सा लू खु हु मर धर कर घर जमा म सामा मो।

१३७. अस्मादयो।

१३८. नीतो मि।

१३९. ऊमि भूमि निमि रस्मि।

(इति पवग्गपच्चया)

१४०. मा छाहि यो।

१४१. जनिस्स जा च।

१४२. हदयादयो।

१४३. खी सि सिनी सी सु वी कु सू हि रक।

१४४. हिचि दु मिनं दीघो च।

१४५. धाता नमी च।

१४६. भद्रादयो।

१४७. मन्दङ्क ससा स म ध चता उरो।

१४८. विधुरादयो।

१४९. तिमरुहरुधबधमदमन्दवजा जरुचकसा किरो।

१५०. थिरादयो।

१५१. ददगरेहि दुर भरा।

१५२. चर दर जर गर मरेहिते।

१५३. पीतो क्वरो।

१५४. चीवरादयो।

१५५. कुतो क्ररो।

१५६. वसासा छरो।

१५७. मसा छेरो च।

१५८. धूवातो सरो।

१५९. भमादीह्यरो।

१६०. वदिस्स बद च।

१६१. वदजनानं ठङ च।

१६२. पचिस्सिठङ च।

१६३. वका अरण।

१६४. सिग्यङ्गाग मज्जकला ला आरो।

१६५. कमिस्स स्सु च।

१६६. भिङ्गा (ङ्का) रादयो।

१६७. करा मारो।

१६८. पुस सरेहि खरो।

१६९. सर वस कला कीरो वस्सुट च।

१७०. गब्भीरादयो।

१७१. खज्ज वल्ल मसा ऊरो।

१७२. कप्पूरादयो।

१७३. कठ चका ओरो।

१७४. मोरादयो।

१७५. कुतो एरक।

१७६. भूसूहि रिक।

१७७. मीकसीनीहि रु।

१७८. सिना एरु।

१७९. भीरुहि रुक।

१८०. तमा बूलो।

१८१. सितो लकवाला।

१८२. मङ्ग कम सम्ब सब सक वस विस केव कल पल्ल कठ पट कुण्ड मण्डा अलो।

१८३. मुसा कलो।

१८४. थलादयो।

१८५. कुला कालो च।

१८६. मुळालादयो।

१८७. चण्ड पता णालो।

१८८. मादितो लो।

१८९. अन सन कल कुक सठ महा इलो।

१९०. कुटा किलो।

१९१. सिथिलादयो।

१९२. चट कण्ड वट्ट पुथा कुलो।

१९३. तुमुलादयो।

१९४. कल्ल कप तक्क पटा ओलो।

१९५. अङ्गा उलो लि।

१९६. अञ्जा लि।

१९७. छदा लि।

१९८. अल्यादयो।

१९९. पिलादी ह्य वो।

२००. साळवादयो।

२०१. सरा आवो।

२०२. अल मल बिला णुवो।

२०३. गात्वीवो।

२०४. सुतो क्व क्वा।

२०५. विद्वा।

२०६. थुतो रे वो।

२०७. समा रिवो।

२०८. छदा रवि।

२०९. पूर तिमा किसो रस्सो च।

२१०. करा ईसो।

२११. सिरीसादयो।

२१२. करा रिब्बि सो।

२१३.ससास वस विस हन वन मनान कमा सो।

२१४. आमि थु कुसीतो सक।

२१५. फस्सादयो।

२१६. सुतो णिसक।

२१७. वे ता त यु पना ल कल चमा असो।

२१८. वय दिव कर करे ह्य सणसकपास कसा।

२१९. सस मस दंसा सा सु।

२२०. विदा दसुक।

२२१. ससा रीहो।

२२२. जीवामा हो वमा च।

२२३. तण्हादयो।

२२४. पणुस्सहा हीही णोलङ च।

२२५. खी मि पी चु मा वा काहि ळो उस्स वा दीघो च।

२२६. गुतो ळक च।

२२७. पङ्गुळादयो।

२२८. पातो ळि।

२२९. वीतो ळु।

इति मोग्गल्लाने ब्याकरणे ण्वादिकण्डो सत्तमो।

॥ नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स॥

मोग्गल्लानब्याकरणं

१. पठमो सञ्ञादिकण्डो

सिद्धमिद्धगुणं साधु, नमस्सित्वा तथागतं।
सधम्मसङ्घं भासिस्सं, मागधं सद्दलक्खणं॥

१. अआदयो तितालीस वण्णा।

अकारादयो निग्गहीतन्ता तेचत्तालीस-क्खरा वण्णा नाम होन्ति। अ आ इ ई उ ऊ ए ए ओ ओ, क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ, ट ठ ड ढ ण, त थ द ध न, प फ ब भ म, य र ल व स ह ळ अं। तेन क्वत्थो? ''ए ओ न मवण्णे'' १. ३७।

तितालीसाभि वचनं कत्थचि वण्णलोपं ञापेति। तेन 'पटिसङ्खा योनिसो'तिआदि सिद्धं।

२. दसादो सरा।

तत्थादिम्हि दस वण्णा सरा नाम होन्ति। तेन क्वत्थो? ''सरो लोपो सरे'' १, २६ इच्चादि।

३. द्वेद्वे सवण्णा। तेसु द्वेद्वे सरा सवण्णा नाम होन्ति। तेन क्वत्थो? ''वण्णपरेन सवण्णोपि'' १, २४।

४. पुब्बो रस्सो।

तेसु द्वीसु यो यो पुब्बो, सो सो रस्ससञ्ञो होति। तेसु ए.ओ.संयोगतो पुब्बाव दिस्सन्ति। तेन क्वत्थो? ''रस्सो वा'' २,६२ इच्चादि।

५. परो दीघो।

ते स्वेव द्वीसुयो यो परो, सो सो दीघसञ्ञो होति। तेन क्वत्थो? ''यो लो पनिसु दीघो'' २,८८ इच्चादि।

६. कादयो ब्यञ्जना।

ककारादयो वण्णा निग्गहीतपरियन्ता ब्यञ्जनसञ्ञाहोन्ति। तेन क्वत्थो? ''ब्यञ्जने दीघरस्सा'' १,३३ इच्चादि।

७. पञ्च पञ्चका वग्गा।

कादयो पञ्च पञ्चका वग्ग, नाम होन्ति। तेन क्वत्थो? ''वग्गे वग्गन्तो'' १,४१ इच्चादि।

८. बिन्दु निग्गहीतं।

य्वायं वण्णो बिन्दुमत्तो, सो निग्गहीतसञ्ञो होति। तेन क्वत्थो? ''निग्गहीतं'' १,३८ इचादि। गरुसञ्ञाकरणं अन्वत्थसञ्ञत्थं।

९. इयुवण्णा झला नामस्सन्ते।

नामं पाटिपदिकं, तस्सअन्ते वत्तमाना इवण्णुवण्णा झलसञ्ञा होन्ति यथाक्कमं। तेन क्वत्थो? ''झला वा'' २,१११ इच्चादि।

१०. पित्थियं।

इत्थियं वत्तमानस्स नामस्स-न्ते वत्तमाना इवण्णुवण्णा पसञ्ञा होन्ति। तेन क्वत्थो? ये पस्सिवण्णस्स'' २,११६ इच्चादि।

११. घा।

इत्थियं वत्तमानस्स नामस्स-न्ते वत्थमानो आकारो घसञ्ञो होति। तेन क्वत्थो? ''घब्रह्मादिते'' २,६० इच्चादि।

१२. गो स्यालपने।

आलपने सि गसञ्ञो होति।

तेन क्वत्थो? ''गेवा'' २,६५ इच्चादि।

(सञ्ञा)

१३. विधिब्बिसेसनन्तस्स।

यं विसेसनं, तदन्तस्स विधि ञातब्बो ''अतो योनं टाटे'' २,४१ नरानरे।

१४. सत्तमियं पुब्बस्स।

सत्तमीनिद्देसे पुब्बस्सेव कारियं ञातब्बं ''सरो लोपो सरे'' १,२६ वेळग्गं। 'तमह'न्तीध कस्मा न होति?, सरेतोपसिलेसिकाधारो तत्थेताव वुच्चते 'पुब्बस्सेव होति न परस्सा'ति।

१५. पञ्चमियं परस्स।

पञ्चमीनिद्देसे परस्स कारियं ञातब्बं ''अतोयोनं टाटे'' २,४१ नरानरे। इध न होतं 'जन्तुहो अनत्ता'। इध कस्मा न होति? ओसख्यो, अनन्तरे कतत्थताय न ब्यवहितस्स कारियं।

१६. आदिस्स।

परस्स स्सिस्समानं कारियमादिवण्णस्स ञातब्बं ''र सङ्ख्यातो वा'' ३,१०३ तेरस।

१७. छट्ठियन्तस्स।

छट्ठीनिद्दिट्ठस्स यं कारियं, तदन्तस्स वण्णस्स विञ्ञेय्यं ''राजस्सि नाम्हि'' २,२३ राजिना।

१८. ङानुबन्धो।

ङकारो अनुबन्धो यस्स, सो अन्तस्स होति ''गोस्सा वङ'' १,३२ गवास्सं।

१९. टानुबन्धानेकवण्णा सब्बस्स।

टकारो-नुबन्धो यस्स, सो-नेकक्खरो चादेसो सब्बस्स होति ''इमस्सानित्थियं टे'' २,१२८ एसु, ''नाम्हि-निमि'' २,१२६ अनेन।

२०. ञकानुबन्धाद्यन्ता।

छट्ठीनिद्दिट्ठस्स ञानुबन्धकानुबन्धा आद्यन्ता होन्ति ''ब्रूतो तिस्सीञ'' ६,३६ ब्रवीति, ''भूस्स वुक'' ६,१७ बभूव।

२१. मानुबन्धो सरानमन्ता परो।

मकारो-नुबन्धो यस्स, सो सरा नमन्ता सरा परो होति ''मञ्च रुधादीनं'' ५-१९ रुन्धति।

२२. विप्पटिसेधे।

द्विन्नं सावकासानमेकत्थप्पसङ्गे परो होति। यथा द्विन्नं तिण्णं वापुरिसानं सहप्पत्तियं परो, सो च (गच्छति) त्वं च (गच्छसि, तुम्हे) गच्छथ। सो च (गच्छति,) त्वं च (गच्छसि,) अहं च (गच्छामि, मयं) गच्छाम।

२३. सङ्केतो-नवयवो-नुबन्धो।

यो नवयवभूतोसङ्केतो, सो-नुबन्धोति ञातब्बो, ''लुपितादीनमासिम्हि'' २-५७ कत्ता।

सङ्केतग्गहणं किं? पकतियादिसमुदायस्सानुबन्धता मा होतूति, अनवयवोहि समुदायो... समुदायरूपत्तायेव।

अनवयवग्गहणं किं? ''अतेन'' २-१०८ जनेन। इमिनाव लोपस्सावगतत्ता नानुबन्धलोपाय वचनमारद्धं।

२४. वण्णपरेन सवण्णोपि।

वण्णसद्दो परो यस्मा तेन सवण्णोपि गय्हति संच रूपं ''युवण्णानमेओ लुत्ता'' १-२९ वाकेरितं, समोना।

२५. न्तु वन्तुमन्त्वावन्तुतवन्तुसम्बन्धी।

वन्त्वादिसम्बन्धीयेवन्तु गय्हति, ''न्तन्तूनं न्तो योम्हि पठमे'' २-२१५ गुणवन्तो।

वन्त्वादिसम्बन्धीति किं? जन्तू तन्तू।

(परिभासायो।)

२६. सरो लोपो सरे।

सरे सरो लोपनीयो होति। तत्रि-मे, सद्धि-न्द्रियं, नोहे-तं, भिक्खुनो-वादो, समेता-यस्मा, अभिभा-यतनं, पुत्ताम-त्थि, असन्ते-त्थ।

२७. परो क्वचि।

सरम्हा परो सरो क्वचि लोपनीयो होति। सो-पि, साव, यतो-दकं, ततो-व। क्वचीतिकिं? सद्धि-न्द्रियं, अयमधिकारो आपरिच्छेदावसाना, तेन नातिप्पसङ्गो।

२८. न द्वेवा।

पुब्बपरसरा द्वेपि वा क्वचि न लुप्यन्ते, लता इव, लते-व, लता-व।

२९. युवण्णानमेओ लुत्ता।

लुत्ता सरा परेसं इवण्णुवण्णानं एओ होन्ति वा यथाक्कमं।

तस्से-दं, वाते-रितं, नो-पेति, वामो-रू, अते-वञ्ञेहि, वो-दकं। कथं ''पच्चोरस्मि''न्ति? योगविभागा। वात्वेव? तस्सिदं।

लुत्तेति किं? लता इव।

३०. यवा सरे।

सरे परे इवण्णुवण्णानं यकारवकारा होन्ति वा यथाक्कमं। ब्याकतो, इच्चस्स, अज्झिणमुत्तो, स्वागतं, स्वापनलानिलं, वात्वेव? इति-स्स। क्वचित्वेव? यानी-ध, सू-पट्ठितं।

३१. एओनं।

एओनंयवायोन्ति वा सरे यथाक्कमं। त्यज्ज ते-ज्ज, स्वाहं सो-हं। क्वचित्वेव? पुत्ताम-त्थि, असन्ते-त्थ।

३२. गोस्सा-वङ।

सरे गोस्स अवङ होति। गवा-स्सं। 'यथरीव, तथरिवे'ति निपाताव, 'भुसामिवे'ति इवसद्दो एवत्थो।

३३. ब्यञ्जने दीघरस्सा।

रस्सदीघानं क्वचि दीघरस्सा होन्ति ब्यञ्जने। तत्रा-यं, मुनीचरे, सम्मदेव, मालभारी।

३४. सरम्हा द्वे।

सरम्हा परस्स ब्यञ्जनस्स क्वचि द्वे रूपानि होन्ति। पग्गहो। सरम्हाति किं? तं खणं।

३५. चतुत्थदुतियेस्वेसं ततियपठमा।

चतुत्थदुतियेसु परेस्वेसं चतुत्थदुतियानं तब्बग्गे ततिय पठमा होन्ति। पच्चासत्थ्या, निग्घोसो, अक्खन्ति, बोज्झङ्गा, सेतच्छत्तं, दड्ढो, निट्ठानं, महद्धनो, यसत्थेरो, अप्फुटं, अब्भुग्गतो। एस्वीति किं? थेरो। एसन्ति किं? पत्थो।

३६. वितिस्सेवे वा।

एवसद्दे परे इतिस्स वो होति वा। इत्वेव, इच्चेव। एवेति किं? इच्चाह।

३७. एओनम वण्णे।

एओनं वण्णे क्वचि अ होति वा। दिस्वा याचक मागते, अकरम्हस ते, एस अत्थो, एस धम्मो, अग्गमक्खायति, स्वातनं, हिय्यत्तनं, करस्सु। वात्वेव? याचके आगते एसो धम्मो। वण्णेति किं? सो।

३८. निग्गहीतं।

निग्गहीतमागमो होति वा क्वचि। चक्खुं उदपादि चक्खुउदपादि, पुरिमं जातिं पुरिमजातिं, कत्तब्बं कुसलं बहुं। अवंसिरोतिआदीसु निच्चं... ववत्थितविभासत्ता वाधिकारस्स, सामत्तियेनागमोव, स च रस्स सरस्सेव होति... तस्स रस्सानुगतत्ता।

३९. लोपो।

निग्गहीतस्स लोपो होति वा क्वचि। क्याहं किमहंसारत्तो संरत्तो। सल्ले खो-गन्तुकामो गन्तुमनोति, आदीसु निच्चं।

४०. परसरस्स।

निग्गहीतम्हा परस्स सरस्स लोपो होति वा क्वचि। त्वं-सि त्वमसि।

४१. वग्गे वग्गन्तो।

निग्गहीतस्स खो वग्गे वग्गन्तो वा होति पच्चासत्त्या। तङ्करोति तं करोति, तञ्चरति तं चरति, तण्ठानं तं ठानं, तन्धनं तं धनं, तम्पाति तं पाति। निच्चं पदमज्झे गन्त्वा, क्वचञ्ञात्रपि सन्तिट्ठति।

४२. येवहिसु ञो।

य एव हि सद्देसु निग्गहीतस्स वा ञो होति। यञ्ञदेव, तञ्ञेव, तञ्हि, वात्वेव? यं यदेव।

४३. ये संस्स।

संसद्दस्स यं निग्गहीतं तस्स वा ञो होति यकारे। सञ्ञमो संयमो।

४४. मयदा सरे।

निग्गहीतस्स मयदा होन्ति वा सरे क्वचि। तमहं, तयिदं, तदलं। वा त्वेव? तं अहं।

४५. वनतरगा चागमा।

एते मयदा च आगमा होन्ति सरे वा क्वचि। तिवङ्गिकं, इतो नायति, चिनित्वा, तस्मातिह, निरोजं, पुथगेव, इधमाहु, यथयिदं, अत्तदत्थं। वा त्वेव? अत्तत्थं। 'अतिप्पगो खो तावा'ति-पठमन्तो पगसद्दोव।

४६. छा ळो।

छसद्दा परस्स सरस्स ळकारो आगमो होति वा। छळङ्गं, छळायतनं। वात्वेव? छअभिञ्ञा।

४७. तदमिनादीनि।

तदमिनादीनि साधूनि भवन्ति। तं इमिना तदमिना, सकिं आगामी सकदागामी, एकं इध अहं एकमिदाहं, संविधाय अवहारो संविदावहारो, वारिनो वाहको वलाहको, जीवनस्स मूतो जीमूतो, छवस्स सयनं सुसानं, उद्धं खमस्स उदुक्खलं, पिसितासो पिसाचो, महियं रवतीति मयूरो, एवमञ्ञेपि पयोगतो-नुगन्तब्बा, परेसं पिसोदरादिमिवेदं दट्ठब्बं।

४८. तवग्गवरणानं ये चवग्गबयञा।

तवग्गवरणानं क्वचि चवग्गबयञा होन्ति यथाक्कमं यकारे। अपुच्चण्डताय, तच्छं, यज्जेवं, अज्झत्तं, थञ्ञं, दिब्बं, पय्योसना, पोक्खरञ्ञो। क्वचित्वेव? रत्त्या

४९. वग्गलसेहि ते।

वग्गलसेहि परस्स यकारस्स क्वचि ते वग्गलसा होन्ति।

सक्कते, पच्चते, अट्टते, कुप्पते, फल्लते, अस्सते। क्वचित्वेव? क्याहं।

५०. हस्स विपल्लासो।

हस्स विपल्लासो होति यकारे। गुय्हं।

५१. वे वा।

हस्स विपल्लासो होति वा वकारे। बव्हाबाधो बव्हाबाधो।

५२. तथानरानं टठणला

तथनरानं टठणला होन्ति वा। दुक्कटं, अट्ठकथा, गहणं, पलिघो, पलायति। वात्वेव? दुक्कतं। क्वचित्वेव? सुगतो।

५३. संयोगादि लोपो।

संयोगस्स यो आदीभूतो-वयवो तस्स वा क्वचि लोपो होति। पुप्फं-सा जायते-गिनि।

५४. विच्छाभिक्खञ्ञेसु द्वे।

विच्छायमाभिक्खञ्ञे च यं वत्तते, तस्स द्वे रूपानि होन्ति। क्रियाय गुणेन दब्बेन वा भिन्ने अत्थे ब्यापितुमिच्छा विच्छा। रुक्खं रुक्खं सिञ्चति, गामो गामो रमणीयो, गामे गामे पानीयं, गेहे गेहे इस्सरो, रसं रसं भक्खयति, किरियं किरियमारभते।

अत्थियेवा-नुपुब्बियेपि विच्छा मूले मूले थूला, अग्गे अग्गे सुखुमा, यदि हि एत्थ मूलग्गभेदो न सिया, आनुपुब्बियम्पि न भवेय्य। मासकं मासकं इमम्हा कहापणा भवन्थानं द्विन्नं देहीति मासकं मासकमिच्चेतस्मा विच्छागम्यते, सद्दन्तरतो पन इमम्हा कहापणाति अवधारणं। पुब्बं पुब्बं पुप्फन्ति, पठमं पठमं पच्चन्तीत्यत्रापि विच्छाव। इमे उभो अड्ढा कतरा कतरा एसं द्विन्नमड्ढता, सब्बे इमे अड्ढा कतमा कतमा इमेसं अड्ढता इहापि विच्छाव। आभिक्खञ्ञं पोनोपुञ्ञं पचति पचति, पपचति पपचति, लुनाहि लुनाहित्वेवायं लुनाति, भुत्वा भुत्वा गच्छति, पटपटा करोति, पटपटायति।

५५. स्यादिलोपो पुब्बस्सेकस्स।

विच्छायमेकस्स द्वित्ते पुब्बस्स स्यादिलोपो होति। एकेकस्स। कथं मत्थकमत्थकेनाति? 'स्यादिलोपो पुब्बस्सा'ति योगविभागा, नाचातिप्पसङ्गो योगविभागा इट्ठप्पसिद्धीति।

५६. सब्बादीनं वीतिहारे।

सब्बादीनं वीतिहारे द्वे भवन्ति पुब्बस्स स्यादिलोपो च। अञ्ञमञ्ञस्स भोजका, इतरीतरस्स भोजका।

५७. यावबोधं सम्भमे।

तुरितेनापायहेतुपदस्सनं सम्भमो, तस्मिंसति वत्थु यावन्तेहि सद्देहि सो-त्थो विञ्ञायते, तावन्तो सद्दा पयुज्जन्ते। सप्पो सप्पो सप्पो, बुज्झस्सु बुज्झस्सु बुज्झस्सु, भिन्नो भिक्खुसङ्घो भिन्नो भिक्खुसङ्घो।

५८. बहुलं।

अयमधिकारो आसत्थपरिसमत्तिया। तेन नातिप्पसङ्गो इट्ठप्पसिद्धि च।

इति मोग्गल्लाने ब्याकरणे वुत्तियं

पठमो कण्डो।

२. दुतियो कण्डो (स्यादि)

१. द्वे द्वे-कानेकेसु नामस्मा सि यो, अं यो, ना हि, स नं, स्मा हि, स नं, स्मिं सु।

एतेसं द्वे द्वे होन्ति एकानेकत्थेसु वत्तमानतो नामस्मा। मुनि मुनयो, मुनिं मुनयो, मुनिना मुनीहि, मुनिस्स मुनीनं, मुनिस्मा मुनीहि, मुनिस्स मुनीनं, मुनिस्मिं मुनीसु, एवं कुमारी कुमारियो, कञ्ञा कञ्ञायोति। एतानि सत्त दुकानि सत्त विभत्तियो विभागो विभतीति कत्वा, एत्थ सिअमिती-कारा-कारा ''किमं सिसु'' २,२०० ति संकेतत्था।

२. कम्मे दुतिया।

करीयति कत्तु किरियाया-भिसम्बन्धीयतीति कम्मं, तस्मिं दुतियाविभत्ति होतं। कटं करोति, ओदनं पचति, आदिच्चं पस्सति।

'ओदनो पच्चती'ति ओदनसद्दतो कम्मता नप्पतीयते, किञ्चरहि? आख्याततो। 'कटं करोति विपुलं दस्सनीय'न्ति अत्थेव गुणयुत्तस्स कम्मता, इच्छितेपि कम्मत्ताव दुतिया सिद्धा गावुं पयो दोहति, गोमन्तं गावं याचति, गावमवरुन्धति वजं, माणवकं मग्गं पुच्छति, गोमन्तं गावं भिक्खते, रुक्खमवचिनाति फलानि, सिस्सं धम्मं ब्रूते, सिस्सं धम्ममनुसासतीति। एवं अनिच्छितेपि अहिं लङ्घयति, विसं भक्खेति। यंनेविच्छितं नापि अनिच्छितं, तत्थापि दुतिया सिद्धा। गामं गच्छन्तो रुक्खमूलमुपसप्पति।

पथविं अधिसेस्सति, गाममधितिट्ठति, रुक्खमज्झासतेतिअधिसीठासानंपयोगे-धिकरणे कम्मवचनिच्छा, वत्तिच्छातो हि कारकानि होन्ति। तं यथा-वलाहका विज्जोतते, वलाहकस्स विज्जोतते, वलाहको विज्जोतते, वलाहके विज्जोतते, वलाहकेन विज्जोततेति। एवमभिनिविसस्स वा धम्ममभिनिविसते धम्मे वा।

तथा उपन्वज्झावसस्साभोजन निवुत्तिवचनस्स गाममुपवसति, ग, ममनुवसति, पब्बतमधिवसति, घरमावसति। अभोजननिवुत्ति वचनस्साति किं? गामे उपवसति, भोजननिवुत्तिं करोतीति अत्थो। तप्पानाचारेपि कम्मत्ताव दुतिया सिया नदिम्पिवति, गामं चरति, एवं 'सचे मं आलपिस्सती'तिआदीसुपि। विहिताव पतिधयोगे दुतिया — 'पटिभन्तु तं चुन्द बोज्झङ्गा'ति। तं पति बोज्झङ्गा भासन्तूति अत्थो, यदातु धातुनायुत्तो पति, तदा तेना-योगा सम्बन्धे छट्ठीव 'तस्स नप्पटिभाती'ति। अक्खे दिब्बति, अक्खेहि दिब्बति, अक्खेसु दिब्बतीति कम्मकरणाधिकरणवचनिच्छा।

३. कालद्धानमच्चन्तसंयोगे।

किरिया, गुण, दब्बेहि साकल्लेन कालद्धानं सम्बन्धो अच्चन्तसंयोगो। तस्मिं विञ्ञायमाने कालसद्देहि अद्धअद्देहि च दुतिया होति। मासमधीते, मासं कल्याणि, मासं गुळधाना, कोसमधीते, कोसं कुटिला नदी, कोसं पब्बतो। अचन्तसंयोगेति किं? मासस्स द्वीहमधीते, कोसस्सेकदेसे पब्बतो।

पुब्बण्हसमयं निवासेत्वा, एकं समयं भगवा, इमं रत्तिं चत्तारो महाराजाति एवमादीसु कालवाची हि अच्चन्तसंयोगत्ताव दुतिया सिद्धा। विभत्तिविपल्लासेनपि वा बहुलंविधाना।

फलप्पत्तियं किरियापरिसमत्त्यपवग्गो, तस्मिं विञ्ञायमाने कालद्धानं किरियायाच्चन्तसंयोगे ततियाभिमता, सापि करणत्ताव सिद्धा 'मासेनानुवाको-धीतो, कोसेनानुवाको-धीतो'ति। अनपवग्गेतु असाधकतमत्ताकरणत्ताभावे दुतियाव

‘मासमधीतो-नुवाको, न चाने न गहितो’ति।

कारकमज्झे ये कालद्धानवाचिनो, ततो सत्तमीपञ्चमियो अभिमता ‘अज्ज भुत्वा देवदत्तो द्विहे भुञ्जिस्सति, द्वीहा भुञ्जिस्सति, अत्रट्ठो-यमिस्सासो कोसे लक्खं विज्झति, कोसा लक्खं विज्झती’ति, तापीह सकसककारकवचनिच्छायेव सिद्धा।

४. गति बोधाहार सद्दत्थाकम्मक भज्जादीनं पयोज्जे।

गमनत्थानं बोधत्थानं आहारत्थानं सद्दत्थानमकम्मकानं भज्जादीनञ्च पयोज्जे कत्तरि दुतिया होति। सामत्थिया च पयोजकब्यापारेन कम्मतावस्स होतीति पतीयते। गमयति माणवकं गामं, यापयति माणवकं गामं, बोधयति माणवकं धम्मं, वेदयति माणवकं धम्मं, भोजयति माण-वकं मोदकं, आसयति माणवकं मोदकं, अज्झापयति माणवकं वेदं, पाठयति माणवकं वेदं, आसयति देवदत्तं, साययति देवदत्तं, अञ्ञं भज्जापेति, अञ्ञं कोट्टापेति, अञ्ञं सन्थरापेति। एतेसमेवाति किं? पाचेति ओदनं देवदत्तेन यञ्ञदत्तो। पयोज्जेति किं? गच्छति देवदत्तो। यदा चरहि गमयति देवदत्तं यञ्ञदत्तो, तमपरो पयोजेति, तदा गमयति देवदत्तं यञ्ञदत्तेनेति भवितब्बं ... गमयतिस्सा-गमनत्थत्ता।

५. हरादीनं वा।

हरादीनं पयोज्जे कत्तरि दुतिया होति वा। हारेति भारं देवदत्तं देवदत्तेनेति वा, अज्झोहारेति सत्तुं देवदत्तं देवदत्तेनेति वा, कारेति कटं देवदत्तं देवदत्तेनेति वा दस्सयते जनं राजं जनेनेति वा, अभिवादयते गुरुं देवदत्तं देवदत्तेनेति वा।

६. न खादादीनं।

खादादीनं पयोज्जे कत्तरि दुतिया न होति। खादयति देवदत्तेन, आदयति देवदत्तेन, अव्ह, पयति देवदत्तेन, सद्दाययति देवदत्तेन, कन्दयति देवदत्तेन, नाययति देवदत्तेन।

(१) वहिस्सानियन्तुके। वाहयति भारं देवदत्तेन अनियन्तुकेति किं? वाह-यति भारं बलीबद्दे।

(२) भक्खिस्साहिं सायं। भक्खयति मोदके देवदत्तेन। अहिंसायन्ति किं? भक्खयति बलीबद्दे सस्सं।

७. झादीहि युत्ता।

धीआदीहि युत्ततो दुतिया होति। धिरत्थु मं पूतिकायं, अन्तरा च राजगहं अन्तरा च नालन्दं, समाधानमन्तरेन, मुचलिन्दमभितो सरमिच्चादि, छट्ठियापवादो-यं।

८. लक्खणित्थम्भूतविच्छास्वभिना।

लक्खणादीस्वत्थेस्वभिना युत्तम्हा दुतिया महाति। रुक्खमभि विज्जोतते विज्जु, साधु देवदत्तो मातरमभि, रुक्खं रुक्खमभितिट्ठति।

९. पतिपरीहि भागे च।

पतिपरीहि युत्तम्हा लक्खणादीसु भागे चत्थे दुतिया होति। रुक्खं पति विज्जोतते विज्जु, साधु देवदत्तो मातरं पति, रुक्खं रुक्खं पति तिट्ठति, यदेत्थ मं पति सिया। रुक्खं परि विज्जोतते विज्जु, साधु देवदत्तो मातरं परि, रुक्खं रुक्खं परि तिट्ठति, यदेत्थ मं परि सिया।

१०. अनुना।

लक्खणादीस्वत्थेस्वनुना युत्तम्हा दुतिया होति। रुक्खमनु विज्जोतते विज्जु, सच्चकिरियमनु वुट्ठि पावस्सि, हेतु च लक्खणं भवति, साधु देवदत्तो मातरमनु, रुक्खं रुक्खमनु तिट्ठति, यदेत्थ मं अनु सिया।

११. सहत्थे।

सहत्थे-नुना युत्तम्हा दुतिया होति। पब्बतमनु सेना तिट्ठति।

१२. हीने।

हीनत्थे-नुना युत्तम्हा दुतिया होति। अनु सारिपुत्तं पञ्ञवन्तो।

१३. उपेन।

हीनत्थे उपेन युत्तम्हा दुतिया होति। उप सारिपुत्तं पञ्ञवन्थो।

१४. सत्तम्याधिक्ये।

आधिक्यत्थे उपेन युत्तम्हा सत्तमी होति। उप खारियं दोणो।

१५. सामित्ते-धिना।

सामिभावत्थे-धिना युत्तम्हा सत्तमी होति। अधि ब्रह्मदत्ते पञ्चाला, अधि पञ्चालेसु ब्रह्मदत्तो।

१६. कत्तुकरणेसु ततिया।

कत्तरि करणे च कारके ततिया होति। पुरिसेन कतं, असिना छिन्दति। पकतिया-भिरूपो, गोत्थेन गोतमो, सुमेधो नाम नामेन, जातिया सत्तवस्सिकोति भूधातुस्स सम्भवा करणे एव ततिया। एवं समेन धावति विसमेन धावति, द्विदोणेन धञ्ञं किणाति, पञ्चकेन पसवो किणातीति।

१७. सहत्थेन।

सहत्थेन योगे ततिया सिया। पुत्तेन सह गतो, पुत्तेन सद्धिं आगतो, ततियापि छट्ठीव अप्पधाने एव भवति।

१८. लक्खणे।

लक्खणे वत्तमानतो ततिया सिया। तिदण्डकेन परिब्बाजकमद्दक्खी, अक्खिना काणो, तेन हि अङ्गेन अङ्गिनो विकारो लक्खीयते।

१९. हेतुम्हि।

तक्किरिया योग्गे ततिया सिया। अन्नेन वसति, विज्जाय यसो।

२०. पञ्चमीणे वा।

इणे हेतुम्हि पञ्चमी होति वा। सतस्मा बद्धो, सतेन वा।

२१. गुणे।

परङ्गभूते हेतुम्हि पञ्चमी होति वा। जळत्ता बद्धो जळत्तेन वा, पञ्ञाय मुत्तो, हुत्वा अभावतोअनिच्चा, सङ्खारनिरोधा विञ्ञाणनिरोधो।

२२. छट्ठी हेत्वत्थेहि।

हेत्वत्थवाचीहि योगे हेतुम्हि छट्ठी सिया। उदरस्स हेतु, उदरस्स कारणा।

२३. सब्बादितो सब्बा।

हेत्वत्थेहि योगे सब्बादीहि सब्बा विभत्तियो होन्ति। को हेतु, कं हेतुं, केन हेतुना, कस्स हेतुस्स, कस्मा हेतुस्मा, कस्स हेतुस्स, कस्मिं हेतुस्मिं, किं कारणं, केन कारणेन, किं निमित्तं, केन निमित्तेन, किं पयोजनं, केन पयोजनेन इच्चेवमादि। हेत्वत्थेहीत्वेव? केन कतं।

२४. चतुत्थी सम्पदाने।

यस्स सम्मा पदीयते तस्मिं चतुत्थी सिया। सङ्घस्स ददाति। आधारविवक्खायं सत्तमीपि सिया सङ्घे देहि।

२५. तादत्थ्ये।

तस्से-दं तदत्थं, तदत्थभावे जोतनीये नामस्मा चतुत्थी सिया। सीतस्स पटिघाताय, अत्थाय हिताय (सुखाय) देवमनुस्सानं, नालं दारभरणाय, यूपाय दारु, पाकाय वजतीत्वेवमादि।

कस्स सादुं न रुच्चभि, मा-यस्मन्तानम्पि सङ्घभेदो रुच्चित्थ, खमति सङ्घस्स, भत्तमस्स नच्छादेसीति छट्ठी सम्बन्धवचनिच्छायं, न चेवं विरोधो सिया सदिसरूपत्ता, एवंविधेसु च सम्बन्धस्स सद्दिकानुमतत्ता, कस्स वा त्वं धम्मं

रोचेसीति अत्थमत्ते पठमा।

एवमञ्ञापि विधञ्ञय्या, परतोपि यथागमं।

रञ्ञो सतं धारेति, रञ्ञो छत्तं धारेतीति सम्बन्धे छट्ठी, एवं रञ्ञो सिलाघते, रञ्ञो हनुते, रञ्ञो उपतिट्ठते, रञ्ञो सपते, देवापि तस्स पिहयन्ति तादिनो, तस्स कुज्झ महावीर, यदिहं तस्स पकुप्पेय्यं, दुहयति दिसानं मेघो, यो मित्तानं न दूभति, यो अप्पदुट्ठस्स नरस्स दुस्सति, क्याहं अय्यानं अपरज्झामि, इस्सयन्ति समणानं तित्थिया, धम्मेन नयमानानं का उसूया रञ्ञो भाग्यमारज्झति, रञ्ञो भाग्यमिक्खते, तेन याचितो अयाचितो वा तस्स गावो पटिसुणाति, गावो आसुणाति, भगवतो पच्चस्सोसुं, होतु पतिगिणाति, होत्वनुगिणाति, आरोचयामि वो पतिवेदयामि वो, धम्मं ते देसेस्सामि, यथा वो भगवा ब्याकरेय्य, अलं ते इध वासेन, किं ते जटाहि दुम्मेध, अरहति मल्लो मल्लस्साति।

जीवितं तिणायपि न मञ्ञमानोति तादत्थ्य चतुत्थी, तिणेन यो अत्थो तदत्थायपीति अत्थो, ''यो च सीतञ्च उण्हञ्च, तिणा भिय्यो न मञ्ञति'' तिणमिव जीवितं मञ्ञमानोति सविसयाव विभत्तियो। सग्गाय गच्छतीति तादत्थ्ये चतुत्थी, यो हि सग्गं गच्छति तदत्थं तस्स गमनन्ति, कम्मवचनिच्छायन्तु दुतियाव सग्गं गच्छतीति।

आयु भोतो होतु, चिरं जीवितं, भद्दं कल्याणं अत्थं पयोजनं, कुसलं अनामयं, हितं पथ्यं सुखं सातं भोतो होतु, साधु सम्मुति मेतस्स, पुत्तस्साविकरेय्य गुय्हमत्थं, तस्स मे सक्को पातुरहोसि, तस्स पहिणेय्य, भिक्खूनं दुतं पाहेसि, कप्पति समणानं आयोगो, एकस्स द्विन्नं तिण्णं वा पहोति, उपमं ते करिस्सामि, अञ्जलिं ते पग्गण्हामि, तस्स फासु, लोकस्सत्थो, नमो ते पुरिसाजञ्ञ, सोत्थि तस्स, अलं मल्लो मल्लस्स, समत्थो मल्लो मल्लस्स, तस्स हितं, तस्स सुखं, स्वागतं ते महाराजाति सब्बत्थ छट्ठी सम्बन्धे, एवंविधमञ्ञम्पेव विञ्ञेय्यं यथागमं।

२६. पञ्चम्यवधिस्मा।

पदत्थावधिस्मा पञ्चमीविभत्ति होति। गामस्मा आगच्छतु, एवं चोरस्मा भायति, चोरस्मा उत्तसति, ओरस्मा तायति, चोरस्मा रक्खतीति, सचे भायथ दुक्खस्स, पमादे भयदस्सिवा, तसन्ति दण्डस्साति छट्ठी सत्तमियोपि होन्तेव सम्बन्धाधारवचनिच्छायं।

अज्झेना पराजेति, पटिपक्खे पराजेतीति सविसयाव विभत्तियो। सचे केवट्टस्स परज्जिस्सामीति छट्ठीपि होति सम्बन्धवचनिच्छायं। यवेहि गावो वारेति, पापा चित्तं निवारये, काके रक्खति तण्डुलाति सविसयेव पञ्चमी। चित्तं रक्खेथ मेधावीति दुतियाव दिस्सति कम्मत्थे। उपज्झाया अन्तरधायति, उपज्झाया अधिते, कामतो जायते सोकोति सविसये पञ्चमी।

तत्थेव-न्तरधायि सु, नटस्स सुणोति, पदुमं तत्थ जायेथाति सत्तमीछट्ठियोपि होन्तेव सविसये। हिमवन्ता पभवति गङ्गा, पाणातिपाता विरमस्सु खिप्पं, अञ्ञो देवदत्ता, भिन्नो देवदत्ताति सविसयेव पञ्चमी। एवं आरा सो आसवक्खया, इतरो देवदत्ता, उद्धं पादतला अधो केसमत्थका, पुब्बो गामा, पुब्बेव सम्बोधा, ततो परं, ततो अपरेन समयेन, ततुत्तरिन्ति। सम्बन्धवचनिच्छायं छट्ठीपि पुरतो गामस्स, दक्खिणतो गामस्स, उपरि पब्बतस्स, हेट्ठा पासादस्साति। पासादमारुय्ह पेक्खति पासादा पेक्खति, आसने उपविसित्वा पेक्खति आसना पेक्खतीति अवधिवचनिच्छायं पञ्चमी।

पुच्छानाख्यानेसु कुतो भवं? पातटलिपुत्तस्माति। तथा देसकालमानेपि पाटलिपुत्तस्मा राजगहं सत्त योजनानि, सत्तसु योजनेसूति वा। एवं इतो तिण्णं मासान-मच्चयेनाति, किच्छालद्धन्ति गुणे पञ्चमी। किच्छेन मे अधिगतन्ति हेतुम्हि करणे वा ततिया। एवं थोका मुत्तो, थोकेन मुत्तोति। थोकं चलतीति किरियाविसेसने कम्मनि दुतिया।

दूरन्ति कत्थयोगेपि सविसयेव पञ्चमीछट्ठियो सियुं, दूरं गामस्मा, अन्तिकं गामस्मा, दूरं गामस्स, अन्तिकं गामस्साति, दूरन्ति कत्थेहि तु सब्बाव सविसये सियुं बाधकाभावा दूरो गामो, अन्तिको गामोत्वेवमादि।

केचि पनाहु 'असत्तवचनहेतेहि पाटिपदिकत्थे दुतियाततियापञ्चमीसत्तमियो, सत्तवचनेहि तु सब्बाव सविसये'ति, ते पनञ्ञेहेव पटिक्खित्ता। दूरं मग्गो, अन्तिकं मग्गोति किरियाविसेसनं... भूधातुस्स गम्ममानत्ता। विसुद्धो लोभनीयेहि धम्मेहि, परिमुत्तो सो दुक्खस्मा विविच्चेव कामेहि, गम्भीरतो च पुथुलतो च योजनं, आयामेन योजनं, ततो पभुति, यतो सरामि अत्तानन्ति सविसयेव विभत्तियो।

२७. अपपरीहि वज्जने।

वज्जने वत्तमानेहि अपपरीहि योगे पञ्चमी होति। अप सालाय आयन्ति वाणिजा, परि सालाय आयन्ति वाणिजा, सालं वज्जेत्वाति अत्थो। वज्जनेति किं? रुक्खं परिविज्जोतते विज्जु। आपाटलिपुत्तस्मा वस्सि देवोति मरियादा-भिविधीस्ववधि विसयेव पञ्चमी, विना पाटलिपुत्तेन सह वेति विसेसो, एवं याव पाटलिपुत्तस्मा वस्सि देवोति।

२८. पटिनिधिपटिदानेसु पतिना।

पटिनिधिम्हि पटिदाने च वत्तमानेन पतिना योगे नामस्मा पञ्चमी विभत्ति होति। बुद्धस्मा पति सारिपुत्तो, घतमस्स तेसस्मा पति ददाति, पटिनिधिपटिदानेसूति किं? रुक्खं पति विज्जोतते।

२९. रिते दुतिया च।

रितेसद्देन योगे नामस्मा दुतिया होति पञ्चमी च। रिते सद्धम्मं, रिते सद्धम्मा।

३०. विना-ञ्ञत्र ततिया च।

विना-ञ्ञत्रसद्देहि योगे नामस्मा ततिया च होति दुतिया पञ्चमियो च। विना वातेन, विना वातं, विना वातस्मा, अञ्ञत्र एकेन पिण्डपातनीहारकेन, अञ्ञत्र धम्मं, अञ्ञत्र धम्मा।

३१. पुथनानाहि।

एतेहि योगे ततिया होति पञ्चमी च। पुथगेव जनेन, पुथगेव जनस्मा, जनेन नाना, जनस्मा नाना।

३२. सत्तम्याधारे।

किरियाधार भूत कत्तु कम्मानं धारणेन यो किरियायाधारो तस्मिं कारके नामस्मा सत्तमी होति। कटे निसीदति

(देवदत्तो), थालियं ओदनं पचति, आकासे सकुना, भिलेसु तेलं, गङ्गायं वजो।

३३. निमित्ते।

निमित्तत्थे सत्तमी होति। अजिनम्हि हञ्ञते दीपि, मुसावादे पाचित्थियं।

३४. यब्भावोभावलक्खणं।

यस्स भावो भावन्तरस्स लक्खणं भवति, ततो सत्तमी होति। गावीसु दुय्हमानासु गतो, दुद्धासु आगतो। भावोति किं? यो जटाहि सो भुञ्जति। भावलक्खणन्ति किं? यो भुञ्जति सो देवदत्तो, ''अकाले वस्सति तस्स, ताले तस्स न वस्सती''ति विसयसत्तमी।

३५. छट्ठी चानादरे।

यस्स भावो भावन्तरस्स लक्खणं भवति, ततो छट्ठी भवति सत्तमी च अनादरे गम्यमाने। ''आकोटयन्तो सो नेति, सिविराजस्स पेक्खतो'', ''मच्चु गच्छति आदाय, पेक्खमाने महाजने''।

गुन्नं सामीति सम्बन्धे छट्ठी, गोसु सामीति विसयसत्तमी, एवं गुन्नमिस्सरो, गोस्विस्सरो, गुन्नं अधिपति, गोसु अधिपति, गुन्नं दायादो, गोसु दाहादो, दुन्नं सक्खि, गोसु सक्खि, गुन्नं पतिभू, गोसु पतिभू, गुन्नं पसूतो, गोसु पसूतो, कुसला नच्चगीतस्स, कुसला नच्चगीते, आयुत्तो कटकरणस्स, आयुत्तो कटकरणेति।

तथाधारवचनिच्छायं सत्तमी, भिक्खूसु अभिवादेन्ति, मुद्धनि धुम्बित्वा, बाहासु गहेत्वा, हत्थेसु पिण्डाय चरन्ति, पथेसु गच्छन्ति, कदलीसु गजे रक्खन्तीति। ञाणस्मिं पसन्नोति विसयसत्तमी, ञाणेन पसन्नोति करणे ततिया, एवं ञाणस्मिं उस्सुक्को ञाणेन उस्सुक्कोति।

३६. यतो निद्धारणं।

जातिगुणकिरियाहि समुदायतेकदेसस्स पुथक्करणं निद्धारणं। यतो तं करीयति, ततो छट्ठीसत्तमियो होन्ति। सालयो सूकधञ्ञानं पथ्यतमा, सालयो सूकधञ्ञेसु पथ्यतमा, कण्हा गावीनं सम्पन्नखीरतमा, कण्हा गावीसु सम्पन्नखीरतमा, गच्छतं धावन्तो सीघतमो, गच्छन्तेसु धावन्तो सीघतमो। सीलमेव सुता सेय्योति अवधिम्हियेव पञ्चमी।

३७. पठमात्थमत्ते।

नामस्साभिधेय्यमत्ते पठमाविभत्ति होति। रुक्खो। इत्थि पुमा नपुंसकन्ति लिङ्गम्पि सद्दत्थोव, तथा दोणो खारी आळ्हकन्ति परिमाणम्पि सद्दत्थोव, एको द्वे बहवोति सङ्ख्यापि सद्दत्थोव।

३८. आमन्तणे।

सतो सद्देनाभिमुखीकरणमामन्तणं। तस्मिं विसये पठमा विभत्ति होति। भोपुरिस, भोक्कत्थि, भो नपुंसक।

३९. छट्ठी सम्बन्धे।

किरियाकारकसञ्जातो अस्सेदम्भावहेतुको सम्बन्धो नाम। तस्मिं छट्ठी विभत्ति होति। रञ्ञो पुरिसो, सरति रज्जस्साति सम्बन्धे छट्ठी, रज्जसम्बन्धिनिं सतिं करोतीति अत्थो, कम्मवचनिच्छारन्तु दुतियाव सरति रज्जं। तथा रजकस्स वत्थं ददाति, पहरतो पिट्ठिं ददाति, बालो पूरति पापस्स, अमच्चे तात जानाहि, धीरे अत्थस्स कोविदे, दिवसस्स तिक्खत्तुं, सकिं पक्खस्स, पूरं हिरञ्ञसुवण्णस्स कुम्भन्त्वेवमादि।

कितकप्पयोगे कत्तुकम्मेसु बहुलं सम्बन्धवचनिच्छायं छट्ठी, साधु सम्मतो बहुजनस्स, सुप्पटिविद्धा बुद्धानं धम्मधातु, धम्मस्स गुत्तो मेधावी, अमतं तेसं परिभुत्तं, तस्स भवन्ति वत्तारो, अविसंवादको लोकस्स, अलज्जीनं निस्साय, चतुन्नं महाभूतानं उपादाय पसादोत्वेवमादि।

कत्तुकम्मवचनिच्छायन्तु ततिया दुतियायो च, सञ्चत्तो पितरा अहं, सरसि त्वं एवरूपिं वाचं भासिता, भगवन्तं दस्सनायत्वेवमादि।

४०. तुल्यत्थेन वा ततिया।

तुल्यत्थेन योगे छट्ठी होति ततिया वा, तुल्यो पितु, तुल्यो पितरा, सदिसो पितु, सदिसो पितरा, इह कथं ततिया न होति? अज्जुनस्स तुला नत्थि, केसवस्सुपमा न चेति, नेते तुल्यत्था, किञ्जरहि तुल्यानमोपम्मत्था।

४१. अतो योनं टाटे।

अकारन्थतो नामस्मा योनं टाटे होन्ति यथाक्कमं, टकारा सब्बदेसत्था, बुद्धा बुद्धे, अतोति किं? कञ्ञायो, इत्थियो, वधुयो, इध कस्मा न भवति अग्गयो। अविधानसामत्थिया।

४२. निनं वा।

अकारन्ततो नामस्मा निनं टाटे वा होन्ति यथाक्कमं। रूपा, रूपे, रूपानि, अतोत्वेव अट्ठीनि।

४३. स्मास्मिंनं।

अकारन्ततो नामस्मा स्मास्मिन्नं टाटे वा होन्ति यथाक्कमं। बुद्धा बुद्धस्मा, बुद्धे बुद्धस्मिं, अतोत्वेव अग्गिस्मा अग्गिस्मिं।

४४. सस्साय चतुत्थिया।

अकारन्ततो परस्स सस्स चतुत्थिया आयो होति वा। बुद्धाय बुद्धस्स, भिय्यो तादत्थ्येयेवायमायो दिस्सते, क्वचिदेवञ्ञत्थ, अतोत्वेव इसिस्स, चतुत्थियाति किं? बुद्धस्स मुखं, अत्तत्थन्ति अत्थसद्देन समासो।

सब्बादितोपि स्मास्मिंसानं टाटेआया होन्तेव... निरुत्तिकारानुमतत्ता बुद्धवचने सन्दस्सनवतो च, तत्रोदमुदाहरणं

‘अस्मा लोका परम्हा च, उभया धंसते नरो’, ‘त्याहं मन्ते परत्थद्धो’, ‘यायेव खो पनत्थाय आगच्छेय्याथो तमेवत्थं साधुकं मनसिकरेय्याथो’ति।

४५. घपतेकस्मिं नादीनं यया।

घपतो नादीनमेकस्मिं यया होनि यथाक्कमं। कञ्ञाय, रत्तिया, इत्थिया, धेनुया, वधुया, एकस्मिन्ति किं? कञ्ञाहि, रत्तीहि।

४६. स्सा वा तेतिमामूहि।

घपसञ्ञेहि तेतिमामूहि नादीनमेकस्मिंस्सा वा होति, तस्सा कतं, तस्सा दीयते, तस्सा निस्सटं, तस्सा परिग्गहो, तस्सा पतिट्ठितं, ताय वा, एवं एतिस्सा एताय, इमिस्सा इमाय, अमुस्सा अमुया, एतेहीति किं? सब्बाय, नादीनं त्वेव? सा, घपतोत्वेव? ताहि अमूहि।

४७. नंम्हि नुक द्वादीनं सत्तरसन्नं।

द्वादीनं सत्तरसन्नं सङ्ख्यानं नुक होति नंम्हि विभत्तम्हि, द्विन्नं चतुन्नं, पञ्चन्नं, एवं याव अट्ठारसन्नं, उकारो उच्चारणत्थो, ककारो अन्तावयवत्थो, तेन नंम्हि न दीघो।

४८. बसुकतिन्नं।

नंम्हि बहुनो कतिस्स च नुक होति, बहुन्नं, कतिन्नं।

४९. ण्णंण्णन्नं तितो झा।

झसञ्ञा तितो नंवचनस्स ण्णंण्णन्नं होति, तिण्णं, तिण्णन्नं, झाति किं तिस्सन्नं।

५०. उभिन्नं।

उभा नंवचनस्स इन्नं होति, उभिन्नं।

५१. सुञ सस्स।

नामस्मा सस्स सुञ होति, बुद्धस्स, द्विसकारपाठेन सिद्धे लाघवत्थमिदं।

५२. स्संस्सास्सायेस्वितरे कञ्ञेभिमानमि।

स्समादीस्वितरादीनमि होति, इतरिस्सं, इतरिस्सा, एकिस्सं, एकिस्सा, अञ्ञिस्सं, अञ्ञिस्सा, एतिस्सं, एतिस्सा, एतिस्साय, इमिस्सं, इमिस्सा, इमिस्साय, एस्विति किं? इतराय, एसन्ति किं? सब्बस्सं, सब्बस्सा।

५३. ताय वा।

स्समादीसु तस्सा वा इ होति, तिस्सं तस्सं, तिस्सा तस्सा, तिस्साय तस्साय, स्संस्सास्सायेस्वित्वेव? ताय।

५४. तेतिमातो सस्स स्साय।

ताएताइमातो सस्स स्सायो होति वा। तस्साय ताय, एतिस्साय एताय, इमिस्साय इमाय।

५५. रत्यादीहि टो स्मिनो।

रत्यादीहि स्मिनो टो होति वा, रत्तो रत्तियं, आदो आदिस्मिं।

५६. सुहिसुभस्सो।

उभस्स सुहिस्वो होति। उभोसु, उभोहि।

५७. ल्तुपितादिनमा सिम्हि।

ल्तुप्पच्चयन्तानं पितादीनं च आ होति सिम्हि। कत्ता, पिता। पितु, मातु, भावु, मीतु, दुहितु, जामातु, नत्तु, होतु, पोतु।

५८. गे अ च।

ल्तुपितादीनं अ होति गे आ च, भो कत्त, भो कत्ता, भो पित, भो पिता।

५९. अयुनं वा दीघो।

अ इ उ इच्चेसं वा दीघो होति गे परे तिलिङ्गे। भो पुरिसा, भो पुरिस, भो अग्गी, भो अग्गि, भो भिक्खू, भो भिक्खू।

६०. घब्रह्मादिते।

घतो ब्रह्मादितो च गस्से वा होति। भोति कञ्ञे, भोति कञ्ञा, भो ब्रह्मे, भो ब्रह्म, भो खत्ते, भो खत्त, भो इसे, भो इसि, भो सखे, भो सख। सखि सखीति इत्थियं सिद्धमेव। आकतिगणो-यं, एवमञ्ञत्रापि।

६१. नम्मादीहि।

अम्मादीहि गस्से न होति। भोति अम्मा, भोति अन्ना, भोति अम्बा।

६२. रस्सो वा।

अम्मादीनं गे रस्सो होति वा। भोति अम्म, भोति अम्मा।

६३. घो स्सं, स्सा, स्सायं तिंसु।

स्समादीसु घो रस्सो होति। तस्सं, तस्सा, तस्साय, तं, सभतिं, एस्विति किं? ताय, सभाय।

६४. एकवचन योस्व-घोनं।

एकवचने योसु च घओकारन्तवज्जिता नं नामानं रस्सो होति तिलिङ्गे। इत्थिं, इत्थिया, इत्थियो, वधुं वधुया, वधुयो, दण्डिं, दण्डिना, दण्डिनो, सयम्भुं, सयम्भुना, सयम्भुवो, अघो नन्ति किं? कञ्ञाय, कञ्ञायो, ओग्गहणमुत्तरत्थं।

६५. गे वा।

अघोनं गे वा रस्सो होति तिलिङ्गे, इत्थि, इत्थी, वधु, वधू, दण्डि, दण्डी, सयम्भु, सयम्भू। अघोनंत्वेव? भोति कञ्ञा, भो गो।

६६. सिस्मिं नानपुंसकस्स।

नपुंसकवज्जितस्स नामस्स सिस्मिं रस्सो न होति। इत्थी, दण्डी, वधू, सयम्भू। सिस्मिन्ति किं? इत्थिं, अनपुंसकस्साति किं? दण्डि कुलं।

६७. गोस्सागसिहिनंसु गावगवा।

गसिहिनंवज्जितासु विभत्तीसु गोसद्दस्स गावगवा होन्ति। (गावं, गवं), गावो, गवो, गावेन, गवेन, गावस्स, गवस्स, गावस्मा, गवस्मा, गावे, गवे। अगसिहिनंसूति किं? भो गो, गो तिट्ठति, गोहि, गोनं।

६८. सुम्हि वा।

गोस्स सुम्हि गावगवा होन्ति वा। गावेसु, गवेसु, गोसु।

६९. गवं सेन।

गोस्स से वा गवं होति सह सेन। गवं, गावस्स, गवस्स।

७०. गुन्नं च नंना।

नंवचनेन सह गोस्स गुन्नं होति गवंच वा। गुन्नं, गवं, गोनं।

७१. नास्सा।

गोतो नास्स आ होति वा। गावा, गवा, गावेन, गवेन।

७२. गावुम्हि।

अंवचने गोस्स गाव्ह वा होति। वाव्हं, गावं, गवं। गोस्स गोणादेसो न कतो... सद्दन्तरत्ता।

७३. यं पीतो।

पसञ्ञीतो अंवचनस्स यं वा होति। इत्थियं, इत्थिं। पीतोति किं? दण्डिं, रत्तिं।

७४. नं झीतो।

झसञ्ञीतो अंवचनस्स नं वा होति। दण्डिनं, दण्डिं। कथं 'बुद्धं आदिच्चबन्धुन'न्ति? योगविभावा। झाति किं? इत्थिं। ईति किं? अग्गिं।

७५. योनं नोने पुमे।

झीतो योनं नोने वा होन्ति यथाक्कमं पुल्लिङ्गे। दण्डीनो, दण्डिने, दण्डी, झीतो त्वेव? इत्थियो, पुमेति किं? दण्डीनि कुलानि।

७६. नो।

झीतो योनं नो वा होति पुल्लिङ्गे। दण्डिनो तिट्ठन्ति, दण्डिनो पस्स, दण्डी वा।

७७. स्मिनो नि।

झीतो स्मिंवचनस्स नि होति वा, दण्डिनि, दण्डिस्मिं, झीतो त्वेव? अग्गिस्मिं।

७८. अम्ब्वादीहि।

अम्बुआदीहि स्मिनोनि होति वा, फलं पतति अम्बुनि, पुप्फं यथा पंसुनि आतपे कतं, वात्वेव? अम्बुम्हि, पंसुम्हि।

७९. कम्मादितो।

कम्मादितो स्मिनो नि होति वा। कम्मनि कम्मे। कम्म, चम्म, वेस्म, भस्म (अस्म), ब्रह्म, अत्त, आतुम, घम्म, मुद्ध। कम्मादितोति किं? बुद्धे।

८०. नास्सेनो।

कम्मादितो नावचनस्स एनो वा होति। कम्मेन, कम्मना, चम्मेन, चम्मना, कम्मादितोत्वेव? बुद्धेन।

८१. झला सस्स नो।

झलतो सस्स नो वा होति। अग्गिनो अग्गिस्स, दण्डिनो दण्डिस्स, भिक्खुनो भिक्खुस्स, सयम्भुनो सयम्भुस्स,

कथं 'यो च सिस्सो महामुने' ति? (३) ''इतो क्वचि सस्स टानुबन्धो''ति ब्रह्मादीसु पाठा सस्स ए टानुबन्धो।

८२. ना स्मास्स।

झलतो स्मास्स ना होति वा। अग्गिना अग्गिस्मा, दण्डिना दण्डिस्मा, भिक्खुना भिक्खुस्मा, सयम्भुना सयम्भुस्मा।

८३. ला यो नं वो पुमे।

लतो योनं वो होति वा पुल्लिङ्गे। भिक्खवो भिक्खू, सयम्भुवो सयम्भूपुमेति किं? आयूनि।

८४. जन्त्वादितो नो च।

जन्त्वादितो योनं नो होति वो च वा पुल्लिङ्गे। जन्तुनो, जन्तवो जन्तुयो, गोत्रभुनो, गोत्रभुवो गोत्रभू। सहभुनो, सहभुवो सहभू।

८५. कूतो।

कूपच्चयन्ततो योनं नो वा होति पुल्लिङ्गे, विदुनो विदू, विञ्ञुनो विञ्ञू, सब्बञ्ञुनो सब्बञ्ञू।

८६. धलापो-मुस्मा।

अमुसद्दतो योनं लोपोव होति पुल्लिङ्गे, अमू, पुमेत्वेव? अमुयो अमूनि। वोपवादोयं।

८७. न नो सस्स।

अमुस्मा सस्स नो न होति, अमुस्स, नोति किं? अमुया।

८८. योलोपनिसु दीघो।

योनं लोपे निसु च दीघो होति, अट्ठी अट्ठीनि, योलोपनिसूति किं? रत्तियो।

८९. सुनंहिसु।

एसु नामस्स दीघो होति। अग्गीसु, अग्गीनं, अग्गीहि।

९०. पञ्चादीनं चुद्दसन्नम।

पञ्चादीनं चुद्दसन्नं सुनंहिस्व होति। पञ्चसु, पञ्चन्नं, पञ्चहि, छसु, छन्नं, छहि, एवं याव अट्ठरसा।

९१. य्वादो न्तुस्स।

य्वादीसु न्तुस्स अ होति। गुणवन्ता, गुणवन्तं, गुणवन्ते, गुणवन्तेन इच्चादि, य्वा-दोति किं? गुणवा तिट्ठति।

९२. न्तस्स च ट वंसे।

अंसेसु न्तप्पच्चयस्स ट होति वा न्तुस्स च। यं यं हि राज भजति सन्तंवायदि वा असं, किच्चा-नकुब्बस्स करेय्य किच्चं, हिमवंव पब्बतं, सुजातिमन्तोपि अजातिमस्स। योगविभागेनाञ्ञत्रापि। चक्खुमा अन्धिता होन्ति, वग्गुमुदातीरिया पन भिक्खू वण्णवा होन्ति।

९३. योसु झिस्स पुमे।

झसञ्ञस्स इस्स योसु वा ट होति पुल्लिङ्गे। अग्गयो अग्गी, झग्गहणं किं? इकारन्तसमुदायस्स ट मा सियाभि, रत्तियो, इग्गहणं किं? दण्डिनो, पुमेति किं? अट्ठीनि।

९४. वेवोसु लुस्स।

लसञ्ञस्स उस्स वेवोसु ट होति। भिक्खवे, भिक्खवो, वेवोसूति किं? जन्तुयो, उग्गहणं किं? सयम्भुवो।

९५. योम्हि वा क्वचि।

योम्हि क्वचि लसञ्ञस्स उस्स वा ट होति। हेतयो, नन्दन्ति तं कुरयो दस्सनेन, अज्जेव तं कुरयो पापयतु। वाति किं? हेतुयो।

९६. पुमालपने वेवो।

लसञ्ञतो उतो योस्सालपने वेवो होन्ति वा पुल्लिङ्गे। भिक्खवे, भिक्खवो भिक्खू, पुमेति किं आयूनि, आलपनेति किं? जन्तुयो तिट्ठन्ति, लुतोत्वेव? धेनुयो, सयम्भुवो।

९७. स्माहिस्मिं नं म्हाभिम्हि।

नामस्मा परेसं स्माहिस्मिन्नं म्हा भिम्हि वा होन्ति यथाक्कमं। बुद्धम्हा बुद्धस्मा, बुद्धेभि बुद्धेहि, बुद्धम्हि बुद्धस्मिं, बहुलाधिकाराअपवादविसयेपि, दससहस्सिम्हि धातुया।

९८. सुहिस्वस्से।

अकारन्तस्स सुहिस्वे होति। बुद्धेसु बुद्धेहि।

९९. सब्बादीनं नंम्हीच।

अकारन्तानं सब्बादीनं ए होति नंम्हि सुहिसु च। सब्बेसं, सब्बेसु, सब्बेहि, सब्बादीनन्ति किं? बुद्धानं, अस्सेत्वेव? अमूसं। सब्ब कतर कतम उभय इतर अञ्ञ अञ्ञतर अञ्ञतम (४) ''पुब्बपरा-वरदक्खिणुत्तरा-धरानि ववत्थायमसञ्ञायं'' (पा,१,१,३४) य त्य त एत इम अमु किं एक तुम्ह अम्ह।

१००. संसानं।

सब्बादितो नंवचनस्स संसानं होन्ति। सब्बेसं, सब्बेसानं।

१०१. घपा सस्स स्सा वा।

सब्बादीनं घपतो सस्स स्सा वा होति, सब्बस्सा सब्बाय, पग्गहणमुत्तरत्थं।

१०२. स्मिनो स्सं।

सब्बादीनं घपतो स्मिनो स्सं वा होति, सब्बस्सं सब्बाय, अमुस्सं अमुया।

१०३. यं।

घपतो स्मिनो यं वा होति, कञ्ञायं कञ्ञाय, रत्तियं रत्तिया, वधुयं वधुया, सब्बायं सब्बाय, अमुयं अमुया।

१०४. तिं सभापरिसाय।

सभापरिसाहि स्मिनो तिं वा होति, सभतिं सभाय, परिसतिं परिसाय।

१०५. पदादीहि सि।

एहि स्मिनो सि होति वा, पदसि पदस्मिं, बिलसि बिलस्मिं।

१०६. नास्स सा।

पदादीहि नास्स सा होति वा, पदसा पदेन, बिलसा बिलेन।

१०७. कोधादीहि।

एहि नास्स सा होति वा, कोधसा कोधेन, अत्थसा अत्थेन।

१०८. अतेन।

अकारन्ततो परस्स नावचनस्स एनादेसो होति, बुद्धेन, अतोति किं? अग्गिना।

१०९. सिस्सो।

अकारन्ततो नामस्मा सिस्स ओ होति, बुद्धो, अतोत्वेव? अग्गि।

११०. क्वचे वा।

अकारन्ततो नामस्मा सिस्स ए होति वा क्वचि, वनप्पगुम्बे यथा फुस्सितग्गे। अपवादविसयेपि बहुलंवीधाना-सुखे दुक्खे। वाति किं? वनप्पगुम्बो क्वचीति किं? पक्खे सब्बत्थ मा होतु।

१११. अं नपुंसके।

अकारन्ततो नामस्मा सिस्स अं होति नपुंसकलिङ्गे। रूपं।

११२. योनं नि।

अकारन्ततो नामस्मा योनं नि होति नपुंसके। सब्बानि रूपानि, निच्चविधाने फलं एकच्चादिसब्बादीनं पठमायं।

११३. झला वा।

झलतो योनं नि होति वा नपुंसके, अट्ठीनि अट्ठी, आयूनि आयू।

११४. लोपो।

झलतो योनं लोपो होति, अट्ठी, आयू, अग्गी, भिक्खू, झलात्वेव? अग्गयो। पगेव कस्मा न होति? अन्तरङ्गत्ता अकारस्स।

११५. जन्तुहेत्वीघपेहि वा।

जन्तुहेतूहि ईकारन्तेहि घप सञ्ञेहि च परेसं योनं वा लोपो होति, जन्तू जन्तुयो, हेतू हेतुयो, दण्डी दण्डियो, कञ्ञा कञ्ञायो, रत्ती रत्तियो, इत्थी इत्थियो, धेनू धेनुयो, वधू वधुयो।

११६. ये पस्सिवण्णस्स।

पसञ्ञस्स इवण्णस्स लोपो होति वा यकारे, रत्यो रत्या, रत्यं, पोक्खरञ्ञो, पोक्खरञ्ञा, पोक्खरञ्ञं, वा त्वेव? रत्तियो, पस्साति किं? दण्डियो, इवण्णस्साति किं? धेनुयो वधुयो। कथं 'अनुञ्ञातो अहं मत्या'ति? 'ये पस्सा'ति योगविभागा।

११७. गसीनं।

नामस्मा गसीनं लोपो होति विज्झन्तराभावे, भो पुरिस, अयं, दण्डी।

११८. असङ्ख्येहि सब्बासं।

अविज्जमानसङ्ख्येहि परासं सब्बासं विभत्तीनं लोपो होति, च वा एव एवं, एतस्मायेव लिङ्गा असङ्ख्येहि स्याद्युप्पत्ति अनुमीयते।

११९. एकत्थतायं।

एकत्थीभावे सब्बासं विभत्तीनं लोपो होति बहुलं, पुत्तीयति, राजपुरिसो, वासिट्ठो, क्वचि न होति बहुलं विधाना-परन्तपो, भगन्दरो, परस्सपदं, अत्तनोपदं, गवम्पति, देवानंपियतिस्सो, अन्तेवासी, जनेसुतो ममत्तं मामको।

१२०. पुब्बस्मामादितो।

अमादेकत्था पुब्बं यदेकत्थं ततो परासं सब्बासं विभत्तीनं लोपो होति। अधित्थि। इध न होति बहुलं

विधाना यथापत्थीया, यथापरिसाय, पुब्बस्माति किं? गामगतो।

१२१. नातोम पञ्चमिया।

अमादेकत्था पुब्बं यदेकत्थमकारन्तं, ततो परासं सब्बासं विभत्तीनं लोपो न होति, अन्तु, भवत्यपञ्चम्या, उपकुम्भं, अपञ्चमियाति किं? उपकुम्भा आनय।

१२२. वा ततियासत्तमिनं।

अमादेकत्था पुब्बं यदेकत्थमकारन्तं, ततो परासं ततियासत्थमीनं वा अं होति, उपकुम्भेन कतं, उपकुम्भं कतं, उपकुम्ते निधेहि, उपकुम्भं निधेहि।

१२३. राजसी नाम्हि।

नाम्हि राजस्सि वा होति, सब्बदत्तेन राजिना, वात्वेव? रञ्ञा।

१२४. सुनंहिसू।

राजस्स ऊ होति वा सुनंहिसु, राजूसु राजेसु, राजूनं रञ्ञं, राजूहि राजेहि।

१२५. इमस्सादित्थियंटे।

इमसद्दस्सानित्थियं टे होति वा सुनंहिसु, एसु इमेसु, एसं इमेसं, एसि इमेहि, अनित्थियन्ति किं? इमासु, इमासं, इमाहि।

१२६. नाम्ह निमि।

इमसद्दस्सानित्थियं नाम्हि अनइमिइच्चादेसा होन्ति, अनेन इमीना, अनित्थियंत्वेव? इमाय।

१२७. सिम्हि नपुंसकस्सायं।

इमसद्दस्सानपुंसकस्स अयं होति सिम्हि, अयं पुरिसो, अयं इत्थी, अनपुंसकस्साति किं? इमं।

१२८. त्यतेतानं तस्स सो।

त्यतेतानमनपुंसकानं तस्स सो होति सिम्हि, स्यो पुरिसो, स्या इत्थी, एवं सो, सा, एसो, एसा, अनपुंसकस्सेत्वेव? त्यं, तं, एतं।

१२९. मस्सामुस्स।

अनपुंसकस्सामुस्स मकारस्स **सो** होति सिम्हि, असु पुरिसो, असु इत्थी।

१३०. के वा।

अमुस्स मस्स के वा सो होति, असुको अमुको, असुका अमुका, असुकं अमुकं, असुकानि अमुकानि।

१३१. ततस्स नो तब्बासु।

तसद्दस्स तस्स नो वा होति सब्बासु विभत्तीसु, ने ते नायो तायो, नं तं, नानि तानि इच्चादि।

१३२. ट सस्मास्मिंस्सायस्संस्सासंम्हाम्हिस्वि मस्स च।

सादीस्विमस्स ततस्स च टो वा होति, अस्स इमस्स, अस्मा इमस्मा, अस्मिं इमस्मिं, अस्साय इमिस्साय, अस्सं इमिस्सं, अस्सा इमिस्सा, आसं इमासं, अम्हा इमम्हा, अम्हि इमम्हि, अस्स तस्स, अस्मा तस्मा, अस्मिं तस्मिं, अस्साय तस्साय, अस्सं तस्सं, अस्सा तस्सा, आसं तासं, अम्हा तम्हा, अम्हि तम्हि, स्सायादिग्गहणमादेसन्तरे मा होतूति।

१३३. टे सिस्सिसिस्मा।

इसिस्मा सिस्स टे वा होति, 'यो न्वज्ज विनये कङ्खं, अत्थधम्मविदू इसे', वात्वेव? इसि।

१३४. दुतियस्स योस्स।

इसिस्मा परस्स दुतियायोस्स टे वा होति, 'समणे ब्राह्मणे वन्दे, सम्पन्नचरणे इसे', वात्वेव? इसयो पस्स, दुतियस्साति किं? इसयो तिट्ठन्ति।

१३५. एकच्चादीह तो।

अकारन्तेहि एकच्चादीहि योनं टे होति, एकच्चे तिट्ठन्ति, एकचे पस्स, अतोति किं? एकच्चायो, एवं एस स पठम।

१३६. न निस्स टा।

एकच्चादीहि परस्स निस्स टा न होति, एकच्चानि।

१३७. सब्बादीही।

सब्बादीहि परस्स निस्स टा न होति, सब्बानि।

१३८. योनमेट।

अकारन्तेहि सब्बादीहि योनमेट होति, सब्बे तिट्ठन्ति, सब्बे पस्स, अतोत्वेव? सब्बायो।

१३९. नाञ्ञं चनामप्पधाना।

नामभूतेही अप्पधानेहि च सब्बादीहि यं वुत्तं, यञ्चाञ्ञं सब्बादिकारियं, तं न होति, ते सब्बा, ते पियसब्बा, ते अतिसब्बा।

१४०. ततियत्थयोगे।

ततियत्थेन योगे सब्बादीहि यं वुत्तं, यञ्चाञ्ञं सब्बादि कारियं, तं न होति, मासेन पुब्बानं मासपुब्बानं।

१४१. चत्थसमासे।

चत्थसमासविसये सब्बादीहि यं वुत्तं, यञ्चाञ्ञं सब्बादिकारियं, तं न होति, इक्खिणुत्तरपुब्बानं, समासेति किं? अमुसञ्च तेसञ्च देहि।

१४२. वेट।

एत्थसमासविसधय सब्बादीहि यधस्सट वुत्तो, तस्स वा होति, पुग्गुत्तरे, पुब्बुत्तरा।

१४३. पुब्बादीहि छही।

एतेहि पुब्बादीहि छहि सविसये एट वा होति, पुब्बे पुब्बा, परे परा, अपरे अपरा, दक्खिणे दक्खिणा, उत्तरे उत्तरा, अधरे अधरा, छहितिकिं? ये।

१४४. मनादीहि स्मिंसंनास्मानं सिसोओसासा।

मनादीहि स्मिमादीनं सिसोओसासा वा होन्ति यथाक्कमं, मनसि मनस्मिं, मनसो मनस्स, मनो मनं, मनसा मनेन,

मनसा मनस्मा, कथं 'पुत्तो जातो अचेतसो, हित्वा याति सुमेधसो, सुद्धुत्तरवाससा, हेमकप्पनवाससे'ति? सकत्थेणत्था। मनतम तप तेज सिर उर वच ओज रजयस पय (६) ''सरवया-यवासचेता जलासयाक्खयलोहपटमनेसु''।

१४५. सतो सब भे।

सन्थसद्दस्स सब भवति भकारे, सब्भि।

१४६. भवतो वा भोन्तो गयोनासे।

भवन्तसद्दस्स भोन्तादेसो वा होति गयोनासे, भोन्त भवं, भोन्तो भवन्तो, भोता भवता, भोतो भवतो, भो इति आमन्तणे निपातो 'कुतो नु आगच्छथ भो तयो जना', एवं भवन्तति, भद्देति सद्दन्थरेन सिद्धं, सद्धन्थइति दस्स द्विभावेन।

१४७. सिस्साग्गितो नि।

अग्गिस्मा सिस्स नि योति वा, अग्गिनि अग्गि।

१४८. न्तस्सं।

सिम्हि न्तप्पच्चयस्स अं होति वा, गच्छं गच्छन्तो।

१४९. भूतो।

भूधातुतो न्तस्स अं होति सिम्हि निच्चं पुनब्बिधाना, भवं।

१५०. महन्तारहन्तानं टा वा।

सिम्हि महन्तारहन्तानं न्तस्स टा वा होति, महा महं, अरहा अरहं।

१५१. न्तुस्स।

सिम्हि न्तुस्स टा होति, गुणवा।

१५२. अंङं नपुंसके।

न्तुस्स अंङं होन्ति सिम्हि नपुंसके, गुणवं कुलं, गुणवन्तं कुलं, नपुंसकेतिं किं? सीलवा भिक्खु।

१५३. हिमवतो वा ओ।

हिमवतो सिम्ही न्तुस्स ओ वा होति, हिमवन्तो हिमवा।

१५४. राजादियुवादित्वा।

राजादीहियुवादीहि च सिस्स आ होति, राजा, युवा। राज ब्रह्म सख अत्त आतुम (७) ''धम्मो वाञ्ञत्थे'' दळ्हधम्मा, अस्म, (८) ''इमो भावे'' अणिमा, (महिमा, गरिमा) लघिमा, युव सा सुवा मघव पुम वत्तह।

१५५. वाम्हानङ।

राजादीनं युवादीनं च आनङ होति वा अंम्हि, राजानं राजं, युवानं युवं।

१५६. योनमानो।

राजादीहि युवादीहि च योनं आनो वा होति, राजानो युवानो, वा त्वेव? राजा राजे, युवा युवे।

१५७. आयोनो च सखा।

सखतो योन मायो नो होन्ति वा आनो च, सखायो, सखिनो, सखानो, वा त्वेव? सखा, सखे।

१५८. टे स्मिनो।

सखतो स्मिनो टे होति, सखे, निच्चत्थो-यमारम्भो।

१५९. नोनासेस्वि।

सखस्स इ होति नोनासेसु, सखिनो, सखिना, सखिस्स।

१६०. स्मानंसु वा।

सखस्स इ वा होति स्मानंसु, सखिस्मा सखस्मा, सखीनं सखानं।

१६१. योस्वंहिसु चारङ।

सखस्स आरङ वा होति योस्वंहिसु स्मानंसु च, सखारो सखायो, सखारेसु सखेसु, सखारं सखं, सखारेहि सखेहि, सखारा सखा, सखस्मा, सखारानं सखानं।

१६२. ल्थुपितादीनमसे।

ल्तुप्पच्चयन्तानं पितादीनं च आरङ होती सतो-ञ्ञत्र, कत्तारो, पितरो, कत्तारं, पितरं, कत्तारा, पितरा, कत्तरि, पितरि, असेति किं? कत्तुनो, पितुनो।

१६३. नम्हि वा।

नम्हि ल्तुपितादीनुमानङ वा होति, कत्तारानं कत्तूनं, दितरानं पितुन्नं।

१६४. आ।

नम्हि ल्तुपितादीनमा वा होती, कत्तानं कत्तूनं, पीतानं पितुन्नं।

१६५. सलोपो।

ल्तुपितादिहि सस्स लोपो वा होति, कत्थु कत्थुनो, सकमन्तातु सकमन्धातुनो, पीतु पितुनो।

१६६. सुहिस्वारङ।

सुहिसु ल्तुपितादीनमारङ वा होति, कत्तारेसु कत्तूसु, पितरेसु पितूसु, कत्तारेहि कत्तूहि, पितरेहि पीतूही।

१६७. नज्जायोस्माम।

योसु नदिसद्दस्स आम वा होति, नज्जायो नदियो।

१६८. टि कतिम्हा।

कतिम्हा धयानं टि होति, कति तिट्ठन्ति, कति पस्स।

१६९. ट पञ्चादीहि चुद्दसहि।

पञ्चादीहि चुद्दसहि संख्याहि योनं टो होति पञ्च, पञ्च, एवं याव अट्ठारसा। पञ्चादीहीति किं? द्वे, तयो, चत्तारो, चुद्धसहीति किं? द्वे विसतियो।

१७०. उभगोहि टो।

उभगोहि योनं टो होति, उभो, उभो, गावो, गावो, कथं 'इमेकरत्थिं उभयो वसामा'ति? टोम्हि यकारागमो।

१७१. आरङ स्मा।

आरवादेसतो योनं टो होति, सखारो, कत्तारो, पितरो।

१७२. टोटे वा।

आरवादेसम्हा योनं टोटे वा होन्ति यथाक्कमं, सखारो, सखारे सखायो, टोग्गहणं लाघवत्थं।

१७३. टा नास्मानं।

आरवादेसम्हा नास्मानं टा होति, कत्तारा, कत्तरा। कूचि वा होति बयुलाधिकारा, एतादिसा सखारम्हा।

१७४. टि स्मिनो।

आरवादेसम्हा स्मिनो टि होति, कत्तरि, वितरि।

१७५. दिवादितो।

दिवादीहि नामेहि स्मिनो टि होति, दिवि, भुवि। निच्चं वकारागमो।

१७६. रस्सारङ।

स्मिम्हि आरो रस्सो होति, कत्तरि, नत्तरि।

१७७. पितादीनमनत्वादीनं।

नत्वादिवज्जितानं पितादीनमारो रस्सो होति सब्बासु विभत्तीसु, पितरो, पितरं, अनुत्वादीनन्ति किं? नत्तारो।

१७८. युवादीनं सुहिस्वानङ।

सुहिसु युवादीनं आनङ होति, युवानेसु, युवानेहि।

१७९. नोनानेस्वा।

एसु युवादीनमा होति, युवानो, युवाना, युवाने।

१८०. स्मास्मिन्नं नाने।

युवादीहि स्मास्मिन्नं नाने होन्ति यथाक्कमं, युवाना, युवाने।

१८१. योनं नोने वा।

युवादीहि योनं नोने वा होन्ति यथाक्कमं, युवानो, युवाने, वाति किं? युवे पस्स, नोग्गहणं लाघवत्थं।

१८२. इतो ञ्ञत्थे पुमे।

अञ्ञपदत्थे वत्तमाना इकारन्ततो नामस्मा योनं नोने वा होन्ति यथाक्कमं पुल्लिङ्गे, तोमरङ्कुसपाणिनो, तोमरङ्कुसपाणिने, वात्वेव? तोमरङ्कुसपाणयो, अञ्ञत्थेति किं? पाणयो।

१८३. ने स्मिनो क्वचि।

अञ्ञपदत्थे वत्थमाना इकारन्ततो नामस्मा स्मिनो ने होति वा क्वचि पुल्लिङ्गे, कतञ्ञुम्हि च पोसम्हि, सीलवन्ते अरिय वुत्तिने, वात्वेव? अरियवुत्तिम्हि, पुमेत्वेव? अरियवुत्तिया।

१८४. पुमा।

पुमसद्दतो स्मिनो यं वुत्तं, तं वा होति, पुमाने पुमे।

१८५. नाम्हि।

पुमस्स नाम्हि यं वुत्तं, तं वा होति, पुमाना पुमेन।

१८६. सुम्हा च।

पुमस्स सुम्हि यं वुत्तं, तं आ च वा होति, पुमानेसु, पुमासु पुमेसुं।

१८७. गस्सं।

पुमसद्दतो गस्स अं वा होति, भो पुमं भो पुम, भो इत्तिपुमं भो इत्थिपुम।

१८८. सास्संसे चानङ।

सासद्दस्स आनङ होति अंसे गे च, सानं, सानस्स, चभा सान।

१८९. वत्तहा सनंनं नोनानं।

वत्तहा सनंनं नोनानं होन्ति यथाक्कमं, वत्तहानो, वत्तहानानं।

१९०. ब्रह्मस्सु वा।

ब्रह्मस्स उ वा होति सनंसु, ब्रह्मुनो ब्रह्मस्स, ब्रह्मूनं ब्रह्मानं।

१९१. नाम्हि।

ब्रह्मस्स उ होति नाम्हि, ब्रह्मुना।

१९२. पुमकम्मथामद्धानं वा सस्मासु च।

पुमादिनमु होति वा सस्मासु नाम्हि च, पुमुनो पुमस्स, पुमुना पुमाना, पुमुना पुमाना, कम्मुनो कम्मस्स, कम्मुना कम्मस्मा, कम्मुना कम्मना, थामुनो थामस्स, थामुना थामस्मा, थामुना थामेन, अद्धुनो अद्धस्स, अद्धुना अद्धस्मा, अद्धुना अद्धना।

१९३. युवा सस्सिनो।

युवा सस्स वा इनो होति, युविनो युवस्स।

१९४. नो-त्तातुमा।

अत्तातुमेहि सस्स नो होति वा, अत्तनो अत्तस्स, आतुमनो आतुमस्स।

१९५. सुहीसु नक।

अत्तआतुमानं सुहिसु वा नक होति, अत्तनेसु अत्तेसु आतुमनेसु आतुमेसु, अत्तनेहि अत्तेहि आतुमनेहि आतुमेहि, कथं 'वेरिनेसु'ति? 'नक' इति योगविभागा।

१९६. स्मास्स ना ब्रह्मा च।

ब्रह्मा अत्तआतुमेहि च स्वास्स ना होति, ब्रह्मुना, अत्तना, आतुमना।

१९७. इमेतानमेनान्वादेसे दुतियायं।

इमएतसद्दानं कथितानुकथनविसये दुतियायमेनादेसो होति, इमं भिक्खुं विनयमज्झापय, अथो एनं धम्ममज्झापय, इमे भिक्खू विनयमज्झापय, अथो एने धम्ममज्झापय, एवमेतस्स च योजनियं।

१९८. किस्स को सब्बासु।

सब्बासु विभत्तिसु किस्स को होति, को, एक, का, कायो, कं, कानि, केनेच्चामि।

१९९. कि सस्मिंसु वानित्थियं।

अनित्थियं किस्स कि वा होति सस्मिंसु, किस्स कस्स, किस्मिं कस्मिं, अनित्थियन्ति किं? कस्सा, कस्सं।

२००. किमंसिसु सह नपुंसके।

अंसिसु सह तेहि किंसद्दस्स किं होति नपुंसके। किं, किं, नपुंसकेति किं? को, कं।

२०१. इमस्सिदं वा।

अंसिसु सह तेति इमस्स इदं होति वा नपुंसके, इदं इमं, इदं इमं।

२०२. अमुस्सादुं।

अंसिसु सह तेहि अमुस्स अदुं होति वा नपुंसके, अदुं अमुं, अदुं अमुं।

२०३. सुम्हामुस्सास्मा।

अम्हस्स अस्मा होति वा सुम्हि, भत्तिरस्मासु या तव, वा त्वेव? अम्हेसु।

२०४. नंम्हि तिचतुन्नमित्थियं तिस्सचतस्सा।

नंम्हि तिचतुन्नं तिस्सचतस्सा होन्ति इत्थियं यथाक्कमं, तिस्सन्नं चतस्सन्नं, इत्थियन्ति किं? तिण्णं चतुन्नं।

२०५. तिस्सोचतस्सो योम्हि सविभत्तीनं।

विभत्तिसहितानं तिचतुन्नं योम्हि तिस्सो चतस्सो होन्ति इत्थियं यथाक्कमं, तिस्सो चतस्सो।

२०६. तीणिचत्तारि नपुंसके।

योम्हि सविभत्तीनं तिचतुन्नं यथाक्कमं तीणिचत्तारि होन्ति नपुंसके, तीणि। चत्तारि।

२०७. पुमे तयो चत्तारो।

योम्हि सविभत्तीनं तिचतुन्नं तयोचत्तारो होन्ति यथाक्कमं पुल्लिङ्गे, तयो, चत्तारो।

२०८. चतुरो वा चतुस्स।

चतुसद्दस्स सविभत्तिस्स योम्हि चतुरो वा होति पुल्लिङ्गे, चतुरो जना संविधाय, कथं 'चतुरो निमित्ते नाद्दस्सासि'न्ति? लिङ्गविपल्लासा।

२०९. मयमस्माम्हस्स।

योस्वम्हस्स सविभत्तिस्स मयमस्मा वा होन्ति यथाक्कमं, मयं, अस्मा, अम्हे।

२१०. नंसेस्वस्माकंममं।

नंसेस्वमुस्स सविभत्तिस्स अस्माकं ममं होन्ति वा यथाक्कमं, अस्माकं, अम्हाकं, ममं मम।

२११. सिम्ह-हं।

सिम्हि अम्हस्स सविभत्तिस्स अहं होति, अहं।

२१२. तुम्हस्स तुवंत्वमम्हि च।

अंम्हि सिम्हि च तुम्हस्स सविभत्तिस्स तुवंत्वं होन्ति यथाक्कमं, तुवं, त्वं।

२१३. तयातयीनं त्व वा तस्स।

तुम्हस्स तयातयीनं तकारस्स त्व होति वा, त्वया तया, त्वयि तयि।

२१४. स्माम्हि त्वम्हा।

स्वाम्हि तुम्हस्स सविभत्तिस्स त्वम्हा होति वा, पत्ता निस्सं सयं त्वम्हा, वा त्वेव? त्वया।

२१५. न्तन्तूनंन्तोयोम्ही पठमे।

पठमे योम्हि न्तन्तूनं सविभत्तीनं न्तोइच्चादेसो वा होति, गच्छन्तो, गच्छन्ता, गुणवन्तो गुणवन्ता।

२१६. तं नंम्हि।

नंम्हि न्तन्तूनं सविभत्थीनं तं वा होति, गच्छतं **गच्छन्तानं**, गुणवतं गुणवन्तानं।

२१७. तोताितिता सस्मास्मिंनासु।

सादीसु न्तन्तूनं सविभत्तीनं तोताितिता होन्ति वा यथाक्कमं, गच्छतो गच्छन्तस्स, गुणवतो गुणवन्तस्स, गच्छता गच्छन्तम्हा, गुणवता गुणवन्थम्हा, गच्छति गच्छन्ते, गुणवति गुणवन्ते, गच्छता गच्छन्तेन, गुणवता गुणवन्तेन।

२१८. टटाअं गे।

गे परे न्तन्तूनं सविभत्तीनं टटाअं इच्चादेसा होन्ति, भो गच्छ, भो गच्छा, भो गच्छं, तो गुणव, भो गुणवा, भो गुणवं।

२१९. योम्हि द्विन्नं दुवेद्वे।

योम्ही द्वीस्स सविभत्तिस्स दुवेद्वे होन्ति पच्चेकं, दुवे, द्वे।

२२०. दुविन्नं नंम्हि वा। नंम्हि द्विस्स सविभत्तिस्स दुविन्नं होति वा, दुविन्नं, द्विन्नं।

२२१. राजस्स रञ्ञं। नंम्हि राजस्स सविभत्तिस्स रञ्ञं होति वा, रञ्ञं राजानं।

२२२. नास्मासु रञ्ञा। नास्मासु राजस्स सविभत्तिस्स रञ्ञा होति, रञ्ञा कतं, रञ्ञा निस्सटं।

२२३. रञ्ञो रञ्ञस्स राजिनो से। से राजस्स सविभत्तिस्स रञ्ञो रञ्ञस्स राजिनो होन्ति, रञ्ञो, रञ्ञस्स, राजिनो।

२२४. स्मिम्हि रञ्ञेराजिनि। स्मिम्हि राजस्स सविभत्तिस्स रञ्ञे राजिनि होन्ति, रञ्ञे, राजिनि।

२२५. समासे वा। समासविसये एते आदेसा राजस्स वा होन्ति, कासिरञ्ञा कासिराजेन, कासिरञ्ञा कासिराजस्मा, कासिरञ्ञो कासिराजस्स, कासिरञ्ञे कासिराजे।

२२६. स्मिम्हि तुम्हाम्हानं तयिमयि। स्मिम्हि तुम्हअमुसद्दानं सविभत्तीनं तयिमयि होन्ति यथाक्कमं, तयि, मयि।

२२७. अंम्हि तं मं तवं ममं।

अंम्हि तुम्हअम्हसद्दानं सविभत्तीनं तं मं तवं ममं होन्ति यथाक्कमं, तं, मं, तवं, ममं,

२२८. नास्मासु तयामया।

नास्मासु तुम्हअम्हसद्दानं सविभत्तीनं तयामया होन्ति यथाक्कमं, तया कतं, मया कतं, तया निस्सटं, मया निस्सटं।

२२९. तव मम तुय्हं मय्हं से।

से तुम्हअम्हसद्दानं सविभत्तीनं तव मम तुय्हं मय्हं होन्ति यथाक्कमं, तव, तुय्हं, मम, मय्हं।

२३०. ङंङाकं नंम्हि।

नंम्हि तुम्हअम्हसद्दानं सविभत्तीनं ङंङाकं होन्ति पच्चेकं, तुम्हं, तुम्हाकं, अम्हं, अम्हाकं, यथासङ्ख्यमत्र न विवच्छते।

२३१. दुतिये योम्हि वा।

तुम्हअम्हसद्दानं सविभत्तीनं पच्चेकं ङंङाकं वा होन्ति योम्हि दुतिये, तुम्हं, तुम्हाकं, तुम्हे, अम्हं, अम्हाकं, अम्हे।

२३२. अपादादो पदतेकवाक्ये।

इदमधिकतं वेदितब्बं। पज्जते-नेनत्थोति पदं-स्याद्यन्तं त्याद्यन्तं च, पदसमूहो वाक्यं।

२३३. योनंहिस्वपञ्चम्या वोनो।

अपञ्चमिया योनंहिस्वपादादो वत्तमानानं पदस्मा परेसं एकवाक्ये ठितानं तुम्हाम्हसद्दानं सविभत्तीनं वोनो होन्ति वा यथाक्कमं, तिट्ठथ वो, तिट्ठथ तुम्हे, तिट्ठाम नो, तिट्ठाम मयं, पस्सति वो, पस्सति तुम्हे, पस्सति नो, पस्सति अम्हे, दीयते वो, दीयते तुम्हं, दीयते नो, दीयते अम्हं, धनं वो, धनं तुम्हं, धनं नो धनं अम्हं, कतं वो, कतं तुम्हेहि, कतं नो, कतं अम्हेहि, अपञ्चम्याति किं? निस्सटं तुम्हेहि, निस्सटं अम्हेहि, अपादादोत्वेव? 'बलञ्च भिक्खूनमनुप्पदिन्नं, तुम्हेहि पुञ्ञं पसुतं अनप्पकं', पदतोत्वेव? तुम्हे तिट्ठथ, एकवाक्येत्वेव? देवदत्तो तिट्ठति गामे, तुम्हे तिट्ठथ नगरे, सविभत्तीनंत्वेव? अरहति धम्मो तुम्हादिसानं, अरहति धम्मो अम्हादिसानं।

२३४. तेमे नासे।

नाम्हि से च अपादादो वत्तमानानं पदस्मा परेसं एकवाक्ये ठितानं तुम्हाम्हसद्दानं सविभत्तीनं तेमे वा होन्ति यथाक्कमं, कतं ते, कतं तया, कतं मे, कतं मया, दीयते ते, दीयते तव दीयते मे, दीयते मम, धनं ते, धनं तव, धनं मे, धनं मम।

२३५. अन्वादेसे।

कथितानुकथनविसये तुम्हअम्ह-सद्दानमादेसा निच्चं भवन्ति पुनब्बिधाना, गामो तुम्हं परिग्गहो, अथो जनपदो वो परिग्गहो।

२३६. सपुब्बा पठमन्ता वा।

विज्जमानपुब्बस्मा पठमन्ता परेसं तुम्हअम्हसद्दानमादेसा वा होन्ति अन्वादेसेपि, गामे पटो तुम्हाकं, अथो नगरे कम्बलो वो, अथो नगरे कम्बलो तुम्हाकं, सपुब्बाति किं? पटो तुम्हाकं, अथो कम्बलो वो, पठमन्ताति कि? पटो नागरे तुम्हाकं, अथो कम्बलो गामे वो।

२३७. न च वा हा हेवयोगे।

चादीहि योगे तुम्हअम्हसद्दानमादेसा न होन्ति, गामो तव च परिग्गहो, मम च परिग्गहो, गामो तव वा परिग्गहो, मम वा परिग्गहो, गामो तव ह परिग्गहो, मम ह परिग्गहो, गामो तवाह परिग्गहो, ममाह परिग्गहो, गामो तवेव परिग्गहो, ममेव परिग्गहो, एवं सब्बत्थ उदाहरितब्बं, योगेति किं? गामो च ते परिग्गहो, नगरञ्च मे परिग्गहो।

२३८. दस्सनत्थे नालोचने।

दस्सनत्थेसु आलोचनवज्जितेसु पयुज्जमानेसु तुम्हअम्हसद्दानमादेसा न होन्ति, गामो तुम्हे उद्दिस्सागतो, गामो अम्हे उद्दिस्सागतो, अनालोचनेति किं? गामो वो आलोचेति, गामो नो आलोचेति।

२९३. आमन्तणं पुब्बमसन्तंव। आमन्तणं पुब्बमविज्जमानं विय होति तुम्हाम्हसद्दानमादेसविसये, देवदत्त तव परिग्गहो, आमन्तणन्ति किं? कम्बलो ते परिग्गहो, पुब्बमिति किं? ‘मयेतं सब्बमक्खातं, तुम्हाकं द्विजपुङ्गवा, परस्स हि अविज्जमानत्ते ‘अपादादो’ति पटिसेधो न सिया। इवाति किं? सवनं यथा सिया।

२४०. न सामञ्ञवचनमेकत्थे।

समानाधिकरणे परतो सामञ्ञवचनमामन्तणमसन्तं विय न होति, माणवक जटिलक ते परिग्गहो। परस्साविज्जमानत्तेपि पुब्बरूपमुपादायादेसो होति, सामञ्ञवचनन्ति किं? देवदत्त माणवक तव परिग्गहो, एकत्थेति किं? देवदत्त यञ्ञदत्त तुम्हं परिग्गहो।

२४१. बहूसु वा।

बहूसु वत्तमानमामन्तणं सामञ्ञवचनमेकत्थे अविज्जमानं विय वा न होति, ब्राह्मणा गुणवन्तो तुम्हाकं परिग्गहो, ब्राह्मणा गुणवन्तो वो परिग्गहो।

इति मोग्गल्लाने ब्याकरणे वुत्तियं

स्यादिकण्डो दुतियो।

(३) ततियो कण्डो (समासो)

१. स्यादि स्यादिनेकत्थं।

स्याद्यन्तं स्याद्यन्तेन सहेकत्थं होतीति इदमधिकतं वेदितब्बं, सो च भिन्नत्थानमेकत्थीभावो समासोति वुच्चते।

२. असङ्ख्यंविभत्ति सम्पत्ति समीप साकल्याभाव यथा पच्छायुगपदत्थे।

असङ्ख्यं, स्याद्यन्तं विभत्यादीनमत्थे वत्तमानं स्याद्यन्तेन सहेकत्थं भवति, तत्थ विभत्यत्थे ताव इत्थीसु कथा पवत्ता अधित्थि। सम्पत्ति द्विधा अत्तसम्पत्ति समिद्धि च, सम्पन्नं ब्रह्मं सब्रह्मं लिच्छवीनं, समिद्धि भिक्खानं सुभिक्खं। समीपे कुम्भस्स समीपमुपकुम्भं। साकल्येसतिणमज्झोहरति, साग्यधीते। अभावो सम्बन्धिभेदा बहुविधो, तत्र इद्धाभावे-विगता इद्धि सद्दिकानं दुस्सद्दिकं, अत्थाभावे-अभावो मक्खिकानं निम्मक्खिकं, अहिक्कमाभावे-अतिगतानि तिणानि नित्तिणं, सम्पत्याभावे-अतिगतं लहुपावुरणं अतिलहुपावुरणं, लहुपावुरणस्स नायमुपभोगकालोति अत्थो। यथा एत्था-नेकविधो, तत्र योग्गतायं-अनुरूपं सुरूपोवहति, विच्छायं-अन्वद्धमासं, अत्थानतिवत्तियं-यथासत्ति, सदिसत्ते, सदिसो किखिया सकिखि, आनुपुब्बिये-अनुजेट्ठं, पच्छादत्थेअनुरथं, युगपदत्थे-सचक्कं निधेहि।

३. यथा न तुल्ये।

यथासद्दो तुल्यत्थे वत्तमानो स्याद्यन्तेन सहेकत्थो न भवति, यथा देवदत्तो तथा यञ्ञदत्तो।

४. यावावधारणे।

यावसद्दो-वधारणे वत्तमानो स्याद्यन्तेन सहेकत्थो भवति, अवधारण मेत्तकता परिच्छेदो, यावामत्तं ब्राह्मणे आमन्तय, यावजीवं, अवधारणेति किं? याव दिन्नं ताव भुत्तं, नावधारयामि कित्तकं मया भुत्तन्ति।

५. पय्यपा बहि तिरो पुरे पच्छा वा पञ्चम्या।

परिआदयो पञ्चम्यन्तेन सहेकत्था होन्ति वा, परिपब्बतं वस्सि देवो परिपब्बता, अपपब्बतं वस्सि देवो अपपब्बता, आपाटलिपुत्तं वस्सि देवो आपाटलिपुत्ता, बहिगामं बहि गामा, तिरोपब्बतं तिरोपब्बता, पुरेभत्तं पुरेभत्ता, पच्छाभत्तं पच्छाभत्ता, वेताधिकारो।

६. समीपायामेस्वनु।

अनुसद्दो सामीप्ये आयामे च वत्तमानो स्याद्यन्तेन सहेकत्थो होति वा, अनुवनमसनि गता, अनुगङ्गं बाराणसी, समीपायामेस्वीति किं? रक्खमनुविज्जोतते विज्जु।

७. तिट्ठग्वादीनि।

तिट्ठगुप्पभुतीनि एकत्थीभावविसये निपातीयन्ते, तिट्ठन्ती गावो यस्मिं काले तिट्ठगु कालो, वहग्गु कालो। आयतीगवं, खलेयवं, लूनयवं लूयमानयवमिच्चादि, च्यन्तो पेत्थ केसा केसि, दण्डा दण्डि, तथा वेलाप्पभावनत्थोपि, पातो नहानं पातरहानं, सायं नयानं सायनहानं, पातकालं सायकालं, पातमेघं सायमेघं, पातमग्गं सायमग्गं।

८. ओरे परि पटि पारे मज्झे हेट्ठुद्धाधो-न्तोवाछट्ठिया। ओरादयो सद्दा छट्ठियन्तेन सहेकत्था वा होन्ति, एकारन्तत्तं निपातनतो, ओरेगङ्गं, परिसिखरं, पटिसोतं, पारेयमुनं, मज्झेगङ्गं, हेट्ठापासादं, उद्धगङ्गं, अधोगङ्गं, अन्थोपासादं, पुन वाविधाना 'गङ्गाओर' मिच्चादीपि होन्ति।

९. तं नपुंसकं।

यदेतमतिक्कन्तमेकत्थं, तं नपुंसकलिङ्गं वेदितब्बं, तथा चेवोदाहटं, वा क्वचि बहुलाधिकारा, यथापरिसं यथापरिसाय, सकाय सकाय परिसायाति अत्थो।

१०. अमादि।

अमादि स्याद्यन्तं स्याद्यन्तेन सह बहुलमेकत्थं होति गामं गतो गामगतो, मुहुत्तं सुखं मुहुत्तसुखं, वुत्तियेवोपपदसमासे कुम्भकारो, सपाको, तन्तवायो, वराहरो। न्तमानक्तवन्तूति वाक्यमेव, धम्मं सुणन्तो, धम्मं सुणमानो, ओदनं भुत्तवा।

रञ्ञा हतो राजहतो, असिना छिन्नो असिच्छिन्नो, पितुसदिसो, पितुसमो, सुखसहगतं, दधिना उपसित्तं भोजनं दधिभोजनं, गुळेन मिस्सो ओदनो गुळोदनो, वुत्तिपदेनेवोपसित्तादिकिरियायाख्यापनतो नत्थायुत्तत्थता। क्वचि वुत्तियेव उरगो, पादपो। क्वचि वाक्यमेव फरसुना छिन्नवा, दस्सनेन पहातब्बा।

बुद्धस्स देय्यं बुद्धदेय्यं, यूपाय दारु यूपादारु, रजनाय दोणि रजनदोणि। इध न होति सङ्घस्स दातब्बं। कथं 'एतदत्थो एतदत्था एतदत्थ'न्ति? अञ्ञपदत्थे भविस्सति।

सवरेहि भयं सवरभयं, गामनिग्गतो, मेथुनापेतो, क्वचि वुत्तियेव कम्मजं, चित्तजं, इध न होति रुक्खा पतितो।

रञ्ञो पुरिसो राजपुरिसो। बहुलाधिकारा न्तमानन्निद्धारियपूरणभावतित्तत्थेहि न होति-ममानुकुब्बं, ममानुकुरुमानो, गुन्नं कण्हा सम्पन्नखीरतमा, सिस्सानं पञ्चमो, पटस्स सुक्कता, क्वचि होतेव-वत्तमानसामीप्यं, कथं 'ब्राह्मणस्स सुक्का दन्ता'ति? सापेक्खताय न होति। इध पन होतेव 'चन्दनगन्धो, नदिघोसो, कञ्ञारूपं, कायसम्फस्सो, फलरसो'ति, फलानं तित्तो, फलानमासितो, फसानं सुहितो।

ब्राह्मणस्स उच्चं गेहन्ति सापेक्खताय न होति, 'रञ्ञो पाटलिपुत्तकस्स धन'न्ति धनसम्बन्धे छट्ठीति पाटलिपुत्तकेन

सम्बन्धाभावा न हेस्सति, 'रञ्ञो गो च अस्सो च पुरिसो चा'ति भिन्नत्थताय वाक्यमेव, 'रञ्ञो गवास्सपुरिसा राजगवास्सपुरिसा'ति वुत्ति होतेवेकत्तिभावे।

दाने सोण्डो दानसोण्डो, धम्मरतो, दानाभिरतो। क्वचि वुत्तियेव कुच्छिसयो, थलट्ठो, पङ्कजं, सरोरुहं। इध न होति भोजने मत्तञ्ञुता, इन्द्रियेसु गुत्तद्वारता, आसने निसिन्नो, आसने निसीदितब्बं।

११. विसेसनमेकत्थेन।

विसेसनं स्यान्तं विसेस्सेन स्याद्यन्तेन समानाधिकरणेन सहेकत्थं होति, नीलञ्च तं उप्पलञ्चेति नीलुप्पलं, छिन्नञ्च तं परुळ्हञ्चेति छिन्नपरळ्हं, सत्थीव सत्थी, सत्थी च सा सामा चेति सत्थिसामा, सीहोव सीहो, मुनि च सो सीहो चेति मुनिसीहो, सीलमेव धनं सीलधनं।

क्वचि वाक्यमेव पुण्णो मन्ताणिपुत्तो, चित्तो गहपति। क्वचि वुत्तियेव कण्हसप्पो, लोहितसालि, विसेसनन्ति किं? तच्छको सप्पो, एकत्थेनेति किं? काळम्हा अञ्ञो। कथं 'पत्तजीविको, आपन्नजीविको, मासजातो'ति? अञ्ञपदत्थे भविस्सति।

१२. नञ।

नञिच्चेतं स्याद्यन्तं स्याद्यन्तेन सहेकत्थं होति, न ब्राह्मणो अब्राह्मणो, बहुलाधिकारतो असमत्थत्थेहि, केहिचि होति 'अपुनगेय्या गाथा, अनोकासं कारेत्वा, अमूला मूलं गन्त्वा। ईसंकळारो, ईसंपिङ्गलोति 'स्यादि स्यादिने'ति समासो, वाक्यमेव वातिप्पसङ्गाभावा।

१३. कुपादयो निच्चमस्यादिविधिम्हि।

कुसद्दो पादयो च स्याद्यन्तेन सहेकत्था होन्ति निच्चं स्यादिविधिविसयतो-ञत्थ, कुच्छितो ब्राह्मणो कुब्राह्मणो, ईसकं उण्हं कदुण्हं, पनायको, अभिसेको, पकरित्वा, पकतं, दुप्पुरिसो, दुक्कटं, सुपुरिसो, सुकतं, अभित्थुतं, अतित्थुतं, आकळारो, आबद्धो।

(९) ''पादयो गताद्यत्थे पठमाय''। पगतो आचरियो पाचरियो, पन्तेवासी।

(१०) ''अच्चादयो कन्ताद्यत्थे दुतियाय''। अतिक्कन्तो मञ्चमतिमञ्चो, अतिमालो।

(११) ''अवादयो कुट्ठाद्यत्थे ततियाय''। अवकुट्ठं कोकिलाय वनं अवकोकिलं, अवमयूरं।

(१२) ''परियादयो गिलानाद्यत्थे चतुत्थिया''। परिगिलानो अज्झेनाय परियज्झेनो।

(१३) ''न्यादयो कन्ताद्यत्थे पञ्चमिया''।

निक्खन्तो कोसम्बिया निक्कोसम्पि, अस्यादिविधिम्हीति किं? रुक्खं पति विज्जोतते।

१४. ची क्रियत्थेहि।

चीप्पच्चयन्तो किरियत्थेहि स्याद्यन्तेहि सहेकत्थो होति, मलिनीकरिय।

१५. भूसनादरानादरेस्वलंसासा।

भूसनादिस्वत्थे स्वलमादयो सद्दा किरियत्थेहि स्याद्यन्तेहि सहेकत्था होन्ति, अलंकरिय, सक्कच्च, असक्कच्च। भूसनादीसूति किं? अलंभुत्वा गतो, सक्कत्वा गतो, असक्कत्वा गतो, परियत्तं सोभनमसोभनन्ति अत्थो।

१६. अञ्ञे च।

अञ्ञे च सद्दा किरियत्थेहि स्याद्यन्तेहि सह बहुलमेकत्था भवन्ति, पुरोभूय, तिरोभूय, तिरोकरिय, उरसिकरिय, मनसिकरिय, मज्झेकरिय, तुण्हीभूय।

१७. वानेकञ्ञत्थे।

अनेकं स्याद्यन्तमञ्ञस्स पदस्सत्थे एकत्थं वा होति, बहूनि धनानि यस्स सो बहुधनो, लम्बा कण्णा यस्स सो लम्बकण्णो, वजिरं पाणिम्हि यस्स सोयं वजिरपाणि, मत्ता बहवो मातङ्गा एत्थ मत्तबहुमातङ्गं वनं, आरुळ्हो वानरो यं रुक्खं सो आरुळ्हवानरो, जितानि इन्द्रियानि येन सो जितिन्द्रियो, दिन्नं भोजनं यस्स सो दिन्नभोजनो, अपगतं काळकं यस्मा पटा सो-यमपगतकाळको, उपगता दस येसं ते उपदसा, आसन्नदसा, अदूरदसा, अधिकदसा, तयो दस परिमाणमेसं तिदसा, कथं दससद्दो सङ्ख्याने वत्तते? परिमाणसद्दसन्निधाना, यथा पञ्च परिमाणमेसं पञ्चका सकुनाति, द्वे वा तयो वा परिमाणमेसं द्वत्तयो वासद्दत्थे वा द्वे वा तयो वा द्वत्तयो।

दक्खिणस्सा च पुब्बस्सा च दिसाय यदन्तराळं दक्खिणपुब्बा दिसा, दक्खिणा च सा पुब्बा चाति वा, सह पुत्तेनागतो सपुत्तो, सलोमको विज्जमानलोमकोति अत्थो, एवं सपक्खको, अत्थी खीरा ब्राह्मणीति अत्थिसद्दो विज्जमानत्थे निपातो, क्वचि गतत्थताय पदन्तरानमप्पयोगो, कण्ठट्ठा काळा अस्स कण्ठेकाळो, ओट्ठस्स मुखमिव मुखमस्स ओट्ठमुखो, केससङ्घातो चूळा अस्स केसचूळो, सुवण्णविकारो अलङ्कारो अस्स सुवण्णालङ्कारो, पपतितं पण्णमस्स पपतितपण्णो, पपण्णो, अविज्जमाना पुत्ता अस्स अविज्जमानपुत्तो, न सन्ति पुत्ता अस्स अपुत्ते, क्वचि न होति पञ्च भुत्तवन्तो अस्स भातुनो पुत्तो अस्स अत्थीति बहुलाधिकारतो।

१८. तत्थ गहेत्वा तेन पहरित्वा युद्धे सरूपं।

सत्तम्यन्तं ततियन्तञ्च सरूपमनेकं तत्थ गहेत्वा तेन पहरित्वा युद्धे-ञ्ञपदत्थे एकत्थं वा होति, केसेसु च केसेसु च गहेत्वा युद्धं पवत्तं केसाकेसि, दण्डेहि च दण्डेहि च पहरित्वा युद्धं पवत्तं दण्डादण्डि, मुट्ठामुट्ठि, ''चि वीतियारे'' (३-५१) ति चि समासन्तो, ''चिस्मिं'' (३.६६) ति अकारो। तत्थ तेनेति किं? कायञ्च कायञ्च गहेत्वा युद्धं पवत्तं। गहेत्वा पहरित्वाति किं? रथे च रथे च ठत्वा युद्धं पवत्ति। युद्धेति किं? हत्थे च हत्थे च गहेत्वा सख्यं पवत्तं। सरूपन्ति किं? दण्डेहि च मुसलेहि च पहरित्वा युद्ध पवत्तं।

१९. चत्थे।

अनेकं स्याद्यन्तं चत्थे एकत्थं वा भवति। समुच्चयोन्वाचयो इतरीतरयोगो समाहारो च च सद्दत्था, तत्थ समुच्चयान्वाचयेसु नेकत्थीभावो सम्भवति, तेसु हि समुच्चयो अञ्ञमञ्ञनिरपेक्खा नमत्तप्पधानानं कत्थचि किरियाविसेसे चीयमानता, यथा 'धवे च खदिरे च पलासे च छिन्दा'ति। अन्वाचयो च यत्थेको पधानभावेन विधीयते अपरो च गुणभावेन, यथा 'भिक्खञ्चर गावो चानये'ति। इतरद्वये तु सम्भवति, तेसु हि अञ्ञमञ्ञसापेक्खानमवयवभदानुगतो इतरीतरयोगो, यथा 'सारिपुत्तमोग्गल्लाना'ति, अस्सावयवप्पधानत्ता बहुवचनमेव। अञ्ञमञ्ञसापेक्खानमेव तिरोहितावयवभेदो समुदायप्पधानो समाहारो, यथा 'छत्तुपाहन'न्ति, अस्स पन समुदायप्पधानत्ता एकवचनमेव।

ते च समाहारीतरीतरयोगा बहुलं विधाना नियतविसयायेव होन्ति, तत्रायं विसयविभागो निरुत्थिपिटकागतो-पाणितूरिययोग्गसेनङ्गानं, निच्चवेरीनं, सङ्ख्यापरिमाण-सञ्ञानं, खुद्दजन्तुकानं, पचनचण्डालानं, चरणसाधारणानं, एकज्झायनपावचनानं, लिङ्गविसेसानं, विविधविरुद्धानं दिसानं, नदीनञ्च निच्चं समाहारेकत्तं भवति, तिणरुक्खपसुसकुनधनधञ्ञब्यञ्जनजनप्पदानं वा, अञ्ञेसमितरीतरयोगोव।

पाण्यङ्गानं-चक्खुसोतं, मुखनासिकं, हनुगीवं, छविमंसलोहितं, नामरूपं, जरामरणं। तुरियङ्गानं-अलसतालम्बरं, मुरजगोमुखं, सङ्खदेण्डिमं, मद्दविकपाणविकं, गीतवादितं, सम्मतालं। योग्गङ्गानं फालपाचनं, युगनङ्गलं। सेनङ्गानं-असिसत्तितोमरपिण्डं, असिचम्मं, धनुकलापं, पहरणावरणं। निच्चवेरीनं-अहिनकुलं, बीळालमूसिकं, काकोलूकं, नागसुपण्णं। सङ्ख्यापरिमाण सञ्ञानं-एककदुकं, दुकतिकं, तिकचतुक्कं, चतुक्कपञ्चकं, दसेकादसकं। खुद्दजन्तुकानं कीटपटङ्गं, कुन्थकिपिल्लिकं, डंसमकसं, मक्खिककिपिल्लिकं। पचनचण्डालानं-ओरब्भिकसूकरिकं, साकुन्तिकमागविकं, सपाकचण्डालं, वेनरथकारं, पुक्कुस छवडाहकं। चरणसाधारणानं-अतिसभारद्वाजं, कठकलापं, सीलपञ्ञाणं, समथविपस्सनं, विज्जाचरणं। एकज्झायनपावचनानं दीघमज्झिमं, एकुत्तरसंयुत्तकं, खन्धकविभङ्गं। लिङ्गविसेसानं-इत्थिपुखं, दासिदासं, चीवरपिण्डपातसेनासनगिलानप्पच्चयभेसज्जपरिक्खारं, तिणकट्ठसाखापलासं, 'लाभी होति चीवरपिण्डपातसेना- सनगिलानप्पच्चयभेसज्जपरिक्खारान'न्तिपि दिस्सति। विविधविरुद्धानं कुसलाकुसलं, सावज्जानवज्जं, हीनप्पणीतं, कण्हसुक्कं, छेकपापकं। दिसानं पुब्बापरं, दक्खिणुत्तरं, पुब्बदक्खिणं, पुब्बुत्तरं, अधरुत्तरं, अपरदक्खिणं, अपरुत्तरं। नदीनं-गङ्गायमुनं, महिसरभु।

तिणविसेसानं-कासकुसं कासकुसा, उसीरबीरणं उसीरबीरणा, मुञ्जपब्बजं मुञ्जपब्बजं मुञ्जपब्बजा। रुक्खविसेसानं खदिरपलासं खदिरपलासा, वोस्सकण्णं धवास्सकण्णा, पिलक्खनिग्रोधं पिलक्खनिग्रोधा, अस्सत्थकपित्थनं अस्सत्थकपित्थना, साकसालं साकसाला। पसुविसेसानं-गजगवजं गजगवजा, गोमहिसं गोमहिसा, एणेय्यगोमहिसं एणेय्यगोमहिसा, एणेय्यवराहं एणेय्यवराहा, अजेळकं अजेळका, कुक्कुरसूकरं कुक्कुरसूकरा, हत्थिगवास्सवळवं हत्थिगवास्सवळवा। सकुनविसेसानं-हंसबलावं हंसबलावा, कारण्डवचक्कवाकं कारण्डवचक्कवाका, बकबलाकं बकबलाका। धनानं-हिरञ्ञसुवण्णं हिरञ्ञसुवण्णा, मणिसङ्खमुत्तावेळुरियं मणिसङ्खमुत्तावेळुरिया, जातरूपरजतं जातरूपरजता। धञ्ञानं-सालियवकं सालियवका, तिलमुग्गमासं तिलमुग्गमासा, निप्फावकुलत्थं निप्फावकुलत्था। ब्यञ्जनानं-साकसुवं साकसुवा, गब्यमाहिसं गब्यमाहिसा, एणेय्यवाराहं एणेय्यवाराहा, मिगमायूरं मिगमायूरा। जनपदानं-कासिकोसलं कासिकोसला, वज्जिमल्लं वज्जिमल्ला, चेतिवंसं चेतिवंसा, मच्छसूरसेनं मच्छसूरसेना, कुरुपञ्चालं कुरुपञ्चाला। इतरीतरयोगो यथा-चन्दिमसूरिया, समणब्राह्मणा मातापितरो इच्चादि।

एतस्मिं एकत्थीभावकण्डे यं वुत्तं पुब्बं, तदेव पुब्बं निपतति कमातिक्कमे पयोजनाभावा। क्वचि विपल्लासोपि होति बहुलाधिकारतो, दन्तानं राजा राजदन्तो, कत्थचि कमं पच्चानादरा पुब्बकालस्सापि परनिपातो, लित्तवासितो, नग्गमुसितो, सित्तसम्मट्ठो, भट्ठलुञ्चितो। चत्थे यदेकत्थं तत्थ केचि पुब्बपदं बहुधा नियमेन्ति, तदिह ब्यभिचारदस्सान न वुत्तन्ति दट्ठब्बं।

२०. समाहारे नपुंसकं।

चत्थे समाहारे यदेकत्थं, तं नपुंसकलिङ्गं भवति, तथाचेवोदाहटं, कत्थचि न होति 'सभापरिसाया'ति ञापका, आधिपच्चपरिवारो, छन्दपारिसुद्धि, पटिसन्धिपवत्तियं।

२१. सङ्ख्यादि।

एकत्थे समाहारे सङ्ख्यादि नपुंसकलिङ्गं भवति, पञ्चगवं, चतुप्पथं, समाहारस्सेकत्ता एकवचनमेव होति, समाहारेत्वेव पञ्चकापालो पूवो, तिपुत्तो।

२२. क्वचेकत्तञ्च छट्ठिया।

छट्ठियेकत्थे क्वचि नपुंसकत्तं होतेकत्थञ्च, सलभानं छाया सलभच्छायं, एवं सकुन्तानं छाया सकुन्तच्छायं, पासादच्छायं पासादच्छाया, घरच्छायं घरच्छाया, अमनुस्ससभाय नपुंसकेकत्तं भवति ब्रह्मसभं, देवसभं, इन्दसभं, यक्खसभं, सरभसभं, मनुस्ससभायं पन खत्तियसभा, राजसभा इच्चेवमादि, क्वचीति किं राजपुरिसो।

२३. स्यादीसु रस्सो।

नपुंसके वत्तमानस्स रस्सो होति स्यादीसु। सलभच्छायं, स्यादीसूति किं? सलभच्छाये।

२४. घपस्सन्तस्साप्पधानस्स।

अन्तभूतस्स अप्पधानस्स घपस्स स्यादीसु रस्सो होति। बहुमालो पोसो, निक्कोसम्बि, अतिवामोरु, अन्तस्साति किं? राजा कञ्ञापियो, अप्पधानस्साति किं? राजकुमारी ब्रह्मबन्धू।

२५. गोस्सु।

अन्तभूतस्स अप्पधानस्स गोस्स स्यादीसु उ होति। चित्तगु, अप्पधानस्सात्वेव? सुगो, अन्तस्सात्वेव? गोकुलं।

२६. इत्थियमत्वा।

इत्थियं वत्तमानतो अकारन्ततो नामस्मा आपच्चयो होति। धम्मदिन्ना।

३७. नदादितो वी।

नदादीहि इत्थियं वीप्पच्चयो होति। नदी, मही, कुमारी, तरुणी, वारुणी, गोतमी। (१४) ''गोतोवा'' गावी गो, आकतिगणो-यं, कोरो ''न्तन्तूनं वीम्हि तो वा'' (३-३६) ति विसेसनत्थो।

२८. यक्खादितिनी च।

यक्खादितो इत्थियं इनी होति वीच। यक्खिनी यक्खी, नागिनी नागी, सीहिनी सीही।

२६. आरामिकादीहि।

आरामिकादितो इनी होतित्थियं। आरामिकिनी, अनन्तरायिकिनी, राजिनी (१५) ''सञ्ञायं मानुसो'' मानुसिनी, अञ्ञत्र मानुसी।

३०. युवण्णेहि नी।

इत्थियमिवण्णुवण्णन्तेहि नी होति बहुलं। सदापयतपाणिनी, दण्डिनी, भिक्खुनी, खत्तबन्धुनी, परचित्तविदुनी, मातुआदितो कस्मा न होति? इत्थिप्पच्चयं विनापि इत्थत्ताभिधानतो।

३१. क्तिम्हाञ्ञत्थे।

क्तिम्हाञ्ञत्थेयेव इत्थियं नी होति बहुलं। साहं अहिं सारतिनी, तस्सा मुट्ठस्सतिनिया, सा गावी वच्छगिद्धिनी, अञ्ञत्थेति किं? धम्मरति।

३२. घरण्यादयो।

घरणिप्पभुतयो नीप्पच्चन्तासाधवो भवन्ति। घरणी, पोक्खरणी, ईस्स-त्तं निपातना, (१६) ''आचरिया वा य-लोपो च'' आचरिनी, आचरिया।

३३. मातुलादित्वानी भरियायं।

मातुलादितो भरियायमानी होति। मातुलानी, वारुणानी, गहपतानी, आचरियानी, (१७) ''अभरियायं खत्तिया वा'' खत्तियानी खत्तिया, नदादिपाठा भरियायन्तु खत्तियी।

३४. उपमासंहित सहित सञ्ञत सह सफवाम लक्खणादितूरुतू।

ऊरुसद्दा उपमानादिपुब्बा इत्तियमू होति। करभोरू, संहितोरू, सहितोरू, सञ्ञतोरू, सहोरू, सफोरू, वामोरू, लक्खणोरू, ऊतियोगविभागा ऊ ब्रह्मबन्धू।

३५. युवा ति।

युवसद्दतो ति होतित्थियं। युवति।

३६. न्तन्तूनं वीम्हितो वा।

वीम्हि न्तन्तूनं तो वा होति। गच्छती गच्छन्ती, सीलवती सीलवन्ती।

३७. भवतो भोतो।

वीम्हि भवतो भोतादेसो होति वा। भोती भवन्ती।

३८. गोस्सावङ।

गोसद्दस्स वीम्हावङ होति। गावी।

३९. पुथुस्स पथवपुथवा।

वीम्हि पुथुस्स पथवपुथवा होन्ति। पथवी, पुथवी, ठे पथवी।

४०. समासन्त्व।

समासन्त्व इति चाधिकरीयति।

४१. पापादीहि भूमिया।

पापादीही परा या भूमि तस्सा समासन्तो अ होति। पापभूमं, जातिभूमं।

४२. सङ्ख्याहि।

सङ्ख्याहि परा या भूमि तस्सा समासन्तो अ होति। द्विभूमं, तिभूमं।

४३. नदीगोदावरीनं।

सङ्ख्याहि परासं नदीगोदावरीनं समासन्तो अ होति, पञ्चनदं, सत्तगोदावरं, सङ्ख्याहित्वेव? महानदी, नदीगोदावरीनन्ति किं? दसित्थि।

४४. असङ्ख्येहि चाङ्गुल्यानञ्ञासङ्ख्यत्थेसु।

असङ्ख्येहि सङ्ख्याहि च पराय अङ्गुल्या समासन्तो अ होति नो चे अञ्ञपदत्थे असङ्ख्यत्थे च समासो वत्तते। निग्गतमङ्गुलीहि निरङ्गुलं, अच्चङ्गुलं, द्वे अङ्गुलियो समाहटा द्वङ्गुलं, अनञ्ञासङ्ख्यत्थेसूति किं? पञ्चङ्गुलि हत्थो, उपङ्गुलि, कथं 'द्वे अङ्गुलीमानमस्साति द्वङ्गुल'न्ति? नात्र समासोञ्ञपदत्थे विहितो मत्तादीनं लोपे कते तत्थ वत्तते।

अङ्गुलसद्दो वा पमाणवाचि सद्दन्तरं, यथा 'सेनङ्गुलप्पमाणेन अङ्गुलानं सतं पुण्णं चतुद्दस वा अङ्गुलानी'ति।

४५. दीघाहोवस्सेकदेसेहि च रत्त्या।

दीघादीहि असङ्ख्येहि सङ्ख्याहि च परमस्मा रत्तिया समासन्तो अ होति। दीघरत्तं, अहोरत्तं (त्तो), वस्सारत्तं (त्तो), पुब्बरत्तं, अपररत्तं, अड्ढरत्तं, अतिक्कन्तो रत्तिं अतिरत्तो, द्वेरत्ती समाहटा दिरत्तं (त्तो), वा क्वचि बहुलाधिकारा एकरत्तं (त्तो), एकरत्ति, अनञ्ञासङ्ख्यत्थेसुत्वेव? दीघरत्तिहेमन्तो, उपरत्ति, क्वचि होतेव बहुलं विधानायथारत्तं।

४६. गोत्वचत्थे चालोपे।

गोसद्दा अलोपविसया समासन्तो अ होति न चे चत्थे समासो अञ्ञपदत्थे असङ्ख्यत्थे च, राजगवो, परमगवो, पञ्चगवधनो, दसगवं, अलोपेति किं? पञ्चहि गोहि कीतो पञ्चगु, अचत्थेति कि? अजस्सगावो, अनञ्ञासङ्ख्यत्थेसुत्वेव? चित्तगु, उपगु।

४७. रत्तिन्दिवदारगवचतुरस्सा।

एते सद्दा अअन्ता निपच्चन्ते। रत्तो च दिवा च रत्तिन्दिवं, रत्ति च दिवा च रत्तिन्दिवं, दारा च गावो च दारगवं, चतस्सो अस्सियो अस्स चतुरस्सो।

४८. आयामेनुगवं।

अनुगवन्ति निपच्चते आयामे गम्यमाने। अनुगवं सकटं, आयामेति किं? गुन्नं पञ्छा अनुगु।

४९. अक्खिस्माञ्ञत्थे। अक्खिस्मा समासन्तो अ होति अञ्ञत्थे चे समाधसा। विसालक्खो, विसालक्खी।

५०. दारुम्यङ्गुल्या।

अङ्गुलन्ता अञ्ञपदत्थे दारुम्हि समासन्तो अ होति। द्वङ्गुलंदारु, पञ्चङ्गुलं, अङ्गुलिसदिसावयवं धञ्ञादीनं विक्खेपकं दारुं वुच्चते, पमाणे तु पुब्बे विय सिद्धं सखराजसद्दा अकारन्ताव, सिस्सोपि न दिस्सति, गाण्डी वधन्वाति पकतन्तरेन सिद्धं।

५१. चि वीतिहारे।

ओघाब्यतिहारे गम्यमाने अञ्ञपदत्थे वत्तमानतो चि होति। केसाकेसि दण्डादण्डि, चकारो ''चिस्मि''न्ति (३.६६) विसेसनत्थो, सुगन्धि, दुग्गन्तीति पयोगो न दिस्सते।

५२. ल्त्वित्थियूहि को।

ल्तुप्पच्चयन्तेहि, इत्थियमीकारूकारन्तेहि च बहुलं कप्पच्चयो होति अञ्ञपदत्थे। बहुकत्तुको, बहुकुमारिको,

बहुब्रह्मबन्धुको, बहुलंत्वेव? सुब्भू।

५३. वाञ्ञतो।

अञ्ञेहि अञ्ञपदत्थे को वा बहुलं होति। बहुमालको, बहुमालो।

५४. उत्तरपदे। एतमधिकतं वेदितब्बं।

५५. इमस्सिदं।

उत्तरपदे परतो इमस्स इदं होति। इदमट्ठिता, इदप्पच्चयता, निग्गहीतलोपो पस्स च द्विभावो।

५६. पुं पुमस्स वा। पुमस्स पुं होतुत्तरपदे विभासा। पुल्लिङ्गं, पुमलिङ्गं।

५७. टन्तन्तूनं।

एसं ट होतुत्तरपदे क्वचि वा। भवम्पतिट्ठामयं, भगवंमूलका नो धम्मा, बहुलाधिकारा तरादीसु च पगेव महत्तरी, रत्तञ्ञुमहत्तं।

५८. अ। एसं अ होतुत्तरपदे। गुणवन्तपतिट्ठो-स्मि।

५९. मनाद्यापादीनमो मये च। मनादीनमापादीनं च ओ होतुत्तरपदे मये च। मनोसेट्ठा, मनोमया, रजोजल्लं, रजोमयं, आपोगतं, आपोमयं, अनुयन्ति दिसोदिसं।

६०. परस्स सङ्ख्यासु।

सङ्ख्यासुत्तरपदेसु परस्स ओ होति। परोसतं, परोसहस्सं, सङ्ख्यासूति किं? परदत्तूपजीविनो।

६१. जने पुथस्सु।

जने उत्तरपदे पुथस्स उ होति। अरियेहि पुथगेवायं जनोति पुथुज्जनो।

६२. सो छस्साहायतने वा।

अहे आयतने चुत्तरपदे छस्स सो वा होति। साहं छाहं, सळायतनं, छळायतनं।

६३. ल्तुपितादीनमारङरङ।

ल्तुप्पच्चयन्तानं पितादीनञ्च यथाक्कममारङरङ वा होन्तुत्तरपदे, सत्थारदस्सनं, कत्तारनिद्देसो, मातरपितरो, वात्वेव? सत्थुदस्सनं, मातापितरो।

६४. विज्जायोनिसम्बन्धानमा तत्र चत्थे।

ल्तुपितादीनं विज्जासम्बन्धीनं योनिसम्बन्धीनं च तेस्वेव ल्तुपितादीसु विज्जायोनिसम्बन्धिसुत्तरपदेसु चत्थविसये आ होति। होतापोतरो मातापितरो, ल्तुपितादीनं त्वेव? पुत्तभातरो, तत्रेति किं? पितुपितामहा, चत्थेति किं? मातुभाता, विज्जायोनिसम्बन्धानन्ति किं? दातुभत्तारो।

६५. पुत्ते।

पुत्ते उत्तरपदे चत्थविसये ल्तुपितादीनं विज्जायोनि सम्बन्धानमा होति। पितापुत्ता, मातापुत्ता।

६६. चिस्मिं।

चिप्पच्चयन्ते उत्तरपदे आ होति। केसाकेसि, मुट्ठामुट्ठि।

६७. इत्थियम्भासितपुमित्थी पुमेवेकत्थे।

इत्थियं वत्तमाने एकत्थे समानाधिकरणे उत्तरपदे परे भासितपुमा इत्थी पुमेव होति। कुमारभरियो, दीघजङ्घो, युवजायो, इत्थियन्ति किं? कल्याणी पधानमेसं कल्याणिप्पधाना, भासितपुमेति किं? कञ्ञाभरियो, इत्थीति किं? गामणिकुलं दिट्ठि अस्स गामणिदिट्ठि, एकत्थेति किं? कल्याणिया माता कल्याणिमाता।

६८. क्वचि पच्चये।

भासितपुमित्थी पच्चये क्वचि पुमेव मोति। ब्यत्ततरा, ब्यत्ततमा।

६९. सब्बादयो वुत्तिमत्ते।

इत्थिवाचका सब्बादयो वुत्तिमत्ते पुमेव होन्ति। तस्सा मुखं तम्मुखं, तस्सं तत्र, ताय ततो, तस्सं वेलायं तदा।

७०. जायाय जयं पतिम्हि।

पतिम्हि परे जायाय जयं होति, जयम्पती, 'जानिपती'ति पकतन्तरेन सिद्धं, तथा 'दम्पती, जम्पती'ति।

७१. सञ्ञायमुदोदकस्स।

सञ्ञायमुदकस्सुत्तरपदे उदादेसो होति। उदधि, उदपानं।

७२. कुम्भादीसु वा।

कुम्भादीसुत्तरपदेसु उदकस्स उदादेसो वा होति। उदकुम्भो उदककुम्भो, उदपत्तो उदकपत्तो, उदबिन्धु उदकबिन्धु, आकतिगणो-यं।

७३. सोतादीसूलोपो।

सोतादीसुत्तरपदेसु उदकस्स उस्स लोपो होति। दकसोतं, दकरक्खसो।

७४. ट नञ स्स।

उत्तरपदे नञ सद्दस्स ट होति। अब्राह्मणो, ञकारो किं? केवलस्स मा होतु पामनपुत्तो।

७५. अन सरे।

सरादो उत्तरपदे नञ सद्दस्स अन होति। अनक्खातं।

७६. नखादयो।

नखादयो सद्दा अनन टादेसा निपच्चन्ते। नास्स खमत्थीति नखो, अखमञ्ञं, सञ्ञासद्देसु च निप्फत्तिमत्तं यथाकथञ्चि कत्तब्बंनास्स कुलमथीति नकुलो, अकुलमञ्ञं, नख नकुल नपुंसकनक्खत्त नाक एवमादि।

७७. नगो वाप्पाणिनि।

नगइच्चप्पाणिनि वा निपच्चते। नगो रुक्खो, नगो पब्बतो, अगो रुक्खो, अगो पब्बतो, अप्पाणिनीति किं? अगो वसलो सीतेन।

७८. सहस्स सो-ञ्ञत्थे।

अञ्ञपदत्थवुत्थिम्हि समासे उत्तरपदे परे सहस्स सो वा होति। सपुत्तो, सहपुत्तो, अञ्ञत्थेति किं? सह कत्वा, सह युज्झित्वा।

७९. सञ्ञायं।

सहस्सुत्तरपदे सो होति सञ्ञायं। सास्सत्थं, सपलासं।

८०. अप्पच्चक्खे।

अप्पच्चक्खे गम्यमाने सहस्स सो होतुत्तरपदे, साग्गि कपोतो, सपिसाचा वातमण्डलिका।

८१. अकाले सकत्थे।

सकत्थप्पधानस्स सहसद्दस्स अकाले उत्तरपदे सो होति। सम्पन्नं ब्रह्मं सब्रह्मं, सचक्कं निधेहि, सधुरं पाजेहि, अकालेति किं? सह पुब्बण्हं, सहापरण्हं।

८२. गन्थन्ताधिक्ये।

गन्थन्ते आधिक्ये च वत्तमानस्स सहस्स सो होतुत्तरपदे। सकलं जोतिमधीते समुहुत्तं, कालत्थो आरम्भो, आधिक्ये-सदोणा खारी, समासको कहापणो, निच्चत्थोयमारम्भो।

८३. समानस्स पक्खादीसु वा।

पक्खादीसुत्तरपदेसु समानस्स सो होति वा। सपक्खो समानपक्खो, सजोति समानजोति, पक्खादीसूति किं? समानसीलो, पक्ख, जोति, जनपद, रत्ति, पत्तिनी, पत्ती, नाभि, बन्धु ब्रह्मचारी, नाम, गोत्त, रूप, ठान, वण्ण, वयो, वचन, धम्म, जातिय, घच्च।

८४. उदरे इये।

उदरे इये परे परतो समानस्स सो वा होति। सोदरियो, समानोदरियो, इयेति किं? समानोदरता।

८५. रीरिक्खकेसु।

एतेसु समानस्स सो होति। सरी, सरिक्खो, सरिसो।

८६. सब्बादीनमा।

रीरिक्खकेसु सब्बादीनमा होति। यादी, यादिक्खो, यादिसो।

८७. न्तकिमिमानं टाकीटी।

रीरिक्खकेसु न्तसद्द किंसद्द इमसद्दानं टाकीटी होन्ति यथाक्कमं। भवादी, भवादिक्खो, भवादिसो, कीदी, कीदिक्खो, कीदिसो, ईदी, ईदिक्खो, ईदिसो।

८८. तुम्हाम्हानं तामेकस्मिं।

रीरिक्खकेसु तुम्हाम्हानं तामा होन्तेकस्मिं यथाक्कमं। तादी, तादिक्खो, तादिसो, मादी, मादिक्खो, मादिसो। एकस्मिन्ति किं? तुम्हादी, अम्हादी, तुम्हादिक्खो, अम्हादिक्खो, तुम्हादिसो, अम्हादिसो।

८९. तं ममञ्ञत्र।

रीरिक्खकन्ततो अञ्ञस्मिं उत्तरपदे तुम्हाम्हानमेकस्मिं तंमं होन्ति यथाक्कमं, तन्दीपा, मन्दीपा, तंसरणा, मंसरणा, तय्योगो, मय्योगोति बिन्दुलोपो।

९०. वेतस्सेट।

रीरिक्खकेस्वेतस्सेट वा होति, एदी, एतादी, एदिक्खो, एतादिक्खो, एदिसो, एतादिसो।

९१. विधादीसु द्विस्स दु।

द्विस्स दु होति विधादीसु, दुविधो, दुपट्टं एवमादि।

९२. दि गुणादीसु।

गुणादीसु द्विस्स दि होति, द्विगुणं, दिरत्ति, दिगु एवमादि।

९३. तीस्व।

तीसु द्विस्स अहोति। द्वत्तिक्खत्तुं, द्वित्तिपत्तपुरा।

९४. आ सङ्ख्यायासतादो-नञ्ञत्थे।

सङ्ख्यायमुत्तरपदे द्विस्स आ होति असतादो अनञ्ञधत्थ। द्वादस, द्वावीसति द्वत्तिंस, सङ्ख्यायन्ति किं? दिरत्तं, असतादोति किं? दिसतं, दिसहस्सं। अनञ्ञत्थेति किं? द्विदसा।

९५. तिस्से।

सङ्ख्यायमुत्तरपदे तिस्स ए होति असतादो अनञ्ञत्थे, तेरस, तेवीस, तेत्तिंस, सङ्ख्यायंत्वेव? तिरत्तं, असतादोत्वेव? तिसतं, अनञ्ञत्थेत्वेव? तिचतुका।

९६. चत्तालीसादो वा।

तिस्से वा होति चत्तालीसादो, तेचत्तालासं तिचत्तालीसं, तेपञ्ञासं तिपञ्ञासं, तेसट्ठि तिसट्ठि, तेसत्तति तिसत्तति, तेअसीति तियासीति, तेनवुति तिनवुति, असतादोत्वेव? तिसतं।

९७. द्विस्सा च।

असतादो-नञ्ञत्थे चत्तालीसादो द्विस्से वा होति आ च। द्वेचत्तालीसं, द्वाचत्तालीसं द्विचत्तालीसं, द्वेपञ्ञासं, द्वापञ्ञासं द्विपञ्ञासं इच्चादि।

९८. बाचत्तालीसादो।

द्विस्स बा वा होति अचत्तालीसादो-नञ्ञत्थे। बारस द्वादस, बावीसति द्वावीसति, बत्तिंस द्वत्तिंस, अचत्तालीसादोति किं? द्विचत्तालीसं।

९९. वीसतिदसेसु पञ्चस्स पण्णपन्ना।

वीसतिदसेसु परेसु पञ्चस्स पण्णपन्ना होन्ति वा यथाक्कमं। पण्णवीसति पञ्चवीसति, पन्नरस्व पञ्चदस।

१००. चतुस्स चुचो दसे।

चतुस्स चुचो होन्ति वा दससद्दे परे। चुद्दस, चोद्दस, चतुद्दस।

१०१. छस्स सो।

छस्स सोइच्चयमादेसो होति दससद्दे परे। सोळस।

१०२. एकट्ठानमा।

एकअट्ठानं आ होति दसे परे। एकादस, अट्ठारस।

१०३. र सङ्ख्यातो वा।

सङ्ख्यातो परस्स दसस्स र होति विभासा। एकारस एकादस, बारस द्वादस, पन्नरस पञ्चदस, सत्तरस सत्तदस, अट्ठारस अट्ठादस, पन्नबादेसेसु निच्चं, इध न होति चतुद्दस।

१०४. छतीहि ळो च।

छतीहि परस्स दसस्स ळो होति रो च, सोळस सोरस, तेळस तेरस।

१०५. चतुत्थ ततियान मड्ढुड्ढतिया।

अड्ढा परेसं चतुत्थततियानं उड्ढतिया होन्ति यथाक्कमं। अड्ढेन चतुत्थो अड्ढुड्ढो, अड्ढेन ततियो अड्ढतियो, कथं अड्ढतेय्योति? सकत्थे ण्ये उत्तरपदवुड्ढि।

१०६. दुतियस्स सह दियड्ढदिवड्ढा।

अड्ढा परस्स दुतियस्स सह अड्ढसद्देन दियड्ढदिवड्ढा होन्ति। अड्ढेन दुतियो दियड्ढो, दिवड्ढो वा।

१०७. सरे कद कुस्सुत्तरत्थे।

कुस्सुत्तरपदत्थे वत्तमानस्स सरादो उत्तरपदे कदादेसो होति। कदन्नं, कदसनं, सरेति किं? कुपुत्तो, उत्तरत्थेति किं? कुओड्ढो राजा।

१०८. काप्पत्थे।

अप्पत्थे वत्तमानस्स कुस्स का होति उत्तरपदत्थे, अप्पकं लवणं कालवणं।

१०९. पुरिसे वा।

कुस्स पुरिसे का होति वा। कापुरिसो कुपुरिसो, अयमप्पत्तविभासा, अप्पत्थे तु पुब्बेन निच्चं होति ईसं पुरिसो कापुरिसो।

११०. पुब्बापरज्जसायमज्झेहाहस्स ण्हो।

पुब्बादीहुत्तरपदस्स अहस्स ण्हादेसो होति, पुब्बण्हो, अपरण्हो, अज्जण्हो, सायण्हो, मज्झण्हो (पण्हो)।

इति मोग्गल्लाने ब्याकरणे वुत्तियं

समासकण्डो ततियो।

४. चतुत्थो कण्डो (णादि)

१. णो वा पच्चे।

छट्ठियन्ता नामस्मा वा णप्पच्चयो होति अपच्चे-भिधेय्ये, णकारो वुद्ध्यत्थो, एवमञ्ञत्तापि, वसिट्ठस्सापच्चं वासिट्ठो, वासिट्ठी वा, ओपगवो, ओपगवी वा, वेति वाक्यसमासविकप्पनत्थं, तस्साधिकारो सकत्थावधि।

२. वच्छादितो णानणायना।

वच्छादीहि अपच्चप्पच्चयन्तेहि गोत्तादीहि च सद्देहि णानणायनप्पच्चया वा होन्ति अपच्चे, वच्छानो वच्छायनो, कच्चानो कच्चायनो, यागमे कातियानो, मोग्गल्लानो मोग्गल्लायनो, साकटानो साकटायनो, कण्हानो कण्हायनो इच्चादि।

३. कत्तिकाविधवादीहि णेय्यणेरा।

कत्तिकादीहि विधवादीहि च णेय्यणेरा वा यथाक्कमं होन्ति अपच्चे, कत्तिकेय्यो, वेनतेय्यो, भागिनेय्यो इच्चादि, वेधवेरो, बन्धकेरो, नालिकेरो, सामणेरो इच्चादि।

४. ण्यदिच्चादीहि।

दितिप्पभुतिहि ण्यो वा होति अपच्चे, देच्चो, आदिच्चो, कोण्डञ्ञो, गग्यो, भातब्बो इच्चादि।

५. आ णि।

अकारन्ततो णि वा होति अपच्चे, दक्खि, दत्थि, दोणि। वासवि, वारुणि इच्चादि।

६. राजतो ञ्ञो जातियं।

राजसद्दतो ञ्ञो वा होति अपच्चे जातियं गम्यमानायं, राजञ्ञो, जातियन्ति किं? राजापच्चं।

७. खत्ता यिया।

खत्तसद्दा यइया होन्ति अपच्चे जातियं, खत्यो, खत्तियो, जातियंत्वेव? खत्ति।

८. मनुतो स्ससण।

मनुसद्दतो जातियं स्ससण होन्ति अपच्चे, मनुस्सो, मानुसो, इत्थियं मनुस्सा, मानुसी, जातियंत्वेव? मानवो।

९. जनपदनामस्मा खत्तिया रञ्ञे च णो।

जनपदस्स यं नामं, तन्नामस्मा खत्तिया अपच्चे रञ्ञे च णो होति, पञ्चालो, कोसलो, मागधो, ओक्काको, जनपदनामस्माति किं? दासरथि, खत्तियाति किं? पञ्चालस्स ब्राह्मणस्स अपच्चं पञ्चालि।

१०. ण्य कुरुसिवीहि।

कुरुसिवीहि अपच्चे रञ्ञे च ण्यो होति। कोरब्यो, सेब्यो।

११. ण रागा तेन रत्तं।

रागवाचिततियन्ततो रत्तमिच्छेतस्मिं अत्थे णो होति, कसावेन रत्तं कासावं, कोसुम्भं, यालिद्दं, रागाति किं? देवदत्तेन रत्तं वत्थं, इध कस्मा न होति? 'नीलं पीत'न्ति, गुणवचनत्ता विनापि णेन णत्थस्साभिधानतो।

१२. नक्खत्तेनिन्दुयुत्तेन काले।

ततियन्ततो नक्खत्ता तेन लक्खिते काले णो होति, तञ्चे नक्खत्तमिन्दुयुत्तं होति, फुस्सी रत्ति, फुस्सं अहं, नक्खत्तेनेति किं? गुरुना लक्खिता रत्ति। इन्दुयुत्तेनेति किं? कत्थिकाय लक्खितो मुहुत्तो, कालेति किं? फुस्सेन लक्खिता अत्थसिद्धि, अज्जकत्तिकाति कत्तिकायुत्ते चन्दे कत्तिकासद्दो वत्तते।

१३. सा-स्स देवता पुण्णमासी।

सेति पठमन्ता अस्साति छट्ठ्यत्थे णो भवति, यं पठमन्तं, सा चे देवता पुण्णमासीवा, सुगतो देवता अस्साभि सोगतो, माहिन्दो, यामो, वारुणो, फुस्सी पुण्णमासी अस्स सम्बन्धिनीति फुस्सो, मासो, मायो, फग्गुनो, चित्तो, वेसाखो। जेट्ठमूलो, आसळ्हो, सावणो, पोट्ठपादो, अस्सयुजो, कत्तिको, मागसिरो, पुण्णमासीति किं? फुस्सी पञ्चमी अस्स, पुण्णमासी च भतकमाससम्बन्धिनी न होति... पुण्णो मा अस्सन्ति निब्बचना, अतो एव निपातना णो सागमो च, माससुतियाव न पञ्चदस रत्तादो विधि।

१४. तमधीते तं जानाति कणिका च।

दुतियन्ततो तमधीते तं जानातीति एतेस्वत्थेसु णो होति णो णिको च, ब्याकरणमधीते जानाति वा वेय्याकरणो, छन्दसो, कमको, पदको, वेनयिको, सुत्तन्तिको, द्वितग्गहणं पुथगेव विधानत्थं जाननस्स च अज्झेनविसयभावदस्सनत्थं पसिद्धूपसङ्गहत्थं च।

१५. तस्स विसये देसे।

छट्ठियन्ता विसये देसरूपे णो होति, वसातीनं विसयो देसो वासातो, देसेति किं? चक्खुस्स विसयो रूपं, देवदत्तस्स विसयो-नुवाको।

१६. निवासे तन्नामे।

छट्ठियन्ता निवासे देसे तन्नामे णो होति, सिवीनं निवासो देसो सेब्यो, वासातो।

१७. अदूरभवे।

छट्ठियन्ता अदूरभवे देसे तन्नामे णो होति, विदिसाय अदूरभवं वेदिसं।

१८. तेन निब्बत्ते।

ततियन्ता निब्बत्ते देसे तन्नामे णो होति, कुसम्बेन निब्बत्ता कोसम्भी नगरी, काकन्दी, माकन्दी, सहस्सेन निब्बत्ता साहस्सी परीखा, होतुम्हि कत्तरि करणे च यथायोगं ततिया।

१९. तमीधत्थि।

तन्ति पठमन्ता इधाति सत्तम्यत्थे देसे तन्नामे णो होति, यन्तं पठमन्तमत्थि चे, उदुम्बरा अस्मिं देसे सन्तीति ओदुम्बरो, बादरो, बब्बजो।

२०. तत्र भवे।

सत्तम्यन्ता भवत्थे णो होति, उदके भवो ओदको, ओरसो, जानपदो, मागधो, कापिलवत्थवो, कोसम्बो।

२१. अज्जादीहि तनो।

भवत्थे अज्जादीहि तनो होति, अज्ज भवो अज्जतनो, स्वातनो, हिय्यत्तनो।

२२. पुरातो णो च।

पुराइच्चस्मा भवत्थे णो होति तनो च, पुराणो, पुरातनो।

२३. अमात्वच्चो।

अमासद्दतो अच्चो होति भवत्थे, अमच्चो।

२४. मज्झादित्विमो।

मज्झादीहि सत्तम्यन्तेहि भवत्ते इमो होति, मज्झिमो, अन्तिमो। मज्झ, अन्त, हेट्ठा, उपरि, ओर, पार, पच्छा, अब्भन्तर, पच्चन्त (पुरत्था, बाहिर)।

२५. कणणेय्यणेय्यकयिया।

सत्तम्यन्ता एते पच्चया होन्ति भवत्थे, कण-कुसिना रायं भवो कोसिनारको, मागधको, आरञ्ञको विहारो। णेय्य-गङ्गेय्यो, पब्बतेय्यो, वानेय्यो। णेय्यक-कोलेय्यको, बाराणसेय्यको, चम्पेय्यको, मिथिलेय्यकोति एय्यको। य-गम्मो, दिब्बो। इयगामियो, उदरि-यो, दिवियो, पञ्चालियो, बोधिपक्खियो, लोकियो।

२६. णिको।

सत्तम्यन्ता भवत्थे णिको होति, सारदिको दिवसो, सारदिका रत्ति।

२७. तमस्स सिप्पं सीलं पण्यं पहरणं पयोजनं।

पठमन्ता सिप्पादिवाचका अस्सेतिछट्ठियत्थेणिको होति, वीणावादनं सिप्पमस्स वेणिको, मोदङ्गिको, वंसिको, पंसुकूलधारणं सीलमस्स पंसुकूलिको, तेचीवरिकेव, गन्धोपण्यमस्स गन्धिको, तेलिको, गोळिको, चापो पहरणमस्स चापिको, तोमरिको, मुग्गरिको, उपधिप्पयोजनमस्स ओपधिकं, सातिकं, साहस्सिकं।

२८. तं हन्तरहति गच्छतुञ्छति चरति।

दुतियन्ता हन्तीति एवमादीस्वत्थेसु णीको होति। पक्खीहिपक्खिनो हन्तीति पक्खिको, साकुनिको, मायूरिको। मच्छेहि-मच्छिको, मेनिको। मिगेहि-मागविको हारिणिको, 'सूकरिको'ति इको। सतमरहतीति सातिकं, सन्दिट्ठिको, एहिपस्सविधिं अरहतीति एहिपस्सिको, साहस्सिको, 'सहस्सियो'ति इयो। परदारं गच्छतीति पारदारिको, मग्गिको, पञ्ञासयोजनिको। बदरे उञ्छतीति बादरिको, सामाकिको। धम्मं चरतीति धम्मिको, अधम्मिको।

२९. तेन कतं कीतं बद्धमभिसङ्खतं संसट्ठं हतं हन्ति जितं जयति दिब्बति खणति तरति चरति वहति जीवति।

ततियन्ता कतादिस्वत्थेसु णिको होति। कायेन कतं कायिकं, वाचसिकं, मानसिकं, वातेन कतो आबाधो वातिको। सतेन कीतं सातिकं, साहस्सिकं, मूलतोव, देवदतेन कीतन्ति न होति तदत्थाप्पतीतिया। वरत्ताय बद्धो वारत्तिको, आयसिको, पासिको। घतेन अभिसङ्खतं संसट्ठं वा घातिकं, गोळिकं, दाधिकं, मारिचिकं। जालेन हतो हन्तीति वा जालिको, बालीसिको। अक्खेहि जितमक्खिकं, सालाकिकं। अक्खेहि जयति दिब्बतीति वा अक्खिको। खणित्तिया खणतीति खाणित्तिको, कुद्दालिको, देवदत्तेन जितं, अङ्गुल्या खणतीति न होति तदत्थानवगमा। उळुम्पेन तरतीति ओळुम्पिको, 'उळुम्पिको'ति इको गोपुच्छिको, नाविको। सकटेन चरतीति साकटिको, 'रथिको, परप्पिको'ति इको। खन्धेन वहतीति

खन्धिको, अंसिको, 'सीसिको'ति इको। वेतनेन जीवतीति वेतनिको, 'भतिको, कयिको, विक्कयिको, कयविक्कयिको'ति इको।

३०. तस्स संवत्तति।

चतुत्थियन्ता संवत्ततीति अस्मिं अत्थे णिको होति, पुनब्भवाय संवत्ततीति पोनोभविको, इत्थियं पोनो भविका, लोकाय संवत्ततीति लोकिको सुट्ठु अग्गोति सग्गो, सग्गाय संवत्ततीति सोवग्गिको, सस्सोवक तदमिनादिपाठा, धनाय संवत्ततीति धञ्ञं, यो।

३१. ततो सम्भूतमागतं।

पञ्चम्यन्ता सम्भूतमागतन्ति एतेस्वत्थेसु णिको होति, मातिको सम्भूतमागतं वा मत्तिकं, पेत्तिकं, ण्यरियण -यापि दिस्सन्ति, सुरभितो सम्भूतं सोरभ्यं, थनतो सम्भूतं थञ्ञं, पितितो सम्भूतो पेत्तियो, मातियो, मत्तियो, मच्चो वा।

३२. तत्थ वसति विदितो भत्तो नियुत्तो।

सत्तम्यन्ता तत्थ वसतीत्वेवमादीस्वत्थेसु णिको होति। रुक्खमूले वसतीति रुक्खमूलिको, आरञ्ञिको, सोसानिको। लोके विदितो लोकिको। चतुमहाराजेसु भत्ता चातुम्महाराजिका। द्वारे नियुत्तो दोवारिको दस्सोक तदमिनादिपाठा, भण्डागारिको, इको-नवकम्मिको, कियोजातिकियो, अन्धकियो।

३३. तस्सिदं।

छट्ठियन्ता इदमिच्चस्मिं अत्थे णिको होति, सङ्घस्स इदं सङ्घिकं, पुग्गलिकं, सक्यपुत्तिको, नातिपुत्तिको, जेनदत्तिको, किये-सकियो, परकियो, निये-अत्तनियं, के- सको राजकं भण्डं।

३४. णो।

छट्ठियन्ता इदमिच्चस्मिं अत्थे णो होति, कच्चायनस्स इदं कच्चायनं ब्याकरणं, सोगतं सासनं, माहिसं मंसादि।

३५. गवादीहि यो।

गवादीहि छट्ठियन्तेहि इदमिच्चस्मिं अत्थे यो होति, गुन्नं इदं गब्यं मंसादि, कब्यं, दब्बं।

३६. पितितो भातरि रेय्यण।

पितुसद्दा तस्स भातरि रेय्यण होति, पितु भाता पेत्तेय्यो।

३७. मातितो च भगिनियं छो।

मातितो पितितो च तेसं भगिनियं छो होति, मातु भगिनी मातुच्छा, पितु भगिनी पितुच्छा, कथं ‘मातुलो’ति “मातुलादित्वानी”ति निपातना।

३८. मातापितूस्वामहो।

मातापितूहि तेसं मातापितूसु आमहो होति, मातु माता मातामही, मातु पिता मातामहो, पितु माता पितामही, पितु पिता पितामहो, न यथासङ्ख्यं, पच्चेकाभि सम्बन्धा।

३९. हिते रेय्यण।

मातापितूहि हिते रेय्यण होति, मत्तेय्यो, पेत्तेय्यो।

४०. निन्दाञ्ञातप्पपटिभागरस्सदयासञ्ञासु को।

निन्दादीस्वत्थेयु नामस्मा को होति, निन्दायं-मुण्डको, समणको। अञ्ञाते-कस्सायं अस्सोति अस्सको, पयोगसामत्थिया सम्बन्धिविसेसानवगमोवगम्यते। अप्पत्थेतेलकं, घतकं। पटिभागत्थे-हत्थी विय हत्थिको, अस्सको, बलीबद्दको। रस्से-मानुसको, रुक्खको, पिलक्खको। दयायं-पुत्तको, वच्छको। सञ्ञायं-मोरो विय मोरको।

४१. तमस्सपरिमाणं णिको च।

पठमन्ता अस्सेति अस्मिं अत्थे णिको होति को च तञ्चे पठमन्तं परिमाणं भवति, परिमीयते नेनेति परिमाणं, दोणो परिमाणमस्स दोणिको वीहि, खारसतिको, खारसहस्सिको आसीतिको वयो, उपड्ढकायिकं बिम्बोहनं, पञ्चकं, छक्कं।

४२. यतेतेहि त्तको।

यादीहि पठमन्तेही अस्सेति छट्ठियत्थे त्तको होति, तञ्चे पठमन्तं परिमाणं भवति, यं परिमाणमस्स यत्तकं, तत्तकं, एत्तकं, आवतके यावतको, तावतको (एतावतको)।

४३. सब्बा चावन्तु।

सब्बतो पठमन्तेहि यादीहि च अस्सेति छट्ठियत्थे आवन्तु होति, तञ्चे पठमन्तं परिमाणं भवति। सब्बं परिमाणमस्स सब्बावन्तं, यावन्तं, तावन्तं, एतावन्तं।

४४. किम्हा रतिरीवरीवतकरित्तका।

किम्हा पठमन्ता अस्सेति छट्ठियत्थे रतिरीवरीवतकरित्तका होन्ति, तञ्चे पठमन्तं परिमाणं भवति, किं सङ्ख्यानं परिमाणमेसं कति एते, कीव, कीवतकं, कित्तकं। रीवन्तो सभावतो असङ्ख्यो।

४५. सञ्जातं तारकादित्वितो।

तारकादीहि पठमन्तेहि अस्सेति छट्ठियत्थे इतो होति, ते चे सञ्जाता होन्ति, तारका सञ्जाता अस्स तारकितं गगनं, पुप्फितो रुक्खो, पल्लविता लता।

४६. माने मत्तो।

पठमन्ता मानवुत्तितो अस्सेति अस्मिंअत्थे मत्तो होति, पलं उम्मानमस्स पलमत्तं, हत्थो पमाणमस्स हत्थमत्तं सतं मानमस्स सतमत्तं, दोणो परिमाणमस्स दोणमत्तं, अभेदोपचारा दोणोतिपि होति।

४७. तग्घो चुद्धं।

उद्धमानवुत्तिहो अस्सेति छट्ठियत्थे तग्घो होति मत्तो च, जण्णुतग्घं, जण्णुमत्तं।

४८. णो च पुरिसा।

पुरिसा पठमन्ता उद्धमानवुत्तितो णो होति मत्तादयो च, पोरिसं, पुरिसमत्तं, पुरिसतग्घं।

४९. अयूभद्वितीहंसे।

उभद्वितीहि अवयववुत्तीति पठमन्तेहि अस्सेति छट्ठियत्थे अयो होति। उभो अंसा अस्स उभयं, द्वयं, तयं।

५०. सङ्ख्याय सच्चुतीसासदसन्तायाधिकास्मिं सवसहस्से डो।

सत्यन्ताय उत्यन्ताय ईसन्ताय आसन्ताय दसन्ताय च सङ्ख्याय पठमन्ताय अस्मिन्ति सत्तम्यत्थे डो होति, सा चे सङ्ख्या अधिका होति, यदस्मिन्ति तञ्चे सतं सहस्सं सतसहस्सं वा होति, वीसति अधिका अस्मिं सतेति वीसं सतं, एकवीसं सतं, सहस्सं, सतसहस्सं वा, तिंसं सतं, एकतिंसं सतं। उत्यन्ताय-नवुतं सतं सहस्सं सतसहस्सं वा। ईसन्ताय चत्तालीसं सतं, सहस्सं, सतसहस्सं वा। आसन्ताय पञ्ञासं सतं, सहस्सं, सतसहस्सं वा। दसन्तायएकादसं सतं, सहस्सं, सतसहस्सं वा। सच्चुतीसासदसन्तायाति किं? छाधिका अस्मिंसते। अधिकेति किं? पञ्चदसहीना अस्मिंसते, अस्मिन्ति किं? वीसत्यधिका एतस्मा सता, सतसहस्सेति किं? एकादस अधिका अस्सं वीसतियं।

५१. तस्स पूरणेकादसादितो वा।

छट्ठियन्थायेकादसादिकाय सङ्ख्याय डो होति (तस्स) पूरणत्थे विभासा, सा सङ्ख्या पूरीयते येन तं पूरणं, एकादसन्नं पूरणो एकादसो। एकादसमो, वीसो, वीसतिमो, तिंसो, तिंसतिमो, चत्तालीसो, पञ्ञासो।

५२. म पञ्चादिकतिहि।

छट्ठियन्ताय पञ्चादिकाय सङ्ख्याय कतिस्मा च मो होति (तस्स) पूरणत्थे, पञ्चमो, सत्तमो, अट्ठमो, कतिमो, कतिमी।

५३. सतादीनमिच। सतादिकाय सङ्ख्याय छट्ठियन्ताय (तस्स) पूरणत्थे मोहोति सतादीनमिचान्तादेसो, सतिमो, सहस्सिमो।

५४. छा ट्ठट्ठमा।

छसद्दा ट्ठट्ठमा होन्ति तस्स पूरणत्थे, छट्ठो, छट्ठमो, इत्थियं छट्ठी, छट्ठमी, कथं 'दुतियं चतुत्थ'न्ति? ''दुतियस्स, चतुत्थ ततियान''न्ति निपातना।

५५. एका काक्यसहाये।

एकस्मा असहायत्थे कआकी होन्ति वा, एकको, एकाकी, एको।

५६. वच्छादीहि तनुत्ते तरो।

वच्छादीनं सभावस्स तनुत्ते गम्यमाने तरो होति, सुसुत्तस्स तनुत्ते वच्छतरो, इत्थियं वच्छतरी, योब्बनस्स तनुत्ते ओक्खतरो, अस्सभावस्स तनुत्ते अस्सतरो, सामत्थियस्स तनुत्ते उसभतरो।

५७. किम्हा निद्धारणे रतर रतमा। किंसद्दा निद्धारणे रतर रतमा होन्ति, कतरो भवतं देवदत्तो, कतरो भवतं कठो, कतमो भवतं देवदत्तो, कतमो भवतं कठो, भारद्वाजानं कतमोसि ब्रह्मे।

५८. तेन दत्ते लिया।

ततियन्ता दत्ते-भिधेय्ये लइया होन्ति, देवेन दत्तो देवलो, देवियो, ब्रह्मलो, ब्रह्मियो, सिवा सीवलो, सीवियो, सिस्स दीघो।

५९. तस्स भावकम्मेसु त्तताত्तनण्यणेय्यणियणिया।

छट्ठियन्ता भावे कम्मे च त्तादयो होन्ति बहुलं, न च सब्बे सब्बतो होन्ति अञ्ञत्र त्तताहि, भवन्ति एतस्मा बुद्धिसद्दाभि भावो सद्दस्स पवत्तिनिमित्तं, नीलस्स पटस्स भावो नीलत्तं नीलताभि गुणो भावो, नीलस्स गुणस्स भावो नीलत्तं नीलताभि नीलगुणजाति, गोत्तं गोताति गोजाति, पाचकत्तं, दण्डित्तं, विसाणित्तं, राजपुरिसत्तन्ति क्रियादिसम्बन्धित्तं, देवदत्तत्तं, चन्दत्तं, सूरियत्तन्ति तदवत्थाविसेससामञ्ञं, आकासत्तं, अभावत्तन्ति उपचरितभेदसामञ्ञं। त्तन-पुथुज्जनत्तनं, वेदनत्तनं, जायत्तनं, जारत्तनं। ण्य-आलस्यं, ब्रह्मञ्ञं, चापल्यं, नेपुञ्ञं, पेसुञ्ञं, रज्जं, आधिपच्चं, दायज्जं, वेसम्मं 'वेसम'न्ति, केचि, सख्यं, वाणिज्जं। णेय्य-सोचेय्यं, आधिपतेय्यं। णगारवं, पाटवं, अज्जवं, मद्दवं। इय-अधिपतियं, पण्डितियं, बहुस्सुतियं, नग्गियं, सूरियं। णिय-आलसियं, काळुसियं, मन्दियंदक्खियं, पोरोहितियं, वेय्यत्तियं। कथं 'रामणीयक'न्ति? सकत्थे कन्ता णेन सिद्धं। कम्मं किरिया, तत्थ अलससस्स कम्मं अलसत्तं' अलसता, अलसत्तनं, आलस्यं, आलसियं वा, ''सकत्थे' (४.१२२) ति सकत्थेपि, यथाभुच्चं, कारुञ्ञं, पत्तकल्लं, आकासानञ्चं, कायपागुञ्ञता।

६०. ब्य वद्धदासा वा।

छट्ठियन्ता वद्धा दासा च ब्यो वा होति भावकम्मेसु, वद्धब्यं वद्धता, दासब्यं दासता, कथं 'वद्धव'न्ति? णे वागमो।

६१. नण युवा बो च वस्स।

छट्ठियन्ता युवसद्दा भावकम्मेसु नण वा होति तस्स बो च, योब्बनं, वात्वेव? युवत्तं, युवता।

६२. अण्वादित्विमो।

अणुआदीहि छट्ठियन्तेहि भावे वा इमो होति, अणिमा, लघिमा, महिमा, (गरिमा), कसिमा, वात्वेव? अणुत्तं अणुता।

६३. भावा तेन निब्बत्ते।

भाववाचका सद्दा तेन निब्बत्ते-भिधेय्ये इमो होति, पाकेन निब्बत्त पाणिमं, सेकिमं।

६४. तरतमिस्सिकियिट्ठातिसये।

अतिसये वत्तमानतो होन्तेते पच्चया, अतिसयेन पापो पापतरो, पापतमो, पापिस्सिको, पापियो, पापिट्ठो, इत्थियं पापतरा। अतिसयन्तापि अतिसयप्पच्चयो, अतिसयेन पापिट्ठो पापिट्ठतरो।

६५. तन्निस्सिते ल्लो।

दुतियन्ता ल्लप्पच्चयो होति निस्सितत्थे, वेदं निस्सितं वेदल्लं, दुट्ठु निस्सितं दुट्ठुल्लं। इल्ले-सङ्खारिल्लं।

६६. तस्स विकारावयवेसु ण णिक णेय्यमया।

पकतिया उत्तरमवत्थन्तरं विकारो, छट्ठियन्ता नामस्मा विकारे-वयवे च णादयो होन्ति बहुलं, ण-आयसं बन्धनं, ओदुम्बरं, पण्णं, ओदुम्बरं भस्मं, कापोतं मंसं, कापोतं सत्थि। णिक-कप्पासिकं वत्थं। णेय्य-एणेय्यं मंसं, एणेय्यं सत्थि। कोसेय्यं वत्थं। मय-तिणमयं, दारुमयं, नळमयं, मत्तिकामयं। ''अञ्ञस्मि''न्ति (४.१२१) गुन्नं करीसेपि मयो, गोमयं।

६७. जतुतो सण वा।

छट्ठियन्ता नामस्मा जतुतो विकारावयवेसु सण वा होति। जतुनो विकारो जातुसं जतुमयं। ''लोपो''ति (४.१२३) बहुलं पच्चयलोपोपि फलपुप्फमूलेसु विकारावयवेसु, पियालस्स फलानि पियालानि, मल्लिकाय पुप्फानि मल्लिका, उसिरस्स मूलं उसीरं, तं सद्देन वा तदभिधानं।

६८. समूहे कण ण णिका।

छट्ठियन्ता समूहे कण ण णिका होन्ति गोत्तप्पच्चयन्ता। कण-राजञ्ञकं, मानुस्सकं, उक्खादीहि-ओक्खकं, ओट्ठकं, ओरब्भकं, राजकं, राजपुत्तकं, हत्थिकं, धेनुकं। ण-काकं, भिक्खं। अचित्ता णिक-आपूपिकं, संकुलिकं।

६९. जनादीहि ता।

जनादीहि छट्ठियन्तेहि समूहे ता होति। जनता, गजता, बन्धुता, गामता, सहायता, नागरता। तान्ता सभावतो इत्थिलिङ्गा, 'मदनीय'न्ति करणे-धिकरणे वा अनीयेन सिद्धं। 'धूमायितत्त'न्ति क्तान्ता नामधातुतो क्तेन सिद्धं।

७०. इयो हिते।

छट्ठियन्ता हिते इयो होति। उपादानियं, अञ्ञत्रापि समानोदरे सयितो सोदरियो।

७१. चक्ख्वादितो स्सो।

छट्ठियन्तेहि चक्खुआदीहि हिते स्सो होति, चक्खुस्सं, आयुस्सं।

७२. ण्यो तत्थ साधु।

सत्तम्यन्ता तत्थ साधूति अस्मिं अत्थे ण्यो होति। सब्भो, पारिसज्जो। साधूति कुसलो योग्गो हितो वा। अञ्ञत्रापि रथं वहतीति रच्छा।

७३. कम्मा निय ञ्ञा।

सत्तम्यन्ता कम्मसद्दा तत्थ साधूभि अस्मिं अत्थे निय ञ्ञा होन्ति। कम्मे साधु कम्मनियं, कम्मञ्ञं।

७४. कथादित्विको।

कथादीहि सत्तम्यन्तेहि तत्थ साधूति अस्मिं अत्थे इको होति। कथिको, धम्मकथिको, सङ्गामिको पवासिको, उपवासिको।

७५. पथादीहि णेय्यो।

पथादीहि सत्तम्यन्तेहि तत्थ साधूति अस्मिं अत्थे णे-य्यो होति, पाथेय्यं सापतेय्यं (आतिथेय्यं)।

७६. दक्खिणायारहे।

दक्खिणासद्दतो अरहत्थे णेय्यो होति, दक्खिणं अरहतीति दक्खिणेय्यो।

७७. रायो तुमन्ता।

तुमन्ततो अरहत्थे रायो होति। घातेतायं वा घातेतुं, जापेतायं वा जापेतुं, पब्बाजेतायं वा पब्बाजेतुं।

७८. तमेत्थस्सत्थीति मन्तु।

पठमन्ता एत्थ अस्स अत्थीति एतेस्वत्थेसु मन्तु होति। गावो एत्थ देसे, अस्स वा पुरिसस्स सन्तीति गोमा। अत्थीति वत्तमानकालोपादानतो भूताहि भविस्सन्तीहि वा गोहि न गोमा। कथं 'गोमा आसि, गोमा भविस्सती'ति? तदापि वत्तमानाहियेव गोहि गोमा, आसि भविस्सतीति पदन्तरा कालन्तरं, इतिकरणतो विसयनियमो –

पहूते च पसंसायं, निन्दायञ्चातिसायने।
निच्चयोगे च संसग्गे, होन्तिमे मन्तुआदयो॥

गो अस्सोति जातिसद्दानं दब्बाभिधानसामत्थिया मन्त्वादयो न होन्ति, तथा गुणसद्दानं 'सेतो पटो'ति, येसन्तु गुणसद्दानं दब्बाभिधानसामत्थियं नत्थि, तेहि होन्तेव 'बुद्धिमा, रूपवा, रसवा, गन्धवा, फस्सवा, सद्दवा, रसी, रसिको, रूपी, रूपिको, गन्धी, गन्धिको'ति।

७९. वन्त्वावण्णा।

पठमन्ततो अवण्णन्ता मन्त्वात्थे वन्तु होति। सीलवा, पञ्ञवा, अवण्णाति किं? सतिमा बन्धुमा।

८०. दण्डादित्विकई वा।

दण्डादीहि इक ई होन्ति वा मन्त्वात्थे। बहुलं विधाना कुतोचि द्वे होन्ति, कुतोचेकमेकंव दण्डिको दण्डी दण्डवा, गन्धिको गन्धी गन्धवा, रूपिको रूपी रूपवा। (२८) ''उत्तमीणेव धना इको'', धनिको, धनी धनवा अञ्ञो। (२९) ''असन्निहिते अत्था'', अत्थिको अत्थी, अञ्ञत्र अत्थवा। (३०) ''तदन्ता च'', पुञ्ञत्थिको, पुञ्ञत्थी, (३१) ''वण्णन्ता ईयेव'' ब्रह्मवण्णी, देववण्णी, (३२) ''हत्थदन्तेहि जातियं'', हत्थी, दन्ती, अञ्ञत्र हत्थवा दन्तवा। (३३) ''वण्णतो ब्रह्मचारिम्हि'', वण्णी ब्रह्मचारी, वण्णवा अञ्ञो। (३४) ''पोक्खरादितो देसे'', पोक्खरणी, उप्पलिनी, कुमुदिनी, भिसिनी, मुळालिनी, सालुकिनी, क्वचादेसेपि पदुमिपि पदुमिनी पण्णं। अञ्ञत्र पोक्खरवा हत्थी, (३५) ''नावायिको'', नाविको। (३६) ''सुखदुक्खा ई'', सुखी, दुक्खी। (३७) ''सिखादीहि वा'', सिखी, सिखावा, माली, मालावा, सीली, सीलवा, बली, बलवा। (३८) ''बला बाहूरुपुब्बा च'', बाहुबली, ऊरुबली।

८१. तपादीहि स्सी। तपादितो मन्त्वत्थे वा स्सी होति। तपस्सी, यसस्सी, तेजस्सी, मनस्सी, पयस्सी। वात्वेव? यसवा।

८२. मुखादितो रो। मुखादीहि मन्त्वत्थेरो होति। मुखरो, सुसिरो, ऊसरो, मधुरो, खरो, कुञ्जरो, नगरं, (३९) ''दन्तस्सु च उन्नभदन्ते'', दन्तुरो।

८३. तुन्द्यादीहि भो।

तुन्दिआदीहि मन्त्वत्थे भो वा होति। तुन्दिभो, वटिभो, वलिभो। वात्वेव? तुन्दिमा।

८४. सद्धादित्वा।

सद्धादीहि मन्त्वत्थेअ होति वा। सद्धो, पञ्ञो, इत्थियं सद्धा। वात्वेव? पञ्ञवा।

८५. णो तपा।

तपा णो होति मन्त्वत्थे। तापसो, इत्थियं तापसी।

८६. आल्वभिज्झादीहि।

अभिज्झादीहि आलु होति मन्त्वत्थे, अभिज्झालु, सीतालु, धजालु, दयालु। वात्वेव? दयावा।

८७. पिच्छादित्विलो।

पिच्छादीहि इलो होति वा मन्त्वत्थे। पिच्छिलो पिच्छवा, फेनिलो फेनवा, जटिलो जटावा। कथं 'वाचालो'ति? निन्दायमिलस्सादिलोपे ''परो क्वची''ति (१-२७)।

८८. सीलादितो वो।

सीलादीहि वो होति वा मन्त्वत्थे। सीलवो सीलवा, केसवो केसवा, (४०) ''अण्णा निच्चं'' अण्णवो। (४१) गाण्डी राजीहि सञ्ञायं'' गाण्डीवं धनु, राजीवं पङ्कजं।

८९. माया मेधाहि वी।

एतेहि द्वीहि वी होति मन्त्वत्थे। मायावी, मेधावी।

९०. सिस्सरे आम्युवामी। ससद्दा आम्युवामी होन्ति इस्सरे-भिधाय्ये मन्त्वत्थे। समस्सत्थीति सामी, सुवामी।

९१. लक्ख्या णो अ च। लक्खीसद्दा णो होति मन्त्वत्थे अ चान्तस्स। णकारोवयवो, लक्खणो।

९२. अङ्गा नो कल्याणे।

कल्याणे गम्यमाने अङ्गस्मा नो होति मन्त्वत्थे। अङ्गना।

९३. सो लोमा।

लोमा सो होति मन्त्वत्थे। लोमसो, इत्थियं, लोमसा।

९४. इमिया।

मन्त्वत्थे इम इया होन्ति बहुलं। पुत्तिमो, कित्तिमो, पुत्तियो, कप्पियो, जटियो, हानभागियो, सेनियो।

९५. तो पञ्चम्या। पञ्चम्यन्ता बहुलं तो होति वा। गामतो आगच्छति गामस्मा आगच्छति, चोरतो भायति चोरेहि भायति, सत्थतो परिहीनो सत्था परिहीनो।

९६. इतो-तेत्तो कुतो।

तोम्हि इमस्स टि निपच्चते, एतस्स ट एत, किंसद्दस्स कुत्तञ्च। इतो इमस्मा, अतो एत्तो एतस्मा, कुतो कस्मा।

९७. अभ्यादीहि। अभिआदीहि तो होति। अभितो, परितो, पच्छतो हेट्ठतो।

९८. आद्यादीहि। आदिप्पभुतीहि तो वा होति, आदो आदितो, मज्झतो अन्ततो, पिट्ठितो, पस्सतो, मुखतो, यतोदकं तदादित्तं, यं उदकं तदेवादित्तन्ति अत्थो।

९९. सब्बादितो सत्तम्या त्रत्था। सब्बादीहि सत्तम्यन्तेहि त्रत्था वा होन्ति। सब्बत्र सब्ब। सब्बस्मिं, यत्र यत्थ यस्मिं। बहुलाधिकारा न तुम्हाम्हेहि।

१००. कत्थेत्थ कुत्रात्र क्वेहिध।

एतेसद्दा निपच्चन्ते। कस्मिं कत्थ, कुत्र, क्व, एतस्मिं, एत्थ, अत्र, अस्मिं इह, इध।

१०१. धि सब्बा वा। सत्तम्यन्ततो सब्बस्मा धि वा होति। सब्बधि, सब्बत्थ।

१०२. या हिं। सत्तम्यन्ततो यतो हिं वा होति। यहिं यत्र।

१०३. ता हं च।

सत्तम्यन्ततो ततो वा हं होति हिं च। तहं, तहिं, तत्र।

१०४. कुहिं कहं।

किंसद्दा सत्तम्यन्ता हिं हं निपच्चन्ते किस्स कुका च। कुहिं, कहं। कथं 'कुहिञ्चन'न्ति? 'चनं' इति निपातन्तरं 'कुहिञ्ची'ति एत्थ चिसद्दो विय।

१०५. सब्बेकञ्ञयतेहि काले दा। एतेहि सत्तम्यन्तेहि काले दा होति। सब्बस्मिं काले सब्बदा, एकदा, अञ्ञदा, यदा, तदा। कालेति किं? सब्बत्थ देसे।

१०६. कदा कुदा सदा धुनेदानि।

एते सद्दा निपच्चन्ते। कस्मिं काले कदा, कुदा, सब्बस्मिं काले सदा, इमस्मिं काले अधुना, इदानि।

१०७. अज्ज सज्ज्वपरज्ज्वेतरहि करहा।

एतेसद्दा निपच्चन्ते। पकतिप्पच्चयो आदेसो कालविसेसोति सब्बमेतं निपातना लब्भति, इमस्स टो ज्जो जाहनि निपच्चते, अस्मिं अहनि अज्ज। समानस्स सभावो ज्जु चाहनि, समाने अहनि सज्जु। अपरस्मा ज्जु, अपरस्मिं अहनि अपरज्जु। इमस्सेतो काले रहि च, इमस्मिं काले एतरहि। किंसद्दस्स को रह चानज्जतने, कस्मिं काले करह।

१०८. सब्बादीहि पयारे था।

सामञ्ञस्स भेदको विसेसो पकारो, तत्थ वत्तमानेहि सब्बादीहि था होति। सब्बेन पकारेन सब्बथा, यथा, तथा।

१०९. कथमित्थं।

एते सद्दा निपच्चन्ते पकारे। किमिमेहि थं पच्चयो, कइत च तेसं यथाक्कमं, कथं, इत्थं।

११०. धा सङ्ख्याहि।

सङ्ख्यावाचीहि पकारे धा परा होति। द्वीहि पकारेहि, द्वे वा पकारे करोति द्विधा करोति, बहुधा करोति, एकं रासिं पञ्चप्पकारं करोति पञ्चधा करोति, पञ्चप्पकारमेकप्पकारं करोति एकधा करोति।

१११. वेका ज्झं।

एकस्मा पकरे ज्झं वा होति। एकज्झं करोति, एकधा, करोति।

११२. द्वितीहेधा।

द्वितीहि पकारे एधा वा होति। द्वेधा, तेधा, द्विधा, तिधा।

११३. तब्बति जातियो।

पकारवति तंसामञ्ञवाचका सद्दा जातियो होति, पटुजातियो, मुदुजातियो।

११४. वारसङ्ख्याय क्खत्तुं।

वारसम्बन्धिनिया सङ्ख्याय क्खत्तुं होति। द्वे वारे भुञ्जति द्विक्खत्तुं दिवसस्स भुञ्जति। वारग्गहणं किं? पञ्च भुञ्जति। सङ्ख्यायाति किं? पहूते वारे भुञ्जति।

११५. कतिम्हा।

वारसम्बन्धिनिया कतिसङ्ख्याय क्खत्तुं होति, कति वारे, भुञ्जथि, कतिक्खत्तुं भुञ्जति।

११६. बहुम्हा धा च पच्चासत्तियं।

वारसम्बन्धिनिया बहुसङ्ख्याय धा होति क्खत्थुं च, वारानञ्चे पच्चासत्ति होति, बहुधा दिवसस्स भुञ्जति बहुक्खत्तुं भुञ्जति। पच्चासत्तियन्ति किं? बहुवारे मासस्स भुञ्जति।

११७. सकिं वा।

एकं वारमिच्चस्मिं अत्थे सकिन्ति वा निपच्चते। एकवारं भुञ्जति सकिं भुञ्जति, वाति किं? एकक्खत्तुं भुञ्जति।

११८. सो वीच्छप्पकारेसु।

वीच्छायं पकारे च सो होति बहुलं। वीच्छायं-खण्डसो, बिलसो। पकारे-पुथुसो, सब्बसो।

११९. अभूततब्भावे करासभूयोगे विकारा ची।

अवत्थावतो-वत्थन्तरेनाभूतस्स तायावत्थाय भावेकरासभूहि सम्बन्धे सति विकारवाचका ची होति, अधवलं धवलं करोति धवली करोति, अधवलो धवलो सिया धवली सिया, अधवलो धवलो भवति धवली भवति। अभूत तब्भावेति किं? घटं करोति, दधि अत्थि, घटो भवति। करासभूयोगेति किं? अधवलोधवलो जायते। विकाराति किं? पकतिया माहोतु, सुवण्णं कुण्डलं करोति।

१२०. दिस्सन्तञ्ञेपि पच्चया।

वुत्ततो-ञ्ञेपि पच्चया दिस्सन्ति वुत्तावुत्तत्थेसु। विविधा मातरो विमातरो, तासं पुत्ता वेमातिका-रिकण। पथं गच्छतीति पथाविनो-आवी। इस्सा अस्स अत्थीति इस्सुकी-उकी। धुरं वहतीति धोरय्हो- य्हण।

१२१. अञ्ञस्मिं।

वुत्ततो-ञ्ञस्मिम्पि अत्थे वुत्तप्पच्चया दिस्सन्ति। मगधानं इस्सरो मागधो-धणा। कासीति सहस्सं, तमग्घतीति कासियो इयो।

१२२. सकत्थे।

सकत्थेपि पच्चया दिस्सन्ति। हीनको, पोतको, किच्चयं।

१२३. लोपो।

पच्चयानं लोपोपि दिस्सति। बुद्धे रतनं पणीतं, चक्खुं सुञ्ञं अत्तेन वा अत्तरियेन वाति भावप्पच्चयलोपो।

१२४. सरानमादिस्सायुवण्णस्साएओ णानुबन्धे।

सरानमादिभूता ये अकारिवण्णुवण्णा, तेसं आएओ होन्ति यथाक्कमंणानुबन्धे। राघवो, वेनतेय्यो, मेनिको,

ओळुम्पिको, दोभग्गं। णानुबन्धेति किं? पुरातनो।

१२५. संयोगे क्वचि।

सरानमादिभूता ये अयुवण्णा, तेसं आएओ होन्ति क्वचिदेव संयोगविसये णानुबन्धे। देच्चो, कोण्डञ्ञो। क्वचीति किं? कत्तिकेय्यो।

१२६. मज्झे।

मज्झे वत्तमानानम्पि अयुवण्णानं आ ए ओ होन्ति क्वचि। अड्ढतेय्यो, वासेट्ठो।

१२७. कोसज्जाज्जव पारिसज्ज सोहज्ज मद्दवारिस्सासभाजञ्ञथेय्य बाहुसच्चा।

एतेसद्दा निपच्चन्तेणानुबन्धे। कुसी तस्स भावोकोसज्जं, उजुनो भावो अज्जवं, परिसासु साधु पारिसज्जो, सुहदयोव सुहज्जो, तस्स पन भावो सोहज्जं, मुदुनो भावो मद्दवं, इसिनो इदं भावो वा आरिस्सं, उसभस्स इदं भावो वा आसभं, आजानीयस्स भावो सो एव वा आजञ्ञं, थेनस्स भावो कम्मं वा थेय्यं, बहुस्सतस्स भावो बाहुसच्चं, एतेसु यमलक्खणिकं, तं निपातना।

१२८. मनादीनं सक।

मनादीनं सक होति णानुबन्धे। मनसि भवं मानसं, दुम्मनसो भावो दोमनस्सं, सोमनस्सं।

१२९. उवण्णस्सावङ सरे।

सरादो णानुबन्धे उवण्णस्सावङ होति। राघवो, जम्बवं।

१३०. यम्हि गोस्स च।

यकारादो पच्चये गोस्सुवण्णस्स च अवङ होति। गब्यं, भातब्यो।

१३१. लोपो-वण्णिवण्णानं।

यकारादो पच्चये अवण्णिवण्णानं लोपो होति। दायज्जं, कारुञ्ञं, आधिपच्चं, देप्पं। बहुलंविधाना क्वचि न होति किच्चयं।

१३२. रानुबन्धे-न्त सरादिस्स।

अन्तो सरो आदिम्हि यस्सावयवस्स, तस्स लोपो होति रानुबन्धे। कित्तकं, पेत्तेय्यं।

१३३. किसमहतमिमे कस महा।

किसस्स महतो इमे कसमहा होन्ति यथाक्कमं, कसिमा, महिमा।

१३४. आयुस्सायस मन्तुम्हि।

आयुस्स आयसादेसो होति मन्तुम्हि। आयस्मा।

१३५. जो वुद्धस्सियिट्ठेसु।

वुद्धस्स जो होति इयइट्ठेसु, जेय्यो, जेट्ठो।

१३६. बाळ्हन्तिकपसत्थानं साध नेद सा।

इयइट्ठेसु बाळ्हन्तिकपसत्थानं साध नेद सा होन्ति यथाक्कमं। साधियो, साधिट्ठो, नेदियो, नेदिट्ठो, सेय्यो, सेट्ठो।

१३७. कणकनाप्पयुवानं।

इयइट्ठेसु अप्पयुवानं कण कना होन्ति यथाक्कमं। कणियो कणिट्ठो, कनियो कनिट्ठो।

१३८. लोपो वी मन्तु वन्तूनं।

वी मन्तु वन्तूनं लोपो होति इयइट्ठेसु। अतिसयेन मेधावी मेधियो, मेधिट्ठो, अतिसयेन सतिमा सतियो, सतिट्ठो, अतिसयेन गुणवा गुणियो, गुणिट्ठो।

१३९. डे सतिस्स तिस्स।

डेपरे सत्यन्तस्स तिकारस्स लोपो होति, वीसं सतं, तिंसं सतं।

१४०. एतस्सेट त्तके।

त्तके परे एतस्स एट होति। एत्तकं।

१४१. णिकस्सियो वा।

णिकस्स वा इयो होति, सक्यपुत्तियो, सक्यपुत्तिको।

१४२. अधातुस्स का-स्यादितो घे-स्सि।

घे परे अधातुस्स यो ककारो, ततो पुब्बस्स अकारस्स बहुलं इ होति सचे घो न स्यादितो परो होति। बालिका, कारिका, अधातुस्साति किं? सका, केति किं? नन्दना, अस्यादितोति किं? बहुपरिब्बाजका मथुरा, बहुचम्मिकाति ककारेन स्यादिनो ब्यवहितत्ता सिद्धं, घेति किं? बालको, अस्साति किं? बहुकत्तुका साला।

इति मोग्गल्लाने ब्याकरणे वुत्तियं

णादिकण्डो चतुत्थो।

५. पञ्चमो कण्डो (खादि)

१. तिज मानेहि ख सा खमा वीमंसासु।

खन्तियं तिजा वीमंसायं माना च खसप्पच्चया होन्ति यथाक्कमं, तितिक्खा, वीमंसा, तितिक्खति, वीमंसति। खमावीमंसा, सूति किं? तेजनं, तेजो, तेजयति, माननं, मानोमानेति।

२. किता तिकिच्छासंसयेसु छो।

तिकिच्छायं संसये च वत्तमाना किता छो होति। तिकिच्छा, विचिकिच्छा, तिकिच्छति, विचिकिच्छति। अञ्ञत्र निकेतो, संकेतो, केतनं, केतो, केतयति।

३. निन्दायं गुप बधा बस्स भो च।

निन्दायं वत्तमानेहि गुप बधेहि छो होति बस्स भो च। जिगुच्छा, बीभच्छा, जिगुच्छति, बीभच्छति, अञ्ञत्र गोपनं, गोपो, गोपेति, बधको।

४. तुंस्मा लोपो चिच्छायं ते।

तुमन्ततो इच्छायमत्थे ते खसछा होन्ति बहुलं, लोपो च तुंपच्चयस्स होति सुतत्ता, बुभुक्खा, जिगीसां, जिघच्छा, बुभुक्खति, जिगीसति जिघच्छति। इध कस्मा न होति 'भोत्तुमिच्छती'ति? पदन्तरेनाभिधाना। तुंस्माति किं? भोजनमिच्छति। इच्छायन्ति किं? भुञ्जितुं गच्छति। कथं 'कूलं विपति सती'ति? यथा कूलं पतितु मिच्छतीति वाक्यं होति, एवं वुत्तिपि होस्सति। वाक्यमेव चरहि कथं होति? लोकस्स तथा वचनिच्छाय।

५. ईयो कम्मा।

इच्छाकम्मतो इच्छायमत्थे ईयप्पच्चयो होति। पुत्तमिच्छति पुत्थीयति। कम्माति किं? असिनेच्छति। इध कस्मा न होति 'रञ्ञोपुत्तमिच्छती'ति? सापेक्खत्ता, न हि अञ्ञमपेक्खमानो अञ्ञेन सहेकत्थिभावमनुभवितुं सक्कोति। इधापि चरहि न सिया 'अत्तनो पुत्त मिच्छती'ति? नेवेत्थ भवितब्बं, न हि भवति 'अत्तनो पुत्तीयती'ति, कथं चरहि पुत्तस्स अत्तनियता-वगम्यते? अञ्ञस्सासुतत्ता इच्छाय च तब्बिसयत्ता।

६. उपमानाचारे।

कम्मतो उपमाना आचारत्थे ईयो होति। पुत्तमि-वा-चरति पुत्तीयति माणवकं, उपमानाति किं? पुत्तमाचरति।

७. आधारा।

आधारतू-पमाना आचारत्थे ईयो योति। कुटियमिवा-चरति कुटीयती पासादे, पासादीयति कुटियं भिक्खु।

८. कत्तुतायो।

कत्तुतू-पमाना आचारत्थे आयो होति। पब्बतो इवाचरति पब्बतायति।

९. य्चत्थे।

कत्तुतो अभूततब्भावे आयो होति बहुलं। भुसायति, पटपटायति, लोहितायति, कत्तुतोत्वेव? (अभुसं) भुसं करोतीहि, इह कस्मा न होति 'भुसी भवती'ति? वुत्तत्थताय।

१०. सद्दादीनि करोति।

सद्दादीहि दुतियन्तेहि करोतीति अस्मिं अत्थे आयो होति। सद्दायति, वेरायति, कलहायति, धूपायति।

११. नुमोत्व-स्सो।

नमोइच्चस्मा करोतीति अस्मिं अत्थे अस्सो होति। नमस्सति तथागतं।

१२. धात्वत्थे नामस्मि।

नामस्मा धात्वत्थे बहुलमिहोति। हत्थिना अतिक्कमति अतिहत्थयति, वीणाय उपगायति उपवीणयति, दळ्हं करोति विनयं दळ्हयति, विसुद्धा होति रत्ति विसुद्धयति, कुसलं पुच्छति कुसलयति।

१३. सच्चादीहापि।

सच्चादीहि धात्वत्थे आपि होति। सच्चापेति, अत्थापेति, वेदापेति, सुक्खापेति, सुखापेति, दुक्खापेति।

१४. क्रियत्था।

अयमधिकारो आसत्थपरिसमत्तिया। क्रिया अत्थो यस्स सो क्रियत्थो धातु।

१५. चुरादितो णि।

चुरादीहि क्रियत्थेहि सकत्थे णि परो होति बहुलं। णकारो वुद्ध्यत्थो, एवमञ्ञत्रापि, चोरयति, लाळयति, कथं 'रज्जं कारेती'ति? योगविभागतो।

१६. पयोजकब्यापारे णापि च।

कत्तारं यो पयोजयति, तस्स ब्यापारे क्रियत्था णिणापी होन्ति बहुलं, कारेति, कारापेति। ननु च कत्तापि करणादीनं पयोजकोति तंब्यापारेपि णिणापी पापुणन्ति? पयोजकग्गहणसामत्थिया न भविस्सन्ति चुरादीहि विसुं वचनसामत्थिया च। अतो भिय्यो णापियेव, णियेवुवण्णतो, द्वयमेवञ्ञेहि।

१७. क्यो भावकम्मेस्व-परोक्खेसु मान न्त त्यादीसु। भावकम्मविहितेसु परोक्खावज्जितेसु मानन्तत्यादीसु परेसु क्यो होति क्रियत्था। न्तग्गहणमुत्तरत्थं, ककारो अवुद्ध्यत्थो एवमुत्तरत्रापि। ठीयमानं, ठीयते, सूयमानं, सूयते, अपरोक्खेसु मानन्तत्यादीसूति किं? बभूव देवदत्तेन, बिभिद कुसुलो। भिज्जते कुसुलो सयमेवाति 'भिज्जते'ति सवना कम्मता-वगम्यते, 'सयमेवा'ति सवनतो कत्तुता, कत्तुतावचनिच्छायन्तु 'भिन्दति कुसुलो अत्तान'न्ति भवति, एवमञ्ञम्पि यथागममनुगन्तब्बं। 'अपरोक्खेसु मानन्तत्यादीसू'ति अयमधिकारो आ 'तनादित्वो'ति ५.२६। अपिच एते क्यादयो त्यादीसु परभूतेसु कत्तुकम्मभाव विहितेसु क्यलादीनं विधानतो तेस्वेव विञ्ञायन्तीति अकम्मकेहि धातूहि कत्तुभावेसु, सकम्मकेहि कत्तुकम्मेसु, कम्मावचनिच्छायं भावे च भवन्तीति वेदितब्बा। यस्स पन धातुस्स किरिया कम्ममपेक्खते, सो सकम्मको, यस्स तु किरिया कत्तुमत्तमपेक्खते, स्वाकम्मकोति ञातब्बं।

१८. कत्तरि लो।

क्रियत्थतो अपरोक्खेसु कत्तुविहितमान न्तत्यादीसु लो होति। लकारो, ''ञिलस्से''ति ५-१६३ विसेसनत्थो। पचमानो, पचन्तो, पचति।

१९. मं च रुधादीनं।

रुधादितो कत्तुविहितमानन्त त्यादीसु लो होति मं च अन्तसरा परो। मकारो-नुबन्धो, अकारो उच्चारणत्थो। रुन्धमानो, रुन्धन्तो, रुन्धति।

२०. णिणाप्यापीहि वा।

णिणाप्यापीहि कत्तुविहितमानन्त त्यादीसु लो होति विभासा, ओरयन्तो, चोरेन्तो, कारयन्तो, कारेन्तो, कारापयन्तो, कारापेन्तो, सच्चापयन्तो, सच्चापेन्तो, चोरयति, चोरेति, कारयति, कारेति, कारापयति, कारापेति, सच्चापयति, सच्चापेति। ववत्थितविभासत्थो-यं वासद्दो, तेन माने निच्चं, चोरयमानो, कारयमानो, कारापयमानो, सच्चापयमानो।

२१. दिवादीहि यक।

दिवादीहि लविसये यक होति। दिब्बन्तो, दिब्बति।

२२. तुदादीहि को।

तुदादीहि लविसये को होति। तुदमानो, तुदन्तो, तुदति।

२३. ज्यादीहि क्ना।

जिआदीहि लविसये क्ना होति। जिनन्तो, जिनाति। कथं ‘जयन्तो’ जयती, ति? भूवादिपाठा।

२४. क्यादीहि क्णा।

कीआदीहि लविसये क्णा होति। किणन्तो, किणाति।

२५. स्वादीहि क्णो।

सुआदीहि लविसये क्णो होति। सुणमानो, सुणन्तो, सुणोति। कथं सुणातीति? क्यादिपाठा।

२६. तनादित्वो।

तनादितो लविसये ओ होति। तनोति।

२७. भावकम्मेसु तब्बा-नीया।

तब्बअनीया क्रियत्था परे भावकम्मेसु बहुलं भवन्ति। कत्तब्बं, करणीयं, कत्तब्बो कटो, करणीयो। बहुलाधिकारा करणादीसुपि भवन्ति, सिनानीयं चुण्णं, दानीयो ब्राह्मणो, सम्मावत्तनीयो गुरु, पवचनीयो उपज्झायो, उपट्ठानीयो सिस्सो।

२८. घ्यण।

भावकम्मेसु क्रियत्था परो घ्यण होति बहुलं। वाक्यं, कारियं, चेय्यं, जेय्यं।

२९. आस्से च।

आतोघ्यण होति भावकम्मेसु, आस्स ए च। देय्यं।

३०. वदादीहि यो।

वदादीहि क्रियत्थेहि यो होति बहुलं भावकम्मेसु। वज्जं, मज्जं, गम्मं। (४२) “भुजान्ने”, भोज्जो ओदनो, भोज्जा यागु, भोग्गमञ्ञं।

३१. किच्च घच्च भच्च भब्ब लेय्या।

एते सद्दा यप्पच्चयन्ता निपच्चन्ते।

३२. गुहादीहि यक।

गुतादीहि क्रियत्तेहि भावकम्मेसु यक होति। गुय्हं, दुय्हं, सिस्सो। सिद्धा एवेते तब्बादयो पेसातिसग्गपत्तकालेसुपि गम्यमानेसु सामञ्ञेनविधानतो, त्वया खलु कटो कत्तब्बो, करणीयो, कारियो, किच्चो, एवं त्वया कटो कत्तब्बो, भोता कटो

कत्तब्बो, भोतो हि पत्तो कालो कटकरणे। एवं उद्धमोहुत्तिकेपि वत्तमानतो पेसादीसु सिद्धा एव। तथा अरहे कत्तरि सत्तिविसिट्ठे च पतीयमाने आवस्सकाधमीणताविसिट्ठे च भावादो सिद्धा, उद्धंमुहुत्ततो-भोता कटो कत्तब्बो, भोता रज्जं कत्तब्बं। भवं अरहो, भोता सारो वहितब्बो, भवं सक्को, भोता अवस्सं कटो कत्तब्बो, भोता निक्खो दातब्बो।

३३. कत्तरि ल्तुणका।

कत्तरि कारके क्रियत्था ल्तुणका होन्ति बहुलं। पठिता, पाठको। बहुलमित्वेव? पादेहि हरीयतीति पादहा-रको, गले चुप्पतेति गलेचोपको। सिद्धोव ल्तु, अरहे सीलसाधुधम्मेसु च सामञ्ञविहितत्ता, भवं खलु कञ्ञाय परिग्गहिता, भवमेतं अरहति। सीलादीसु-खल्वपि उपादाता कुमारके, गन्ता खेलं, मुण्डयितारो साविट्ठायना वधुं कतपरिग्गहं।

३४. आवी।

क्रियत्था आवी होति बहुलं कत्तरि। भयदस्सावी। अप्पविसयतञ्ञापनत्थं भिन्नयोगकरणं, सामञ्ञविहितत्ता सीला दीसु च होतेव।

३५. आसिंसायमको।

आसिंसायं गम्यमानायं क्रियत्था अको होति कत्तरि। जीवतूति जीवको, नन्दतूति नन्दको, भवतूति भवको।

३६. करा णनो।

करतो कत्तरि णनो होति। करोतीति कारणं, कत्तरीति किं? करणं।

३७. हातो वीहिकालेसु।

हातो वीहिस्मिं काले च णनो होति कत्तरि। हायना नाम विहयो, हायनो संवच्छरो, वीहिकालेसूति किं? हाता।

३८. विदा कू।

विदस्मा कू होति कत्तरि। विदू, लोकविदू।

३९. वितो ञातो।

विपुब्बा ञाइच्चस्मा कू होति कत्तरि। विञ्ञू। वितोति किं? पञ्ञा।

४०. कम्मा।

कम्मतो परा ञाइच्चस्मा कू होति कत्तरि। सब्बञ्ञू, कालञ्ञू।

४१. क्वचण।

कम्मतो परा क्रियत्था क्वचि अण होति कत्तरि। कुम्भकारो, सरलावो, मन्तज्झायो, बहुलाधिकारा इध न होति आदिच्चं पस्सति, हिमवन्तं सुणोति, गामं गच्छति। क्वचीति किं? कम्मकरो।

४२. गमा रू।

कम्मतो परा गमा रू होति कत्तरि। वेदगू पारगू।

४३. समानञ्ञ भवन्त यादितू-पमाना दिसा कम्मे रीरिक्खका।

समानादीहि यादीहि चोपमानेहि परा दिसा कम्मकारके रीरिक्खका होन्ति। समानो विय दिस्सतीति सदी सदिक्खो सदिसो। अञ्ञादी अञ्ञादिक्खो अञ्ञादिसो। भवादी भवादिक्खो भवादिसो। यादी यादिक्खो यादिसो। त्यादी त्यादिक्खो त्यादिसो। समानादीहीति किं? रुक्खो विय दिस्सति। उपमानाति किं? सो दिस्सति। कम्मेति किं? सो विय पस्सति। रकारा अन्तसरादिलोपत्था, ककारो एकाराभावत्थो।

४४. भावकारकेस्व-घण घका।

भावे कारके च क्रियत्था अ घण घ का होन्ति बहुलं। अ-पग्गहो, निग्गहो, करो, गरो, चयो, जयो, रवो, भवो, पचो, वचो, अन्नदो, पुरिन्ददो, ईसक्करो, दुक्करो, सुकरो। घण-भावे पाको, चागो, भावो, कारकेपि सञ्ञायं ताव पज्जतेनेनाति पादो, रुजतीति रोगो, विसतीति वेसो, सरति कालन्तरन्ति सारो थिरंसो, दरीयन्ते एतेहीति दारा, जीरयति एतेनाति जारो, असञ्ञायम्पि दायो दत्तो, लाभो लद्धो, घ-वको, निपको, क-पियो, खिपो, भुजो, आयुधं।

४५. दाधात्वि।

दाधाहि बहुलमि होति भावकारकेसु। आदि, निधि, वालमि।

४६. वमादीय्यथु।

वमादीहि भावकारकेस्वथु होति। वमथु, वेपथु, (अवथु, सयथु)।

४७. क्वि।

क्रियत्था क्वि होति बहुलं भावकारकेसु। ककारो कानुबन्धकारियत्थो, अभिभू, सयम्भू, भत्तग्गं, (दानग्गं) सलाकग्गं, सभा, पभा।

४८. अनो।

क्रियत्ता भावकारकेस्वनो होति। गमनं, दानं, सम्पदानं, अपादानं, अधिकरणं, चलनो, जलनो, कोधनो, कोपनो, मण्डनो, भूसनो।

४९. इत्थियमण त्ति क यक या च।

इत्थिलिङ्गे भावे कारके च क्रियत्था अआदयो होन्ति अनो च बहुलं। अ तितिक्खा, वीमंसा, जिगुच्छा, पिपासा, पुत्तिया ईहा भिक्खा, आपदा, मेधा, गोधा, णकारा, हारा, तारा, धारा, आरा, त्ति-इड्ढि, सिद्धि, भित्ति, भत्ति, तन्ति भूति, क-गुहा, रुजा, मुदा, यक-विज्जा, इज्जा, य-सेय्या, समज्जा, पब्बज्जा, परिचरिया, जागरिया, अनकारणा, हारणा, वेदना, वन्दना, उपासना।

५०. जाहाहि नि।

जाहाइच्चेतेहि नि होतित्थियं। जानि, हानि।

५१. करा रिरियो।

करतो रिरियो होतित्थियं। करणं किरिया। कथं 'क्रिया'ति? ''क्रियायं''ति निपातना।

५२. इकिती सरूपे।

क्रियत्थस्स सरूपे-भिधेय्ये क्रियत्था परे इकिती होन्ति, वचि, युधि, पचति, 'अकारो ककारो'ति आदीसु कारसद्देन समासो, यथा एवकारोति।

५३. सीलाभिक्खञ्ञा-वस्सकेसु णी।

क्रियत्था णी होति सीलादीसु पतीयमानेसु, उण्हभोजी, खीरपायी, अवस्सकारी, सतन्दायी।

५४. थावरित्तर भङ्गुर भिदुर भासुर भस्सरा।

एते सद्दा निपच्चन्ते सीले गम्यमाने।

५५. कत्तरि भूते क्तवन्तु क्तावी।

भूते-त्थे वत्तमानतो क्रियत्था क्तवन्तुक्तावी होन्ति कत्तरि। विजितवा, विजितावी, भूतेति अधिकारो याव ''आहारत्था''ति (५-६०)।

५६. क्तोभावकम्मेसु।

भावे कम्मे च भूते क्तो होति। आसितं भवता। कतो कटो भवता।

५७. कत्तरि चारम्भे।

क्रियारम्भे कत्तरि क्तो होति यथापत्तञ्च। पकतो भवं कटं, पकतो कटो भवता, पसुत्तो भवं, पसुत्तं भवता।

५८. ठा-स वस सिलिस सी रुह जर जनीहि।

ठादीहि कत्तरि क्तो होति यथापत्तञ्च। उपट्ठितो गुरुं भवं, उपट्ठितो गुरु भोता, उपासितो गुरुं भवं, उपासितो गुरु भोता, अनुवुसितो गुरुं भवं, अनुवुसितो गुरु भोता, आसिलिट्ठो गुरुं भवं, आसिलिट्ठो गुरु भोता, अधिस्सितो खटोपिकं भवं, अधिस्सिता खटोपिका भोता, आरळ्हो रुक्खं भवं, आरुळ्हो रुक्खो भोता, अनुजिण्णो वसलिं देवदत्तो, अनुजिण्णा वसली देवदत्तेन, अनुजातो माणवको माणविकं, अनुजाता माणविका माणवकेन।

५९. गमनत्थाकम्मकाधारे च।

गमनत्थतो अकम्मकतो च क्रियत्था आधारे क्तो होति कत्तरि च यथापत्तञ्च, इदमेसं यातं, इह ते याता, इह तेहि यातं, अयं तेहि यातो पथो, इदमेसमासितं, इह ते आसिता, इहतेहि आसितं, 'देवो चे वुट्ठो सम्पन्ना सालयो'ति कारणसामग्गीसम्पत्ति एत्थाभिमता।

६०. आहारत्था।

अज्झोहारत्था आधारे क्तो होति यथापत्तञ्च, इदमेसं भुत्तं, इदमेसं पीतं, इह तेहि भुत्तं, इह तेहि पीतं, ओदनो तेहि भुत्तो पीतमुदकं, अकत्तत्थो योगविभागो, कथं 'पीता गावो'ति? पीतमेसं विज्जतीति पीता, बाहुलका वा, 'पस्सिन्नो'ति या एत्थ भूतकालता, तत्र त्तो, एवं रञ्ञं मतो रञ्ञं इट्ठो, रञ्ञं बुद्धो, रञ्ञं पूजितो, एवं सीलितो, रक्खितो, खन्तो, आकुट्ठो, रुट्ठो, रुसितो, अभिब्याहटो, दयियो, हट्ठो, कन्ता, संयतो, अमतो, 'कट्ठ'न्ति भूततायमेव हेतुनो, फलं त्वत्र भावि।

६१. तुं ताये तवे भावे भविस्सति क्रियायं तदत्थाय।

भविस्सति अत्थे वत्तमानतो क्रियत्था भावे तुं ताये तवे होन्ति क्रियायं तदत्थायं पतीयमानायं। कातुं गच्छति, कत्ताये गच्छति, कातवे गच्छति, इच्छति भोत्तुं कामेति भोत्तुन्ति इमीनाव सिद्धं, पुनब्बिधाने त्विहापि सिया 'इच्छन्तो करोती'ति, एवं सक्कोति भोत्तुं, जानाति भोत्तुं, गिलायति भोत्तुं, घटते भोत्तुं, आरभते भोत्तुं, लभते भोत्तुं, पक्कमति भोत्तुं, उस्सहति भोत्तुं, अरहति भोत्तुं, अत्थि भोत्तुं, विज्जति भोत्तुं, वट्ट तिभोत्तुं, कप्पति भोत्तुन्ति। तथा पारयति भोत्तुं, पहु भोत्तुं, समत्थो भोत्तुं, परियत्तो भोत्तुं, अलं भोत्तुन्ति भवतिस्स सब्बत्थ सम्भवा। तथा कालो भोत्तुं। समयो भोतुं, वेला भोतुन्ति, यथा भोत्तुंमनो, सोत्तुं सोतो, दट्ठुं चक्खु, युज्झितुं धनु, वत्तुं जळो, गन्तुमनो, कत्तुमलसोति, उच्चारणन्तु वत्तायत्तं। भावेति किं? करिस्सामीति गच्छति, क्रियायन्ति किं? भिक्खिस्सं इच्चस्स जटा, तदत्थायन्ति किं? गच्छिस्सतो ते भविस्सति भत्तं भोजनाय।

६२. पटिसेधे-लंखलूनं तुन त्वान त्वा वा।

अलं खलुसद्दानं पटिसेधत्थानं पयोगे तुनादयो वा होन्ति भावे। अलं सोतुन, खलु सोतुन, अलं सुत्वान, धलु सुत्वान, अलं सुत्वा, खलु सुत्वा, अलं सुतेन, खलु सोतेन, अलं खलूनन्ति किं? मा होतु, पटिसेधेति किं? अलङ्कारो।

६३. पुब्बेककत्थुकानं।

एको कत्ता येसं ब्यापारानं, तेसु यो पुब्बो, तदत्थतो क्रियत्था तुनादयो होन्ति भावे, सोतुन याति, सुत्वान, सुत्वा वा, एककत्तुकानन्तिकिं? भुत्तस्मिं देवदत्ते यञ्ञदत्तो वजति, पुब्बाति किं? भुञ्जभि च पचति च। 'अप्पत्वा नदिं पब्बतो अतिक्कम्म पब्बतं नदी'ति भूधातुस्स सब्बत्थ सम्भवा एककत्तुकता पुब्बकालता च गम्यते। 'भुत्वा भुत्वा गच्छतीति' इमिनाव सिद्धं आभिक्खञ्ञन्तु द्विब्बचनावगम्यते। कथं 'जीवग्गाहं अगाहयि, कायप्पचालकं गच्छन्ती'ति आदि? घणन्तेन क्रियाविसेसनेन सिद्धं यथा 'ओदनपाकं सयती'ति।

६४. न्तो कत्थरि वत्तमाने।

वत्तमानत्थे वत्तमानतो क्रियत्ता न्तो हो ति कत्तरि, तिट्ठन्तो।

६५. मानो।

वत्तमानत्थे वत्तमानतो क्रियत्था मानो होति, कत्तरि। तिट्ठमानो।

६६. भावकम्मेसु।

वत्तमानत्थे वत्तमानतो क्रिंयत्था भावे कम्मेच मानो होति। ठीयमानं, पच्चमानो ओदनो।

६७. ते स्सपुब्बानागते।

अनागतत्थे वत्तमानतो क्रियत्था तेन्तमाना स्सपुब्बा होन्ति। ठस्सन्तो, ठस्समानो, ठीयिस्समानं, पच्चिस्समानो ओदनो।

६८. ण्वादयो।

क्रियत्था परे बहुलं ण्वादयो होन्ति। चारु, दारु।

६९. खछसान मेकस्सरोदि द्वे।

खछसप्पच्चयन्तानं क्रियत्थानं पठमेकस्सरं सद्दरूपं द्वे भवति। तितिक्खा, जिगुच्छा, वीमंसा।

७०. परोक्खायञ्च।

परोक्खायं पठमेकस्सरं सद्दरूपं द्वे भवति। जगाम, चकारो अनुत्तसमुच्चयत्थो, तेनञ्ञत्रापि यथागमं, जहाति, जहितब्बं, जहितुं, दद्दल्लति, चङ्कमति। 'लोलुपो, मोमूहोति ओत्तं तदमिनादिपाठा।

७१. आदिस्मा सरा।

आदिभूता सरा परमेकस्सरं द्वे होति, असिसिसति, आदिस्माति किं? जजगार, सराति किं? पपाच।

७२. न पुन।

यं द्विभूतं, न तं पुन द्वित्तमापज्जते, तितिक्खिसति, जिगुच्छिसति।

७३. यथिट्ठं स्यादिनो।

स्याद्यन्तस्स यथिट्ठमेकस्सरमादिभूतमञ्ञं वा यथागमं द्वित्तपज्जते, पुपुत्तीयिसति, पुतित्तीयिसति, पुत्तीयियिसति।

७४. रस्सो पुब्बस्स।

द्वित्ते पुब्बस्स सरो रस्सो होति। ददाति।

७५. लोपो-नादिब्यञ्जनस्स।

द्वित्ते पुब्बस्सादितो-ञ्ञस्स ब्यञ्जनस्स लोपो होति। असिसिसति।

७६. खछसेस्वस्सि।

द्वित्ते पुब्बस्स अस्स इ होति खछसेसु। पिपासति, जिघंसति, खछसेसूति किं? जहाति, अस्साति किं? बुभुक्खति।

७७. गुपिस्सुस्स।

द्वित्ते पुब्बस्स गुपिस्स उस्स इ होति खछसेसु, जिगुच्छति।

७८. चतुत्थदुतियानं ततियपठमा।

द्वित्ते पुबेसं चतुत्थदुतियानं ततियपठमा होन्ति। बुभुक्खति, चिच्छेद।

७९. कवग्गहानं चवग्गजा।

द्वित्ते पुब्बेसं कवग्गहानं चवग्गजा होन्ति यथाक्कमं। चुकोप, जहाति।

८०. मानस्स वी परस्स च मं।

द्वित्ते पुब्बस्स मानस्स वी होति परस्स च मं, वीमंसति।

८१. कितस्सासंसये ति वा।

संसयसो-ञ्ञस्मिं वत्तमानस्स द्वित्ते पुब्बस्स कितस्स वा ति होति। तिकिच्छति, चिकिच्छति, असंसयेति किं? विचिकिच्छति।

८२. युवण्णानमेओ पच्चये।

इवण्णुवण्णन्तानं क्रियत्थानं एओहोन्ति यथाक्कमं पच्चये। चेतब्बं, नेतब्बं, सोतब्बं, भवितब्बं।

८३. लहुस्सुपन्तस्स।

लहुभूतस्स उपन्तस्स युवण्णस्स एओ होन्ति यथाक्कमं। एसितब्बं, कोसितब्बं, लहुस्साति किं? धूपिता, उपन्तस्साति किं? रुन्धति।

८४. अस्सा णानुबन्धे।

णकारानुबन्धे पच्चये परे उपन्तस्स अकारस्स आ होति। कारको।

८५. न ते कानुबन्धनागमेसु।

ते एओआ कानुबन्धे नागमे च न होन्ति। चितो, सुतो, दिट्ठो, पुट्ठो, नागमे 'वना'दिना (१.४५) चिनितब्बं, चिनितुं, सुणितब्बं, सुणितुं पापुणितब्बं, पापुणितुं, धुनितब्बं, धुनितुं, धुननं, धुनयितब्बं, धुनापेतब्बं, धुनयितुं धुनापेतुं, धुनयनं, धुनापनं, धुनयति, धुनापेति, पीनेतब्बं, पीनयितुं, पीननं, पीनितुं, पीनयति, सुनोति, सिनोति, दुनोति, हिनोति, पहिणिथब्बं, पहिणितुं, पहिणनं।

८६. वा क्वचि।

ते क्वचि वा न होन्ति कानुबन्धनागमेसु। मुदितो, रुदितं, रोदितं।

८७. अञ्ञत्रापि।

कानुबन्धनागमतो-ञ्ञस्मिम्पि ते क्वचि, नु होन्ति। खिपको, पनूदनं, वधको।

८८. प्ये सिस्सा।

सिस्स आ होति प्यादेसे, निस्साय।

८९. एओनमयवा सरे।

सरे परे एओनं अयअवा होन्ति। जयो, भवो, सरति किं? जेति, अनुभोति।

९०. आयावा णानुबन्धे।

एओनं आयावा होन्ति सरादो णानुबन्धे। नाययति, भावयति, 'सयापेत्वा'तिआदीसु रस्सत्तं।

९१. आस्साणापिम्हि युक।

आकारन्तस्स क्रियत्थस्स युक होति णापितो-ञ्ञस्मिं णानुबन्धे। दायको, णानुबन्धेत्वेव? दानं, अणापिम्हीति किं? दापयति।

९२. पदादीनं क्वचि।

पदादीनं युक होति क्वचि। निपज्जितब्बं, निपज्जितुं निपज्जनं, पमज्जितब्बं, पमज्जितुं, पमज्जनं, क्वचीति किं? पादो।

९३. मं वा रुधादीनं।

रुधादीनं क्वचि मं वा होति। रुन्धितुं, रुज्झितुं, क्वचित्वेव? निरोधो।

९४. क्विम्हि लोपो-न्तब्यञ्जनस्स।

अन्तब्यञ्जनस्स लोपो होति क्विम्हि। भत्तं गसन्ति गण्हन्ति वा एत्थाति भत्तग्गं।

९५. पररूपमयकारे ब्यञ्जने।

क्रियत्थानमन्तब्यञ्जनस्स पररूपं होति यकारतो-ञ्ञस्मिं ब्यञ्जने। भेत्तब्बं, ब्यञ्जनेति किं? भिन्दितब्बं, अयकारेति किं? भिज्जति।

९६. मनानं निग्गहीतं।

मकारनकारन्तानं क्रियत्थानं निग्गहीतं होति अयकारे ब्यञ्जने। गन्तब्बं, जङ्घा, ब्यञ्जनेत्वेव? गमनं, अयकारेत्वेव? गम्यते।

९७. न ब्रूस्सो।

ब्रूस्स ओ न होति ब्यञ्जने। ब्रूमि, ब्यञ्जनेत्वेव? अब्रवि।

९८. कगा चजानं घानुबन्धे।

घानुबन्धे चकारजकारन्तानं क्रियत्थानं कगा होन्ति यथाक्कमं। वाक्यं, भाग्यं।

९९. हनस्स घातो णानुबन्धे।

हनस्स घातो होति णानुबन्धे। आघातो।

१००. क्विम्हि घो परिपच्च-समोहि।

पय्यादीहि परस्स हनस्स घो होति क्विम्हि। पलिघो, पटिघो, अघं रस्सत्तं निपातना, सङ्घो, ओघो।

१०१. परस्स घं से।

द्वित्ते परस्स हनस्स घं होति से। जिघंसा।

१०२. जिहरानं गी।

द्वित्ते परेसं जितरानं गी होति से। विजिगीसा, जिगीसा।

१०३. धास्स हो।

द्वित्ते परस्स धास्स ह होति। दहति।

१०४. णिम्हि दीघो दुसस्स।

दुसस्स दीघो होति णिम्हि। दुसितो। णिम्हीति किं? दुट्ठो।

१०५. गुहिस्स सरे।

गुहिस्स दीघो होति सरे। निगूहनं सरेति किं? गुय्हं।

१०६. मुहबहानञ्च ते कानुबन्धे-त्वे।

मुहबहानं गुहिस्स च दीघो होति तकारादो कानुबन्धे त्वानत्वावज्जिते, मूळ्हो, बाळ्हो, गूळ्हो, तेति किं? मुय्हति, कानुबन्धेति-किं? मुय्हितब्बं, अत्वेति किं? मुय्हित्वान, मुय्हित्वा, 'ते कानुबन्धे-त्वे'ति अयमधिकारो याव ''सासस्स सिस्वे''ति -११७।

१०७. वहस्सुस्स।

वहस्स उस्स दीघो होति ते कानुबन्धे त्वानत्वावज्जिते। वुट्ठो।

१०८. धास्स हि।

धा=धारणेतीमस्स हि होति ते कानुबन्धे त्वानत्वावज्जिते। निहितो, निहितवा।

१०९. गमादिरानं लोपो-न्तस्स।

गमादीनं रकारन्तानं च अन्तस्स लोपो होति ते कानुबन्धे त्वानत्वावज्जिते। गतो, खतो, हतो, मतो, ततो, सञ्ञतो, रतो, कतो, तेत्वेव? गम्यते, कानुबन्धेत्वेव? गन्तब्बं, अत्वेत्वेव? गन्त्वान, गन्त्वा।

११०. वचादीनं वस्सुट वा।

वचादीनं वस्स वा उट होति कानुबन्धे-त्वे। उत्तं, वुत्तं, उट्ठं, वुट्ठं, 'अत्वेत्वेव? वत्वान, वत्वा।

१११. अस्सु।

वचादीनमस्स उ होति कानुबन्धे-स्वे। वुत्तं, वुट्ठं।

११२. वड्ढस्स वा।

वड्ढस्स अस्स वा उ होति कानुबन्धे त्वे। वुड्ढो। वड्ढो। अत्वेत्वेव? वड्ढित्वान, वड्ढित्वा, कथं 'वुत्ती'ति? ''वुत्तीमत्ते''ति ३-६९. निपातना, 'वत्ती'ति होतेव यथालक्खणं।

११३. यजस्स यस्स टियी।

यजस्स यस्स टियी होन्ति कानुबन्धे-त्वे। इट्ठं, यिट्ठं, अत्वेत्वेव? यजित्वान, यजित्वा।

११४. ठास्सि।

ठास्सि होति कानुबन्धे-त्वे। ठितो, अत्वेत्वेव? ठत्वान, ठत्वा।

११५. गापानमी।

गापानमी होति कानबन्धे-त्वे। गीतं, पीतं, अत्वेत्वेव? गायित्वा निच्चं यागमो, पास्स तु पीत्वाति बहुलाधिकारा।

११६. जनिस्सा।

जनिस्स आ होति कानुबन्धे-त्वे। जातो। अत्वेत्वेव? जनित्वा।

११७. सासस्स सिस वा।

सासस्स सिस वा होति कानुबन्धे-त्वे। सिट्ठं, सत्थं, सिस्सो, सासियो अत्वेत्वेव? अनुसासित्वान।

११८. करस्सा तवे।

करस्स आ होति तवे। कातवे।

११९. तुंतुनतब्बेसु वा।

तुमादीसु वा करस्सा होति। कातुं कत्तुं, कातुन कत्तुन, कातब्बं कत्तब्बं।

१२०. ञास्स ने जा।

ञाधातुस्स जा होति नकारे। जानितुं, जानन्तो, नेति किं? ञातो।

१२१. सकापानं कुककू णे।

सकआपानं कुककुइच्चेते आगमा होन्ति णकारे। सक्कुणन्तो, पापुणन्तो, सक्कुणोति, पापुणोति, णेति किं? सक्कोति, पापेति।

१२२. नितो चिस्स छो।

निस्मा परस्स चिस्स छो होति। निच्छयो।

१२३. जरसदानमीम वा।

जरसदानमन्तसरा परो ईम होति विभासा। जीरणं, जीरति, जीरापेति, निसीदितब्बं, निसीदनं, निसीदितुं, निसीदति, वाति किं? जरा, निसज्जा, 'ईम वा'ति योगविभागा अञ्ञेसम्पि, अहीरथ, संयोगादि लोपोत्थस्स।

१२४. दिसस्स पस्स दस्स दस द दक्खा।

दिसस्स पस्सादयो होन्ति विभासा। विपस्सना, विपस्सितुं, विपस्सति, सुदस्सी, पियदस्सी, धम्मदस्सी, सुदस्सं, दस्सनं, दस्सेति, दट्ठब्बं। दट्ठा, दट्ठुं, दुद्दसो, अद्दस, अद्दा, अद्दं, अद्दक्खि, दक्खिस्सति, वात्वेव? दिस्सन्ति बाला।

१२५. समाना रो रीरिक्खकेसु।

समानसद्दतो परस्स दिसस्स र होति वा रीविक्खकेसु। सरी, सदी, सरिक्खो, सदिक्खो, सरिसो, सदिसो।

१२६. दहस्स दस्स डो।

दहस्स दस्स डो होति वा। डाहो, दाहो, डहति, दहति।

१२७. अनघण स्वापरीहि ळो।

आपरीहि परस्स दहस्स दस्स ळो होति अनघणसु। आळहनं, परिळाहो।

१२८. अत्यादिन्तेस्वत्थिस्स भू।

त्यादिन्तवज्जितेसु पच्चयेसु 'अस=भुवि'इच्चस्स भू होति। भवितब्बं। आदेसविधानमसस्साप्पयोगत्थमेतस्मिं विसये, एतेन कत्थचि कस्सचि धातुस्स अप्पयोगापि ञापितो होति। अत्यादिन्तेसूति किं? अत्थि, सन्तो, अत्थिस्साति किं? अस्सतिस्स मा होतु।

१२९. अआस्साआदीसु।

अआदो, आआदो, स्सादो च अत्थिस्स भू होति। बभूव, अभवा, अभविस्सा, भविस्सति।

१३०. न्तमानन्तियियुंस्वादिलोपो। न्तादिसूत्थिस्सादिलोपो होति। सन्तो, समानो, सन्ति, सन्तु, सिया, सियुं, एतेस्वीति किं? अत्थि।

१३१. पादितो ठास्स वा ठहो क्वचि।

पादीहि किरियाविसेसजोतकेहि सद्देहि परस्स ठास्स क्वचि ठहो वा होति। सण्ठहन्तो सन्तिट्ठन्तो। सण्ठहति, सन्तिट्ठति। प परा अप सं अनु अव ओ नि दु वि अधि अपि अतिसु उ अभि पति परि उप आ पादी। क्वचीति किं? सण्ठिति।

१३२. दास्सियङ।

पादितो परस्स दास्स इयङ होति क्वचि। अनादियित्वा, समादियति, क्वचित्वेव? आदाय।

१३३. करोतिस्स खो।

पादितो परस्स करस्स क्वचि ख होति। सङ्खारो, सङ्खरीयति, करस्साति अवत्वा करोतिस्साति वचनं तिम्हि च विकरणुप्पत्तिञापेतुं।

१३४. पुरास्मा।

पुरा इच्चस्मा निपाता परस्स करस्स ख होति। पुरक्खत्वा, पुरेक्खारो-एत्तं तदमिनादिपाठा।

१३५. नितो कमस्स।

निस्मा परस्स कमस्स क्वचि ख होति, निक्खमति, क्वचित्वेव? निक्कमो।

१३६. युवण्णानमियङुवङ सरे।

इवण्णुवण्णत्तानं क्रियत्थानमियङुवङ होति सरे क्वचि। वेदियति, ब्रुवन्ति, सरेति किं? निवेदेति, ब्रूति, क्वचित्वेव? जयति, भवति।

१३७. अञ्ञादिस्सास्सी क्ये।

ञादितो-ञ्ञस्स आकारन्तस्स क्रियत्थस्स ई होति क्ये। दीयति, अञ्ञादिस्साति किं? ञायति, तायतिं।

१३८. तनस्सा वा।

तनस्स आ होति वा क्ये। तायते, तञ्ञते।

१३९. दीघो सरस्स।

सरन्तस्स क्रियत्थस्स दीघो होति क्ये, चीयते, सूयते।

१४०. सानन्तरस्स तस्स ठो।

सकारन्ततो क्रियत्था परस्सा-नन्तरस्स तकारस्स ठ होति। तुट्ठो, तुट्ठवा, तुट्ठब्बं, तुट्ठि, अनन्तरस्साति किं? तुस्सित्वा।

१४१. कसस्सिम च वा।

कसस्मा परस्सानन्तरस्स तस्स ठ होति कसस्स वा इम च। किट्ठं, कट्ठं, अनन्तरस्सात्वेव? कसितब्बं।

१४२. धस्तोत्रस्ता।

एते सद्दा निपच्चन्ते।

१४३. पुच्छादितो।

पुच्छादीहि क्रियत्थेहि परस्सानन्तरस्स तकारस्स ठ होति। पुट्ठो, भट्ठो, यिट्ठो, अनन्तरस्सात्वेव? पुच्छित्वा।

१४४. सास वस संस ससा थो।

एतेहि परस्सानन्तरस्स तस्स थ होति, सत्थं, वत्थं, पसत्थं, सत्थं। कथमनुसिट्ठो (वुट्ठो) ति? ‘तथनरानं टठणला’ १-५२ ति ट्ठो, अनन्तरस्सात्वेव? सासितुं।

१४५. धो धहभेहि।

धकारहकारभकारन्तेहि क्रियत्थेहि परस्सानन्तरस्स तस्स ध होति। वुद्धो, दुद्धं, लद्धं।

१४६. दहा ढो।

दहा परस्सानन्तरस्स तस्स ढ होति। दड्ढो।

१४७. बहस्सुम च।

बहा परस्सानन्तरस्स तस्स ढो होति, बहस्सुम च ढसन्नियोगेन। बुड्ढो।

१४८. रुहादीहि हो ळ च।

रहादीहि परस्सानन्तरस्स तस्स ह होति ळो चान्तस्स। आरुळ्हो, गूळ्हो, वूळ्हो, बाळ्हो, (ओगाळ्हो), अनन्तरस्सात्वेव? आरोहितुं।

१४९. मुहा वा।

मुहा परस्सानन्तरस्स तस्स ह होति वा ळो चान्तस्स हसन्नियोगेन। मूळ्हो, मुद्धो।

१५०. भिदादितो नो क्तक्तवन्तूनं।

भिदादितो परेसं क्तक्तवन्तूनं तस्स नो होति। भिन्नो भिन्नवा, छिन्नो छिन्नवा, छन्नो छन्नवा, छिन्नो खिन्नवा, उप्पन्नो उप्पन्नवा, सिन्नो, सिन्नवा, सन्नो सन्नवा, पीनो पीनवा, सूनो सूनवा, दीनो दीनवा, डीनो डीनवा, लीनो लीनवा, लूनो लूनवा, क्तक्तवन्तूनन्ति किं? भित्ति, छित्ति, भेत्तुं, छेत्तुं।

१५१. दात्विन्नो।

दातो परेसं क्तक्तवन्तूनं तस्स इन्नो होति। दिन्नो, दिन्नवा।

१५२. किरादीहि णो।

किरादीहि परेसं क्तक्तवन्तूनं तस्सानन्तरस्स ण होति, किण्णो किण्णवा, पुण्णो पुण्णवा, खीणो खीणवा।

१५३. तरादीहि रिण्णो।

तरादीहि परेसं क्तक्तवन्तूनं तस्स रिण्णो होति। तिण्णो तिण्णवा, जिण्णो जिण्णवा, चिण्णो चिण्णवा।

१५४. गो सन्जादीहि।

भन्जादीहि परेसं क्तक्तवन्तूनं तस्सानन्तरस्स ग होति। भग्गो भग्गवा, लग्गो लग्गवा, निमुग्गो निमुग्गवा, संविग्गो संविग्गवा।

१५५. सुसा खो।

सुसा परेसं क्तक्तवन्तूनं तस्स खो होति। सुक्खो सुक्खवा।

१५६. पचा को।

पचा परेसं क्तक्तवन्तूनं तस्स को होति। पक्को पक्कवा।

१५७. मुचा वा।

मुचा परेसं क्तक्तवन्तूनं तस्स को वा होति। मुक्को मुत्तो, मुक्कवा मुत्तवा। 'सक्को'ति ण्वादीसु सिद्धं, क्तक्तवन्तूसु सत्तो, सत्तावात्वेव होति।

१५८. लोपो वड्ढा क्तिस्स।

वड्ढा परस्स क्तिस्स तस्स लोपो होति। वड्ढि।

१५९. क्विस्स।

क्रियत्था परस्स क्विस्स लोपो होति, अभिभू।

१६०. णिणापीनं तेसु।

णिणापीनं लोपो होति तेसु णिणापीसु। कारेन्तं पयोजयति कारेति कारापयति।

१६१. क्वचि विकरणानं।

विकरणानं क्वचि लोपो होति। उदपादि, हन्ति।

१६२. मानस्स मस्स।

क्रियत्था परस्स मानस्स मकारस्स लोपो होति क्वचि। कराणो, क्वचीति किं? कुरुमानो।

१६३. ऊलस्से।

ञिलानमे होति क्वचि। गहेत्वा, अदेन्ति, क्वचित्वेव? वपित्वा।

१६४. प्यो वा त्वास्स समासे।

त्वास्स वा प्यो होति समासे। पकारो ''प्ये सिस्सा'' ति ५-८८ विसेसनत्थो। अभिभूय, अभिभवित्वा, समासेति किं? पत्वा, क्वचासमासेपि बहुलाधिकारा 'लतं दन्तेहि छिन्दिय'।

१६५. तुंयाना।

क्त्वास्स वा तुंयाना होन्ति समासे क्वच्चि। अभिहट्टुं अभिहरित्वा, अनुमोदियान अनुमोदित्वा, असमासेपि बहुलाधिकारा, दट्ठुं दिस्वा, एसमप्पविसयताञापनत्थो योगविभागो।

१६६. हना रच्चो।

हनस्मा परस्स क्त्वास्स रच्चो वा होति समासे। आहच्च, आहनित्वा।

१६७. सासाधिकरा चचरिच्चा।

सासाधीहि परा करा परस्स क्त्वस्स चचरिच्चा होन्ति यथाक्कमं। सक्कच्च सक्करित्वा, असक्कच्च असक्करित्वा, अधिकिच्च अधिकरित्वा।

१६८. इतो च्चो।

इइच्चस्मा परस्स क्त्वास्स च्चो वा होति। अधिच्च अधीयित्वा, समेच्च समेत्वा।

१६९. दिसा वानवा स च।

दिसतो क्त्वास्स वानवा होन्ति वा दिसस्स च स कारो तंसन्नियोगेन। सस्स सविधानं पररूपबाधनत्थं। दिस्वान, दिस्वा पस्सित्वा, कथं 'नादट्ठा परतो दोस'न्ति? ञापका त्वास्स वलोपो, एवं 'लद्धा धन'न्ति आदीसु।

१७०. ञि ब्यञ्जनस्स।

क्रियत्था परस्स ब्यञ्जनादिप्पच्चयस्स ञि वा होति। भुञ्जितुं भोत्तुं, ब्यञ्जनस्साति किं? पाचको।

१७१. रा नस्स णो।

रन्ततो क्रियत्था परस्स पच्चयनकारस्स णो होति। अरणं, सरणं।

१७२. न न्तमानत्यादीनं।

रन्ततो परेसं न्तमानत्यादीनं नस्स णो न होति, करोन्तो, कुरुमानो, करोन्ति।

१७३. गमयमिसासदिसानं वा च्छङ।

एतेसं वा च्छङ होति न्तमानत्यादीसु। गच्छन्तो गच्छमानो गच्छति, यच्छन्नो यच्छमानो यच्छति, इच्छन्तो इच्छमानो इच्छति अच्छन्तो अच्छमानो अच्छति, दिच्छन्तो दिच्छमानो दिच्छति, वाति किं? गमिस्सति, ववत्थितविभासा-यं, तेनाञ्ञेसु च क्वचि-इच्छितब्बं इच्छा इच्छितुं, अच्छितब्बं अच्छतुं, अञ्ञेसञ्च योगविभागा-पवेच्छति।

१७४. जरमरानमीयङ।

एतेसमीयङ वा होति न्तमानत्यादीसु। जीयन्तो जीरन्तो, जीयमानो जीरमानो, जीयति जीरति, मीयन्तो मरन्तो, मीयमानो मरमानो, मीयति मरति।

१७५. ठापानं तिट्ठ पिवा।

ठापानं तिट्ठपिवा होन्ति न्तमानत्यादीसु। तिट्ठन्तो, तिट्ठमानो, तिट्ठति, पिवन्तो, पिवमानो, पिवति, वात्वेवि? ठाति, पाति।

१७६. गमवददानं घम्मवज्जदज्जा।

गमादीनं घम्मादयो वा होन्ति न्तमानत्यादीसु। घम्मन्तो, गच्छन्तो, वज्जन्तो वदन्तो, दज्जन्तो ददन्तो।

१७७. करस्स सोस्स कुब्बकुरुकयिरा।

करस्स सओकारस्स कुब्बादयो वा होन्ति न्तमानत्यादीसु। कुब्बन्तो कयिरन्तो करोन्तो, कुब्बमानो कुरुमानो कयिरमानो, कराणो, कुब्बति कयिरति करोति, कुब्बते कुरुते, कयिरते, ववत्थितविभासत्ता वाधिकारस्स भिय्यो मानपरच्छक्केसु कुरु, क्वचिदेव पुब्बछक्के 'अग्घं कुरुतु, नो भवं, सोस्साति वुत्तत्ता कत्तरियेविमे।

१७८. गहस्स घेप्पो।

गहस्स वा घेप्पो होति न्तमानत्यादीसु। घेप्पन्तो, घेप्पमानो, घेप्पति, वात्वेव? गण्हति।

१७९. णो निग्गहीतस्स।

गहस्स निग्गहीतस्स णो होति। गण्हितब्बं, गण्हितुं, गण्हन्तो।

इतिमोग्गल्लाने ब्याकरणे वुत्तियं

खादिकण्डो पञ्चमो।

६. छट्ठो कण्डो (त्यादि)

१. वत्तमाने ति अन्ति सि थ मि म ते अन्ते से व्हे ए म्हे।

वत्तमाने आरद्धापरिसमत्ते अत्थे वत्तमानतो क्रियत्था त्यादयो होन्ति। गच्छति, गच्छन्ति, गच्छसि गच्छथ, गच्छामि गच्छाम, गच्छते गच्छन्ते, गच्छसे गच्छव्हे, गच्छे गच्छाम्हे। कथं 'पुरे अधम्मो दिप्पति, पुरा मरामी'ति? वत्तमानस्सेववत्तुमिट्ठत्ता तंसमीपस्स तग्गहणेन गहणा, पुरेपुरासद्देहि वा अनागतत्तावगमे तदा तस्स वत्तमानत्ता, कालब्यत्तयो वा एसो, भवन्तेव हि कालन्तरेपि त्यादयो बाहुलका 'सन्तेसु परिगूहामि, मा च किञ्च इतो अदं' 'कायस्स भेदा अभिसम्परायं, सहब्यतं गच्छति वासवस्स, 'अनेकजातिसंसारं सन्धाविस्सं' अतिवेलं न मस्सिस्स'न्ति।

२. भविस्सति स्सति स्सन्ति स्ससि स्सथ स्सामि स्साम स्सते स्सन्ते स्ससे स्सव्हे स्सं स्साम्हे।

भविस्सति अनारद्धे अत्थे वत्तमानतो क्रियत्था स्सत्यादयो होन्ति। गमिस्सति गमिस्सन्ति, गमिस्ससि गमिस्सथ, गमिस्सामि गमिस्साम, गमिस्सते गमिस्सन्ते, गमिस्ससे गमिस्सव्हे, गमिस्सं गमिस्साम्हे।

३. नामे गरहाविम्हयेसु।

नामसद्दे निपाते सति गरहायं विम्हये च गम्यमाने स्सत्यादयो होन्ति। इमे हि नाम कल्याणधम्मा पटिजानिस्सन्ति, न हि नाम भिक्खवे तस्स मोघपुरिसस्स पाणेसु अनुद्दया भविस्सति, कथं हि नाम सो भिक्खवे मोघपुरिसो सब्बमत्तिकामयं कुटिकं करिस्सति? तत्थ नाम त्वं मोघपुरिस मया विरागाय धम्मे देसिते सरागाय चेतेस्ससि? अत्थि नाम तात सुदिन्न आभिदोसिकं कुम्मासं परिभुञ्जिस्ससि, अत्थियेविहापि निन्दावगमो। विमुये-अच्छरियं वत भो अब्भुतं वत भो सन्तेन वत भो पब्बजिता विहारेन विहरन्ति, यत्र हि नाम सञ्ञी समानो जागरो पञ्चमत्तानि सकटसतानि निस्साय निस्साय अभिक्कन्तानि नेव दक्खति न पन सद्दं सोस्सति, अच्छरियं अन्धो नाम पब्बतमारोहिस्सति, बधिरो नाम सद्दं सोस्सति।

४. भूते ईउं ओत्थ इं म्हा आ ऊ से व्हं अ म्हे।

भूते परिसमत्ते अत्थे वत्तमानतो क्रियत्था ई आदयो होन्ति। अगमी अगमुं, अगमो अगमित्थ, अगमिं अगमिम्हा, अगमा अगमू, अगमिसे अगमिव्हं, अगम अगमिम्हे। भूतसामञ्ञवचनिच्छायमनज्जतनेपि ‘सुवो अहोसि आनन्दो’।

५. अनज्जतने आ ऊ ओ त्थ अ म्हा त्थ त्थुं से व्हं इं म्हसे।

अविज्जमानज्जतने भूते-त्थे वत्तमानतो क्रियत्था आआदयो होन्ति।

आञाय्या च उट्ठाना, आञाय्या च संवेसना।
एसज्जतनो कालो, अहरुभतड्डरत्तं वा॥

अगमा अगमू, अगमो, अगमत्थ, अगम अगमम्हा, अगमत्थ अगमत्थुं, अगमसे अगमव्हं, अगमिं अगमम्हसे। अञ्ञपदत्थो किं? अज्ज हिय्यो वा अगमासि।

६. परोक्खे अ उ ए त्थ अ म्ह त्थ रे त्थो व्हो इ म्हे।

अपच्चक्खे भूतानज्जतने-त्थे वुत्तमानतो क्रियात्था अ आदयो होन्ति। जगाम जगमु, जगमे जगपित्थ, जगम जगमिम्ह, जगमित्थ जगमिरे, जगमित्थो जगमिव्हो, जगमि जगमिम्हे। मूळ्हविक्खित्तब्यासत्तचित्तेन अत्तनापि क्रियाकताभिनिब्बत्तितकाले-नुपलद्धा समाना फलेना-नुमीयमाना परोक्खाव वत्थुतो, तेनुत्तमविसयेपि पयोगसमवो।

७. एय्यादो वातिपत्तियं स्सा स्सं सु स्से स्सथ स्सं स्साम्हा स्सथ स्सिंसु सस्से स्सव्हे स्सिं स्साम्हसे।

एय्यादो विसये क्रियातिपत्तियं स्सादयो होन्ति विभासा। विधुरप्पच्चयोपनिपाततो कारणवेकल्लतो वा क्रियायातिपतनमनिप्फत्ति क्रियातिपत्ति, एते च स्सादयो सामत्थियातीतानागतेस्वेव होन्ति न वत्तमाने तत्र...

क्रियातिपत्यसम्भवा, सचे पठमवये पब्बज्जं अलभिस्सा अरहा अभविस्सा, दक्खिणेन चे अगमिस्सा न सकटं परिया भविस्सा, दक्खिणेन चे अगमिस्संसु, अगमिस्से अगमिस्सथ, अगमिस्सं अगमिस्साम्हा, अगमिस्सथ अगमिस्सिंसु, अगमिस्ससे अगमिस्सव्हे, अगमिस्सिं अगमिस्साम्हसे, न सकटं परियाभविस्सा, वातिकिं? दक्खिणे न चे गमिस्सति न सकटं परिया भविस्सति।

८. हेतुफलेस्वेय्य एय्युं एय्यासि एय्याथ एय्यामि एय्याम एथ एरं एथो एय्यव्हो एय्यं एय्याम्हे।

हेतुभूतायं एलभूतायञ्च क्रियायं वत्तमानतो क्रियत्था एय्यादयो वा होन्ति, सचे सङ्खारा निच्चा भवेय्युं न निरुज्झेय्युं, दक्खिणेन चे गच्छेय्य न सकटं परियाभवेय्य, दक्खिणेन चे गच्छेय्युं, गच्छेय्यासि गच्छेय्याथ, गच्छेय्यामि गच्छेय्याम, गच्छेथ गच्छेरं, गच्छेथो गच्छेय्यव्हो, गच्छेय्यं गच्छेय्याम्हे, न सकटं परिय्याभवेय्य, भवनं गमनं च हेतु, अनिरुज्झनं अपरियाभवनं च फलं, इह कस्मा न होति ‘हन्तीहि पलायति, वस्सतीति धावति, हनिस्सतीति पलायिस्सती’ति? इति सद्देनेव हेतुहेतुमन्तताय जोतितत्ता, वाति किं? दक्खिणेन चे गमिस्सति न सकटं परियाभविस्सति।

९. पञ्हपत्थनाविधीसु।

पञ्हो=सम्पुच्छनं सम्पधारणं निरूपणं कारियानिच्छयनं पत्थना=याचनं इट्ठासिं भनञ्च, विधि=विधानं नियोजनं क्रियासु ब्यापारणा, सा च दुविधाव सादरानादरवसेन... विसयभेदेन भिन्नायपि तदुभयानतिवत्तनतो, एतेसु पञ्हादीसु क्रियत्थतो एय्योदयो होन्ति, पञ्हे - किमायस्मा विनयं परियापुणेय्य? उदाहु धम्मं, गच्छेय्यं वाहं उपोसथं न वा गच्छेय्यं, पत्थनायं-लभेय्या-हं भन्ते भगवतो सन्तिके पब्बज्जं लभेय्यं उपसम्पदं, पस्सेय्यं तं वस्ससतं अरोगं, विधिम्हि-भवं पत्तं पचेय्य, भवं पुञ्ञं करेय्य, इह भवं भुञ्जेय्य, इह भवं निसीदेय्य, माणवकं भवं अज्झापेय्य, अनुञ्ञापत्तकालेसुपि सिद्धाव... तत्थापि विधिप्पतीतितो, अनुञ्ञायं-एवं करेय्यासि, पत्तकाले-कटं करेय्यासि, पत्तो ते कालो कटकरणे, यदि सङ्घस्स पत्तकल्लं सङ्घो उपोसथं करेय्य, एतस्स भगवा कालो एतस्स सुगत कालो यं भगवा सावकानं सिक्खापदं पञ्ञपेय्य, पेसनेपिच्छन्ति ‘गामं त्वं भणे गच्छेय्यासि’।

१०. तु अन्तु हि थ मि म तं अन्तं स्सु व्हो ए आमसे।

पञ्हादीस्वेते होन्ति क्रियत्थतो। गच्छतु गच्छन्तु, गच्छाहि गच्छथ, गच्छामि गच्छाम, गच्छतं गच्छन्तं, गच्छस्सु गच्छव्हो, गच्छे, गच्छामसे, पञ्हे-किन्नु खलु भो ब्याकरणमधीयस्सु, पत्थनायं-ददाहि मे, जीवतु भवं, विधिम्हि-कटं करोतु भवं, पुञ्ञं करोतु भवं, इह भवं भुञ्जतु, इह भवं निसीदतु, उद्दिसतु भन्ते भगवा भिक्खूनं पातिमोक्खं, पेसने-गच्छ भणे गामं, अनुमतियं - एवं करोहि, पत्तकाले-कालो-यं ते महावीर उप्पज्ज मातुकुच्छियं।

११. सत्यरहेस्वेय्यादी।

सत्तियं अर हत्थे च क्रियत्था एय्यादयो होन्ति। भवं खलु रज्जं करेय्य, भवं सत्तो अरहो।

१२. सम्भावने वा।

सम्भावने गम्यमाने धातुना वुच्चमाने च एय्यादयो होन्ति विभासा। अपि पब्बतं सिरसा भिन्देय्य, क्रियातिपत्तियन्तु

स्सादी-असनियापि हतो नापतिस्सा, सम्भावेमि सद्दहामि अवकप्पेमि भुञ्जेय्य भवं भुञ्जिस्सति भवं अभुञ्जि भवं, क्रियातिपत्तियन्तु स्सादी-सम्भावेमि नाभुञ्जिस्सा भवं।

१३. मायोगे ईआआदी।

मा योगे सति ईआदयो आआदयो च वा होन्ति। मा सु पुनपि एवरूपमकासि, मा भवं अगमा वनं, वात्वेव? मा ते कामगुणे भमस्सु चित्तं, मा त्वं करिस्ससि, मा त्वं करेय्यासि, असककालत्थोयमारम्भो, बुद्धो भविस्सतीति पदन्तरसम्बन्धेनानागतकालता पतीयते, एवं कतो कटो स्वे भविस्सति, भावि किच्चमासीति।

लुनाहि लुनाहित्वेवायं लुनाति, लुनस्सु लुनस्सुत्वेवायं लुना-तीति त्वादीनमेवेतं मज्झिमपुरिसेकवचनानमाभिक्खञ्ञे द्विब्बवचनं, इदं वुत्तं होति 'एव मेस तुरितो अञ्ञेपि नियोजेन्तोविय किरियं करोती'ति, एवं लुनाथ लुनाथत्वेवायं लुनाति, लुनव्हो लुनव्होत्वेवायं लुनाति, तथा कालन्तरेसुपि लुनाहि लुनाहित्वेवायं अलुनि, अलुना, लुलाव, लुनिस्सतीति, एवं स्सुम्हि च योजनीयं, तथा समुच्चयेपि मठमट, विहारमटेत्वेवायमटति, मठमटस्सु, विहारमटस्सुत्वेवायमटति, ब्यापारभेदे तुसामञ्ञवचनस्सेव ब्यापकत्ता अनुप्पयोगो भवति, ओदनं भुञ्ज, यागुं पिव, धाना खादेत्वेवाय-मज्झोहरति।

१४. पुब्बपरच्छक्कानमेकानेकेसु तुम्हाम्हसेसेसु द्वे द्वे मज्झिमुत्तमपठमा।

एकानेकेसु तुम्हाम्हसद्दवचनीयेसु तदञ्ञसद्दवचनीयेसु च कारकेसु पुब्बच्छक्कानं परच्छक्कानं मज्झिमुत्तमपठमा द्वे द्वे होन्ति यथाक्कमं क्रियत्था, उत्तमसद्दो-यं सभावतो ततियदुके रुळ्हो, त्वं गच्छसि, तुम्हे गच्छथ, त्वं गच्छसे, तुम्हे गच्छव्हे, अहं गच्छामि, मयं गच्छाम, अहं गच्छे, मयं गच्छाम्हे, सो गच्छति, ते गच्छन्ति, सो गच्छते, ते गच्छन्ते, सामत्थिया लद्धत्ता अप्पयुज्जमानेसुपि तुम्हाम्हसेसेसु भवन्ति। गच्छसि, गच्छथ, गच्छसे, गच्छव्हे, गच्छामि, गच्छाम, गच्छे, गच्छाम्हे, गच्छति, गच्छन्ति, गच्छते, गच्छन्ते।

१५. आईस्सादीस्वञ वा।

आआदो ईआदो स्सा आदो च क्रियत्थस्स वा अञ होति। ञकारो-नुबन्धो, अगमा, गमा, अगमी, गमी, अगमिस्सा, गमिस्सा।

१६. अआदीस्वाहो ब्रूस्स।

ब्रूस्स आहो होति अआदीसु। आह, आहु।

१७. भूस्स वुक।

अआदीसु भूस्स वुक होति। ककारो-नुबन्धो, उकारो उच्चारणत्थो, बभूव।

१८. पुब्बस्स अ।

अआदीसु द्वित्ते पुब्बस्स भूस्स अ होति, बभूव।

१९. उस्संस्वाहा वा।

आहादेसा परस्स उस्स अंसुवा होति। अहंसु, आहु।

२०. त्यन्तीनं टटू।

आहा परेसं तिअन्तीनं टटू होन्ति। टकारा सब्बादेसत्था, आह, आहु, अतोयेव च ञापका तिअन्तीसु च ब्रूस्सा-हो।

२१. ईआदो वचस्सोम।

ईआदीसु वचस्स ओम होति। मकारो-नुबन्धो, अवोच, ईआदोति किं? अवचा।

२२. दास्स दं वा मिमेस्वद्वित्ते।

अद्विते वत्तमानस्स दास्स दं वा होति मिमेसु। दम्मि देमि, दम्म देम, अद्वित्तेति किं? ददाधि ददाम।

२३. करस्स सोस्स कुं।

करस्स सओकारस्स कुं वा होति मिमेसु। कुम्मि कुम्म, करोमि करोम।

२४. का ईआदीसु।

करस्स सओकारस्स का होति वा ईआदीसु। अकासि अकरि, अकंसु अकरिंसु, अका अकरा।

२५. हास्स, चाहङ स्सेन।

करस्स सोस्स हास्स च आहङ वा होति स्सेन सह। काहति करिस्सति, अकाहा अकरिस्सा, हाहति हायिस्सति, अहाहा अहायिस्सा।

२६. लभवसच्छिदभिदरुदानं च्छङ।

लभादीनं च्छङ वा होति स्सेनसह। अलच्छा अलभिस्सा, लच्छति लभिस्साति, अवच्छा अवसिस्सा, वच्छति वसिस्सति, अच्छेच्छा अच्छिन्दिस्सा, छेच्छति छिन्दिस्सति, अभेच्छा अभिन्दिस्सा, भेच्छति भिन्दिस्सति, अरुच्छा अरोदिस्सा, रुच्छति रोदिस्सती, अञ्ञस्मिम्पि छिदस्स वा च्छङ योगविभागा, अच्छेच्छुं अच्छन्तिंसु, अञ्ञेसञ्च गच्छं गच्छिस्सं।

२७. भुज मुच वच विसानं क्खङ।

भुजादीनं क्खङ वा होति स्सेन सह। अभोक्खा अभुञ्जिस्सा, भोक्खति भुञ्जिस्सति, अमोक्खा अमुञ्चिस्सा, मोक्खतिमुञ्चिस्सति, अवक्खा अवचिस्सा, वक्खति वच्चिस्सति, पावेक्खा पाविसिस्सा, पवेक्खति पविसिस्सति,

विसस्सा-ञ्ञस्मिम्पि वा क्खङ योगविभागा पावेक्खि, पाविसि।

२८. आईआदीसु हरस्सा।

आआदो ईआदो अ हरस्स आ होति वा। अहा अहरा, अहासि अहरि।

२९. गमिस्स।

आआदो ईआदो अ गमिस्स आ होति वा। अगा अगमा, अगा अगमी।

३०. डंसस्स च छङ।

डंसस्स गमिस्स च छङ वा होति आईआदीसु। अडञ्छा अडंसा, अडञ्छि अडंसी, अगञ्छा अगच्छा, अगञ्छि अगच्छी।

३१. हूस्स हेहेहिहोहि स्सत्यादो।

हूस्स हेआदयो होन्ति स्सत्यादो। हेस्सति, हेहिस्सति, होहिस्सति।

३२. णानासु रस्सो।

क्णाक्नासु क्रियत्थस्स रस्सो होति। किणाति, धुनाति।

३३. आ ई ऊ म्हा स्सा स्सम्हानं वा।

एसं वा रस्सो होति। गम गमा, गमि गमी, गमु गमू, गमिम्ह गमिम्हा, गमिस्स गमिस्सा, गमिस्सम्ह गमिस्सम्हा।

३४. कुसरुहेहीस्स छि।

कुसा रुहा च परस्स ईस्स छि वा होति। अक्कोच्छि अक्कोसि, अभिरुच्छि अभिरुहि।

३५. अ ई स्साआदीनं ब्यञ्जनस्सिञ।

क्रियत्था परेसं अआदीनं ईआदीनं स्सआदीनञ्च-ब्यञ्जनस्स इञ होति विभासा। बभुवित्थ, अभवित्था, अनुभविस्सा, अनुभविस्सति अनुभोस्सति हरिसति हस्सति, एतेसन्ति किं? भवति, ब्यञ्जनस्साति किं? बभूव।

३६. ब्रूतो तिस्सीञ।

ब्रूतो परस्स तिस्स ईञ वा होति। ब्रवीति, ब्रूति।

३७. क्यस्स।

क्रियत्था परस्स क्यस्स ईञ वा होति। पचीयति, पच्चति।

३८. एय्याथ स्से अ आ ईथानं ओ, अ, अं, त्थ, त्थो, व्होक।

एय्याथादीनं ओआदयो वा होन्ति यथाक्कमं। तुम्हे भवेय्याथो भवेय्याथ, त्वं अभविस्स अभविस्से, अहं अभवं अभव, सो अभवित्थ अभवा, सो अभवित्थो, अभवी, तुम्हे भवथव्हो भवथ, आसहचरितोव अकारो गय्हते, थो पन-न्ते निद्देसा त्वादिसम्बन्धीयेव, तस्सेव वा निस्सितत्ता, निस्सयकरणम्पि हि सुत्तकाराचिण्णं।

३९. उंस्सिं स्वंसु।

उमीच्चस्स इंसु अंसु वा होन्ति। अगमिंसु, अगमंसु, अगमुं।

४०. एओत्ता सुं।

एआदेसतो ओआदेसतो च परस्स उमिच्चस्स सुं वा होति। नेसुं, नयिंसु, अस्सोसुं, अस्सुं, आदेसत्ताख्यापनत्थंत्तग्गहणं।

४१. हूतो रेसुं।

हूतो परस्स उमिच्चस्स रेसुं वा होति। अहेसुं, अहवुं।

४२. ओस्स अ इ त्थ त्थो।

ओस्स अआदयो वा होन्ति। त्वं अभव, अभवि, अभवित्थ, अभवित्थो अभवो।

४३. सि।

ओस्स सि वा होति। अहोसि त्वं अहुवो।

४४. दीघा ईस्स।

दीघतो परस्स ईस्स सि वा होति। अकासि अका, अदासि अदा।

४५. म्हात्थानमुञ।

म्हात्थानम्हञ वा होति। अगम्हम्हा अगमिम्हा, अगमुत्थ अगमित्थ।

४६. इंस्स च सिञ।

इमिच्चस्स सिञ वा तोति म्हात्थानञ्च बहुलं। अकासिं अकरिं, अकासिम्हा अकरिम्हा अकासित्थ अकरित्थ।

४७. एय्युंस्सुं।

एय्युमिच्चस्स ञं वा होति। गच्छुं गच्छेय्युं।

४८. हिस्स-तो लोपो।

अतो परस्स हिस्स लोपो वा होति। गच्छ गच्छाहि, अतोति किं? करोहि।

४९. क्यस्स स्से।

क्यस्स वा लोपो होति स्से। अन्वभविस्सा अन्वभूयिस्सा, अनुभविस्सति अनुछूयिस्सति।

५०. अत्थितेय्यादिच्छन्नं स सु स सथ सं साम।

अस=भुविच्चस्मा परेसं एय्यादिच्छन्नं सादयो होन्ति यथाक्कमं। अस्स, अस्सु, अस्स, अस्सथ, अस्सं, अस्साम।

५१. आदिद्विन्नमियाइयुं।

अत्थितेय्यादिच्छन्नं आदिभूतानं द्विन्नं इया इयुं होन्ति यथाक्कमं। सिया, सियुं।

५२. तस्स थो।

अत्थितो परस्स तकारस्स थो होति। अत्थि, अत्थु।

५३. सिहिस्वट।

अत्थिस्स अट होति सिहिसु, टो सब्बादेसत्थो। असि अहि।

५४. मिमानं वा म्हिम्हा च।

अत्थिस्मा परेसं मिमानं म्हिम्हा वा होन्ति, तंसन्नियोगेनअत्थिस्स अट च। अम्हि अस्मि, अम्ह अस्म।

५५. एसु सि।

एसु मिमेसु अत्थिस्स सकारो होति। अस्मि अस्म, पररूपबाधनत्थं।

५६. ईआदो दीघो।

अत्थिस्स दीघो होति ईआदिम्हि। आसि, आसुं, आसि, आसित्थ, आसिं, आसिं म्हा।

५७. हिमिमेस्वस्स।

अकारस्स दीघो होति हिमिमेसु। पचाहि, पचामि, पचाम, मुय्हामि।

५८. सका णास्स ख ईआदो।

सकस्मा क्णास्सखोहोति ईआदीसु। असक्खि, असक्खिंसु।

५९. स्से वा।

सकस्मा क्णस्सखो वा होति स्से। सक्खिस्सा सक्कुणिस्सा, सक्खिस्सति, सक्कुणिस्सति।

६०. तेसु सुतो क्णोक्णानं रोट।

तेसु ईआदिस्सेसु सुतो परेसं क्णोक्णानं रोट वा होति। अस्सोसि असुणि, अस्सोस्सा असुणिस्सा, सोस्सति सुणिस्सति।

६१. ञास्स सनास्स नायो तिम्हि। सनास्स ञास्स नायो वा होति तिम्हि। नायति, जानाति।

६२. ञाम्हि जं।

ञादेसे सनास्स ञास्स जं (वा) होति। जञ्ञा (जानेय्य)।

६३. एय्यास्सियाञा वा।

ञातो एय्यास्स इयाञा होन्ति वा। जानिया, जञ्ञा जानेय्य।

६४. ईस्सत्यादीसु क्नालोपो।

ईआदो स्सत्यादो च ञातो क्नालोपो वा होति। अञ्ञासि अजानि, ञस्सति जानिस्सति।

६५. स्सस्स हि कम्मे।

ञातो परस्स स्सस्स हि वा होति कम्मे। पञ्ञायिहिति पञ्ञायिस्सति।

६६. एतिस्मा।

एतिस्मा परस्स स्सस्स हि होति वा। एहिति एस्सति।

६७. हना छखा।

हना स्सस्स छखा वा होन्ति। हञ्छामि हनिस्सामि, पटिहङ्खामि पटिहनिस्सामि।

६८. हातो ह।

हातो परस्स स्सस्स ह होति वा। हाहति जहिस्सति।

६९. दक्ख ख हेहि होहीहि लोपो।

दक्खादीहि आदेसेहि परस्स स्सस्स लोपो वा होति। दक्खति दक्खिस्सति, सक्खति सक्खिस्सति, हेहिति हेहिस्सतिहोहिति होहिस्सति।

७०. कयिरेय्यस्सेय्युमादीनं।

कयिरा परस्स एय्युमादीनं एय्यस्स लोपो होति। कयिरुं, कयिरासि, कयिराथ, कहिरामि, कयिराम।

७१. टा।

कयिरा परस्स एय्यस्स टा होति। सो कयिरा।

७२. एथस्सा।

कयिरा परस्स एथस्स आ होति। कयिराथ।

७३. लभा इं ईनं थं था वा।

लभस्मा ईंईइच्चेसं थंथा होन्ति वा। अलत्थं अलभिं, अलत्थ अलभि।

७४. गुरुपुब्बा रस्सा रे न्तेन्तीनं।

गुरुपुब्बस्मा रस्सा परेसं न्तेन्तीनं रे वा होति। गच्छरे गच्छन्ति, गच्छरे गच्छन्ते, गमिस्सरे गमिस्सन्ति, गमिस्सरे गमिस्सन्ते, गुरुपुब्बाति किं? पच, रस्सति किं? होन्ति।

७५. एय्येय्यासेय्यन्नं टे।

एय्यादीनं टे वा होति। सो करे करेय्य, त्वं करे करेय्यासि, अहं करे करेय्यं।

७६. ओविकरणस्सु परच्छक्के।

ओविकरणस्स उ होति परच्छक्के विसये। तनुते।

७७. पुब्बच्छक्के वा क्वचि।

ओविकरणस्स उ होति वा क्वचि पुब्बच्छक्के। वनुति वनोति।

७८. एय्यामस्सेमु च।

एय्यामस्सेमु वा होति उ च। भवेम्ह, भवेय्यामु भवेय्याम।

इति मोग्गल्लाने ब्याकरणे वुत्तियं

त्यादिकण्डो छट्ठो।

७. सत्तमो कण्डो (ण्वादि)

''बहुलं'' (१.५८) ''क्रियत्था''ति (५.१४) च सब्बत्थ वत्थते।

१. चर दर कर रह जन सन तल साद साध कसास चटाय वाहि णु।

चर-गतिभक्खणेसु, दर-दरणे, कर-करणे, रह-चागे, जन-जनने, सन-सम्भत्तियं, तल-पतिट्ठायं, साद-अस्सादने, साध-संसिद्धियं, कस-विलेखने, अस-खेपने, चट-भेदने, अय-इति गमनत्थो दण्डको धातु, वा-गतिगन्धनेसु, एतेहि क्रियत्थेहि बहुलं णु होति। ''अस्सा णानुबन्धे''ति (५.८४) उपन्तस्स अस्स आ, चरति हदये मनुञ्ञभावेनाति चारु=सोभनं। दरीयतीति दारु=कट्ठं। करोतीति कारु=सिप्पी, मघ वा, विसुकम्मो च। रहति चन्दादीनं सोभाविसेसं नासेतीति राहु=असुरिन्दो। जायति गमनागमनं अनेनातिजानु=जङ्घोरूनं सन्धि। सनेति अत्तनि भत्तिं उप्पादेतीति सानु=गिरिप्पदेसो। तलन्ति पतिट्ठहन्ति एत्थ दन्ताति तालु=वदनेकदेसो। सा दीयति अस्सादीयतीति सादु=मधुरं। साधेति अत्तपरहितन्ति साधु=सज्जनो। कसीयतीति कासु=आवाटो, असति सीघभावेन पवत्ततीति आसु=सीघं। चटति भिन्दति अमनुञ्ञभावन्ति चाटु=मनुञ्ञो। अयन्ति पवत्तन्ति सत्ता एतेनाति आयु=जीवितं। ''अस्सा णापिम्हि युक'' इति (५.९१) युक- वाति गच्छतीति वायु-वातो।

२. भर मर चर तर अर गर हन तन मन भम कित धन बंह कम्बम्ब चक्ख भिक्ख संकिन्दन्द यज पटाणास वस पस पंस बन्धा उ।

भर-भरणे, मर-पाणचागे, चर-गतिभक्खणेसु, तर तरणे, अर-गमने, गर घर-सेचने, गिराति वा निपातना अकारो, हन-हिं सायं, तन-वित्तारे, मन-ञाणे, भम-अनवट्ठाने, कित-निवासे, धन-सद्दे, बंह ब्रह ब्रूह-वुद्धियं, कम्ब-संवरणे, अम्ब-सद्दे, चक्ख इक्ख दस्सने, भिक्ख-याचने, संकसङ्कायं, इन्द-परमिस्सरिये, अन्द-बन्धने, यज-देवपूजायं, अट पट-गमनथा, अण-सद्दत्थो, अस-खेपने, वस-निवासे, पसबाधने, पंस-नासने, बन्ध-बन्धने, एतेहि क्रियत्थेहि उ होति। भरतीति भर=भत्ता। मरति रूपकायेन सहेवाति मरु=देवो, निज्जलदेसो च। चरीयति भक्खीयतीति चरु=हब्यपा को। तरन्ति अनेनाति तरु=रुक्खो। अरति सूनभावेन उद्धं गच्छतीति अरु=वणो। गरति सिञ्चति, गिरति वमति वा सिस्सेसु सिनेहन्ति गरु=आचरियो। हनति ओदनादीसु वण्णविसेसं नासेतीति हनु=वदनेकदेसो। तनोति संसार दुक्खन्ति तनु-सरीरं। मञ्ञति

सत्तानं हिताहितन्ति मनु=पजापति। भमति चलतीति भमु=नयनो पतिट्ठानं। केतति उद्धं गच्छति, उपरि निवसतीति वा केतु=धजो। धनति सद्दं करोतीति धनु=चापो। बंह इति निद्देसा उम्हि निच्चं निग्गहीतलोपो, बंहति वुद्धिं गच्छतीति बहु=अनप्पकं। कम्बति संवरं करोतीथि कम्बु=वलयो, सङ्खो च। अम्बति नादंकरोतीति अम्बु=वारि। चक्खति रूपन्ति चक्खु=नयनं। भिक्खतीति भिक्खु=समणो। संकिरतीति संकु=सूलं। इन्दति नक्खत्तानं परमिस्सरियं पवत्तेतीति इन्दु=चन्दो। अन्दन्ति बन्धन्ति सत्ता एतायाति अन्दु=सङ्खलिका। यजन्ति अनेनाति यजु=वेदो। पटति ब्यत्तभावं गच्छतीति पटु=विचक्खणो। अणति सुखुमभावेन पवत्ततीति अणु=सुखुमो, वीहिभेदो च। असन्ति पवत्तन्ति सत्ता एतेहीति असवो=पाणा। सुखं वसन्त्यनेनाति वसु=धनं। पसीयति बाधीयति सामिकेहीति पसु। चतुप्पदो। पंसति सोभाविसेसं नासेतीति पंसु=रेणु। बन्धीयति सिनेहभावेनाति बन्धु=ञाति।

३. बन्धा ऊ वधो च।

बन्ध-बन्धने तिमस्मा ऊ होति, बन्धस्स वधादेसो च। पञ्चहि कामगुणेहि अत्तनि सत्थे बन्धतीति वधू-सुणिसा, इत्थीच।

४. जम्बादयो।

जम्बूआदयो सद्दाऊपच्चयन्ता निपच्चन्ते, निपातनं अप्पत्तस्स पापनं पत्तस्स पटिसेधो च। जनिस्मा ऊ, बुकागमो, ''मनानं निग्गहीत''न्ति (५.९६) नस्स निग्गहीतं, ''वग्गे वग्गन्तो''ति (१.४१) निग्गहीतस्स मो, जायति, जनीयती वा जम्बू=रुक्खो। भमिस्स अमलोपो, भमति कम्पतीति भू=भमु। करोतिस्मा ऊ, तस्स कन्धुञ्च च, ''पररूपमयकारे ब्यञ्जने''ति (५.९५) धात्वन्तस्स ब्यञ्जनस्स पररूपत्तं, रुधिरुप्पादं करोतीति कक्कन्धू=बदरी। लम्ब-अवसंसने, आपुब्बो, संयोगादिलोपदीघरस्सा, आलम्बति अवसंसतीति अलाबू=तुम्बि। सर-गति हिंसाचिन्तासु, ऊम्हि अभुक अबुक च, सरति गच्छतीति सरभू=एका महानदी। सरति पाणे हिंसतीति सरबू=खुद्दजन्तुकविसेसो। चमअदने, चमति भक्खति निवापन्ति चमू=सेना। तन-वित्थारे, तनोति संसारदुक्खन्ति तनु=सरीरं, एवमञ्ञेपि पयोगतो दट्ठब्बा।

५. तपुस वि ध कुर पुथ मुदा कु।

तप-सन्तापे, उस-दाहे, विध-वेधने, कुर-सद्दे, पुथ पथ-वित्थारे, मुद-तोसे, एतेहि कु, होति। ककारोनुबन्धो ''न ते कानुबन्धनागमेसू''ति (५.८५) एओनमभावत्थो। तप इति निद्देसतोव अस्स इत्तं, तापीयतीति तिपु=लोहविसेसो। उसति दाहं करोतीति उसु=सरो। वेधति रंसीहि तिमिरन्ति विधु=चन्दो। कुरति किच्चाकिच्चं वदतीति कुरु=राजा, कुरवो=जनपदो। पुथति महन्थभावेन पत्थिरतीति पुथु=वित्थिण्णो, मोदनं, मुदीयतीति वा मुदु=अथद्धो।

६. सिन्धादयो।

सिन्धु आदयो कुपच्चयन्ता निपच्चन्ते। सन्द-पस्सवने, अस्स इत्तं, धोचान्ता देसो निपातना, सन्दति पस्सवतीति सिन्धु=नदि, वहिसुपन्तस्स दीघादिबत्ते, बाधिस्स वान्तहत्ते च, वहन्त्यनेनाति बाहु, बाधति उपद्दवे वारेती ति वा बाहु=भुजो। रंघ-गमने, निग्गहीतलोपो, रङ्घति पवत्तहि राजधम्मेति रघु=राजा। विद-लाभे, नकारागमो, वस्स बो, विन्दत्यनेन नन्दनन्ति बिन्दु=कणिका। मन-ञाणे, नस्स धो, मञ्ञति ञायति मधुरन्ति मधु=मधुकरीहि कतमधु, रप लप जप जप्प-वचने,

अस्सइत्तं, रपति जप्पति मन्तन्ती रिपु=पच्चामित्तो। सस-गति हिं सापाणनेसु, अस्स उत्तं, ससति जीवतीति सुसु=युवा। अर गमने, अस्सउत्त मूत्तञ्च, अरति महन्तभावं गच्छतीति उरु=महा, अरतिनेनाति ऊरु-सत्थि। खण-अवदारणे, आ पुब्बो अनलोपो, आखनतीति आखु=उन्दूरो। तरतरणे, तस्स थो, तरतीति थरु=खग्गावयवो। लंघ-गति सोसनेसु घस्स वा हत्तं, निग्गहीतलोपो च, लङ्घति पवत्तति लघुभावेनाति लघु लहू एकत्था, (भंज-ओमद्दने, प-पुब्बो, जस्स गत्तं, पभञ्जति विसेसेनाति पभङ्गु=भङ्गुरो।) ठा-गतिनिवत्तियं, सुपुब्बो, ठाति पवत्तति सुन्दरभावेनाति सुट्ठु=सोभनं, दुपुब्बो ठाति पवत्तति असुन्दरभावेनाति दुट्ठु=असोभनं। एवमञ्ञेपि विञ्ञेय्या।

७. इ।

क्रियत्था बहुलं इ होति, अभ-खेपने, असीयति खिपीयतीति असि=खग्गो। कस-विलेखने, कसीयते कसि=कसनं। मस-आमसने, मसीयतीति मसि=मेळा। कु-सद्दे ओ अवादेसा, कवति कथेभीति कवि=कब्बकारो। रुसद्दे, रवति गज्जतीति रवि=आदिच्चो। सप्प-गमने, सप्पति पवत्ततीति सप्पि=घतं। गन्थ-गन्थने, ‘‘त थ न रानं ट ठ णला’’ति (१.२५) नथानं णठा, गन्थेतीति गण्ठि=पब्बो, गण्ठिच। राज-दित्तियं, राजति पवत्ततीति राजि=पाळि। कल-सङ्ख्याने, कलीयति परिमीयतीति कलि=पापं। बल-पाणने, बलन्ति जीवन्ति अनेनाति बलि=करो। धन-सद्दे, धनति नदतीति धनि=सद्दो। अच्च अञ्च-पूजायं, अच्चीयति पूजीयतीति अच्चि=जाला। वल वल्ल-संवरणे, वलनं संकोचनं वलि=उदरादीसु पलि, वल्लीयन्ति संवरीयन्ति सत्ता एतायाति वल्लि=लता। विम्हि वली वल्लीतिपि होति, सोयेवत्थो, एवमञ्ञेपि।

८. दझादयो।

दधिआदयो सद्दा इपच्चयन्ता निपच्चन्ते। धा-धारणे, द्विभावो निपातना, घतमादधातीति दधि=गोर सविसेसो। अंह-गमने, निग्गहीतलोपो, अंहति गच्छतीति अहि=सप्पो। कम्प चलने, संयोगादिलोपो, कम्पति चलतीति कपि=वानरो। मन-ञाणे, अस्स उत्तं, मनति जानातीति मुनि=समणो। नस्स णत्तं, मनति महग्घभावं गच्छतीती मणि=रतनं। इक्ख चक्ख-दस्सने, इस्स अत्तं इक्खति अनेनाति अक्खि=नयनं। कमपविक्खेपे, अस्स इत्तं, कमति यातीति किमि=खुद्दजन्तुकविसेसो। तर तरणे, तित्तिरादेसो, तुरितो तरति यातीति तित्तिरि=पक्खिविसेसो। कीळ-विहारे, ईस्स एत्तं, कीळनं केळि=कीळा। उसिस्मा इस्स खलुञ, उसति दहती उक्खलि=भाजनं, एवमञ्ञेपि।

९. युवण्णुपन्ता कि।

इवण्णुपन्तेहि च उवण्णुपन्तेहि च क्रियत्थेहि बहुलं कि होति। ककारो-नुबन्धो, इस सिस-इच्छायं, सिवं इच्छतीति इसि=तपस्सी। गिर-निगिरणे, गिरति पसवति छविमंससारभूतं भेसज्जादिन्ति गिरि=सेलो। सुच-सोचने। सोचनं सुचि=सोचेय्यं, रुच-अभिलासे रुचन्ति एतायाति रुचि=आभिलासो, एवमञ्ञेपि।

१०. वप वर वस रस नभ हर हन पणा इण।

वप-बीजनिक्खेपे, वर-वरणसम्भत्तीसु, वस-निवासे, रस-अस्सादने, नभ-हिंसायं, हर हरणे, हन हिंसायं, पण-ब्यवहारथुतिसु, एतेहि इण होति। वपन्ति एतायाति वापि=जलासयो। वारेन्ति एतेनाति वारि=जलं। वसन्ति एतायाति वासि=तच्छक भण्डं। रसीयति अस्सादनवसेन समो सरीयतीति रासि=समूहो। नभति हिंसतीति नाभि=सरीरावयवो।

हारेतीति हारि=मनुञ्ञं। ''हनस्स घातो णानुबन्धे'' (५.९९) ति हनस्स घातो, हनन्ति एतेनाति घाति=पहरणं, पणति वोहरतीति पाणि, पणति वोहरति एतेनाति वा पाणि=करो।

११. भूगमा ईण।

भू-सत्तायं, अम गम-गमने एतेहि ईण होति भविस्सति काले। भविस्सतीति भावी=भविस्समानो। गमिस्सतीति गामी=गमिस्सामानो।

१२. तन्दलक्खा ई।

तन्द-आलसिये, लक्ख-दस्सनङ्केसु, एतेहि ई होति। तन्दनं तन्दी=आलस्यं, लक्खीयन्ति सत्ता एतायाति लक्खी=सिरी।

१३. गमा रो।

गमिस्मा रो होति। ''रानुबन्धेन्तसरादिस्सा''ति (४.१३२) अमलोपो, गच्छतीति गो=पसु।

(इति सरपच्चयविधानं)।

१४. इ भी का करार वक सक वाहि को।

इ-अज्झेन गतीसु, भी-भये, का गा-सद्दे, कर-करणे, अर-गमने, कुक वक-आदाने, सक-सत्तियं, वा-गतिबन्धनेसु, एतेहि कपच्चयो होति। एति पवत्ततीति एतो=असहायो। भायन्ति एतस्माति भेको=मण्डूको। कायति सद्दं करोतीति काको=वायसो। करोति वण्णकन्ति कक्को=वण्णविसेसो, पिसितदब्बञ्च। अरति यातीति अक्को=सूरो, विटपिविसेसो च। वकति ओदनं आददातीति वक्कं=देहकोट्ठासविसेसो, सक्कतीति सक्को-देविन्दो, समत्थो च। वाति बन्धति एतेनाति वाको=वक्कलं।

१५. ञुकादयो।

ञुकादयो कपच्चयन्ता निपच्चन्ते। ऊह-वितक्के, हलोपो निपातना ऊहीयति विचिनीयतीति ऊका-ओकोदनी। उन्द किलेदने, संयोगादि लोपो, अक च। उन्दति द्रवं करोतीति उदकं=जलं। भी-भये, एत्ताभावो, भायन्ति एतस्माति भीको=भीरु। सक-सत्तियं, उपन्तस्सि, सक्कोति धारेतुन्ति सिक्का=उपकरणविसेसो। हा-चागे, हीयति साधूहि जहीयतीति हाको=कोधो। सम्ब-मण्डने, कस्स उञ, सम्बति उदकं मण्डेतीति सम्बुको=जलजन्तुविसेभो। पुथ पथ-वित्थारे, ओत्ताभावो, कस्स उञ, पुथति पत्थरति अत्तनो बालभावन्ति पुथुको=बालो। सुच-सोके, सोचन्ति एतेनाति सुक्कं=सम्भवो, सेतञ्च। चि-चये, उपपुब्बो, एत्ताभावो, उपचिनन्तीति उपचिका=वम्मिक कारा। कम्प-चलने, कम्पिस्स पं, कम्पति चलतीति पङ्को=कद्दमो। उस-दाहे, उसतीति उक्का=जाला। कस्स मुञ, उसति दहतीभि उम्मुकं=अलातं। वम-उग्गिरणे, कस्स मिञ, वमीयतीति वम्मिको=उपचिकाकतो चयो, मस-आमसने, सस्स त्थङ, मसीयति पेमेनाति मत्थकं=सीसं, एवमञ्ञेपि।

१६. भीत्वा नको।

भी-भये तीमस्मा आनको होति। भायन्ति एतस्माकि भयानको=भयजनको।

१७. सिङ्घा आणिकाटका।

सिङ्घ-घायनेतीमस्मा आणिक आटका होन्ति। ''इत्थियमत्वा''ति ९३.२६० आ, सिङ्घयति पस्सवतीति सिङ्घाणिका=नासास्सवो। सिङ्घति एकीभावं यातीति सिङ्घाटकं=वीथिचतुक्कं।

१८. करादित्वको।

कर-करणे, सर-गतिहिंसाचिन्तासु, नर-नये, तरतरणे, वर-वरण सम्भत्तीसु, जन-जनने, कर-दित्ति गतिकन्तीसु, कट-मन्दने, कुर-सद्दे, थु-अभित्थवे, एवमादीहि अको होति। करीयतीति करको=कमण्डलु। करोतीति करका=वस्सोपला। सरति उदकमेत्थाति सरको=पानभाजनं। नरन्ति पापुणन्ति सत्ता एत्थाति नरको=निरयो। तरन्त्यनेनाति तरको=तरणं। वारेतीतिवरको=वरणो, धञ्ञविसेसो च। जनेतीति जनको=पिता। कनति दिब्बतीति कनकं=सुवण्णं। कटति मद्दति रिपवोति कटकं=नगरं। कुरतीति कोरको=कलिका। थवीयतीति थवको-गुच्छो।

१९. बल पतेह्याको।

बल-पाणने, पत पथ-गमने, एतेहि आको होति। बलति जीवतीति बलाका=पक्खिविसेसो। पतति यातीति पताका=धजो।

२०. सामाकादयो।

सामाकआदयो आकन्ता निपच्चन्ते। सा-तनु करणावसानेसु, सास्स मुक, साति देहं त नुं करोतीति सामाको=तिणधञ्ञं। पा-पाने, इनङ, पिवति रत्तन्ति पिनाको=महिस्सरधनु। गु-सद्दे, ''युवण्णान मियङुवङ सरे''ति (५.१३६) उवङ, गवति नदति एतेनाति गुवको=पूगफलं। अट पट-गमनत्था, पटति यातीति पटाका=वेजयन्ती। सल पिल पल हुल-गमनत्था, सलति यातीति सलाका=वेज्जोपकरणदब्बं। विद-ञाणे, विदति जानातीति विदाको=विद्वा। पणब्यवहारथुतीसु अस्स इत्तं, ऊक च, पणीयति वोहरीयतीति पिञ्ञाको=तिलकक्को, एवमञ्ञेपि।

२१. विच्छालगममुसा किको।

विच्छा-गमने, अल=बन्धने, अम गम-गमने, मुस-थेय्ये, एतेहि किको होति। विच्छति यातीति विच्छिको=कीटो। अलति बन्धति एतेनाति अलिकं=असच्चं। गच्छतीति गमिको=गन्ता। मुसाति निद्देसा दीघो, मुसति थेनेतीति मूसिको=उन्दूरो।

२२. किंकणिकादयो।

किंकणिकादयो सद्दा किकन्ता निपच्चन्ते। कणइति दण्डको धातु सद्दत्थो, कस्स द्वित्तं, अस्स इत्तं, निग्गहीतागमो च,

कणति सद्दं करोती किंकणिका=घण्डिका। मुद-तोसे, दस्स द्वित्तं, मुदन्ति एतमयाति मुद्दिका=अङ्गुलियावेट्ठनं, फलविसेसो अ। महीयति पूजीयतीति महिका=हिमं। कल-सङ्ख्याने, कलीयति परिमीतयतीति कलिका=कोरको। सप्प-गमने, अस्स इत्तं। सप्पति गच्छतीति सिप्पिका=जलजन्तुविसेसो, एवमञ्ञेपि।

२३. इसा कीको।

इस सिंस-इच्छायं, इच्चस्मा कीको होति। इच्छीयतीति इसीका=तूलनिस्सयो।

२४. कमपदा णुको।

कम-इच्छायं, पद-गमने, एतेहि णुको होति। ''णिणापीन''न्ति (५.१६०) योगविभागा णिलोपो। कामेतीति कामुको=कामयिता। पज्जति याति एतायाति पादुका=पादोपकरणं।

२५. मण्डसला णूको।

मण्ड-भूसने, सल-गमनत्थो दण्डको धातु, एतेहि णूको होति। मण्डेति जलं भूसेतीति मण्डूको=भेको, सलति गोचरत्त मुपयातीति सालूकं=उप्पलकण्डो।

२६. उलूकादयो।

उलूकादयो सद्दा णूकन्ता निपच्चन्ते। उल-गवेसने, ओत्ताभावो निपातना, उलति गवेसतीति उलूको=कोसियो। मन=ञाणे, नस्स धत्तं, मञ्ञतीति मधूको=रुक्खो। जल-दित्तियं, जलतीति जलूका=लोहितपो, एवमञ्ञेपि।

२७. कसा सको।

कस-विलेखनेतीमस्मा सको होति। कसतीति कस्सको=कसिकम्मकारो।

२८. करा तिको।

करोतिस्मा तिको होति। करोन्ति कीळं एत्थाति कत्तिको=बाहुलो।

२९. इसा ठकन।

इस सिंस-इच्छायं, इच्चस्मा ठकन होति। इच्छीयतीति इट्ठका=मत्तिकाविकारो।

३०. समा खो।

सम-उपसमखेदेसु, एतस्मा खो होति। समेति उपसमेतीति सङ्खो=कम्बु।

३१. मुखा दयो।

मुख आदयो खन्ता निपच्चन्ते। मु-बन्धने, ओत्ताभावो निपातना, मुनन्ति बन्धन्ति एतेनाति मुखं=लपनं। सि-सेवायं, एत्ता भावो निपातना, सयन्ति एत्थ ऊका कुसुम-दयो चाति सिखा=चूळा। विपुब्बस्स सिस्स, विसतिस्स वा, विसेसेन सयन्ति एत्थ, पविसन्तीति विसिखा=रच्छा। कन-दीत्ति गति कन्तीसु, निपुब्बो, अनभागलोपो, कनति दिब्बतीति निक्खो=सुवण्णविकारो। मयइति गमनत्थो दण्डको धातु, खस्स ऊञ, मयति यातीति मयूखो-किरणो। लू-छेदने, ओत्थाभावो, लुनाति छिन्दति सोभन्ति लूखो=असिनिद्धो। अर-गमने, अरन्ति यन्ति एतेनाति अक्खो=सकटावयवा, पासको च। यस-पयतने, यस्सति पयतति बलिमाहरणत्थायाति यक्खो=अमनुस्सो, रुह-जनने, रुहति जायतीति रुक्खो=पादपो, उस-दाहे, उसति दहति कामग्गिनाति उक्खो=बलीबद्दो। सह-मरिसने ‘हलोपो, सहति अत्तनि कतापराधं खमतीति सखा=सहायो, एवमञ्ञेपि।

३२. अज वज मुद गद गमा गक।

अज वज-गमने, मुद-तोसे, गद-वचने, अम गम-गमने, एतेहि गक होति। अजति गच्छति सेट्ठभावन्ति अग्गो-सेट्ठो। वजति समूहत्तं गच्छतीति वग्गो=समूहो। मुदन्ति एतेनाति मुग्गो=धञ्ञविसेसो। गदतीति गग्गो=इसि। ‘‘मनानं निग्गहीत’’न्ति (५.९६) मस्स निग्गहीतं, गच्छतीति गङ्गा=सुरापगा।

३३. सिङ्गादयो।

सिङ्गआदयो सद्दा गकअन्ता निपच्चन्ते। सी-सये, निग्गहीतागमो, रस्सत्तञ्च, सयति पवत्तति मत्थकेति सिङ्गं=विसाणं। फुर-चलने, लिमुङ, फुरति चलतीति पुलिङ्गो=जलितङ्गा रावयवो। चल-कम्पने, उपुब्बो, चलस्स चालिं, उच्चलति कम्पतीति उच्चालिङ्गो=सुक्ककीटो, कल-सद्दे, इमुक, कलति अभिनादं करोति बहुरज्जताया ति कलिङ्गो=दक्खिणापथो। भम-अनवट्ठाने, अस्स इत्तं, भमतीति भिङ्गो=भमरो। पट अट-गमने, पटिस्स अमुक, अक च। पटति पतन्तो गच्छतीति पटङ्गो, पटगो=सलभो, एवमञ्ञेपि।

३४. अगा गि।

अग-कुटिलगमनेतीमस्मा गि होति। अगति कुटिलो हुत्वा गच्छतीति अग्गि=पावको।

३५. यावला गु।

या-पापुणने, वल वल्ल-संवरणे, एतेहि गु होति। यातीति यागु=पेय्या। वलीयति संवरीयतीति वग्गु=मनुञ्ञो।

३६. फेग्गादयो।

फेग्गु आदयो गुअन्ता निपच्चन्ते। फल-निप्फत्तियं, अस्स एत्तं, फलति निट्ठानं गच्छतीति फेग्गु=असारो। भर-भरणे, रलोपो। भरतीति भगु=इसि। हि-गतीयं, निग्गहीतागमो, हिनो ति पवत्ततीति हिङ्गु=रामठजं। कम-इच्छायं, कामीयतीति कङ्गु=धञ्ञविसेसो, एवमञ्ञेपि।

३७. जना घो।

जन-जननेतीमस्मा घो होति। ''मनानं निग्गहीत''न्ति (५.९६) नस्स निग्गहीतं, जायति गमनमेतायाति जङ्घा=पाण्यङ्गविसेसो।

३८. मेघादयो।

मेघआदयो घन्ता निपच्चन्ते। मिह-सेचने, हलोपो, मेहति सिञ्चतीति मेघो=अम्बुदो। मुह-मुच्छायं, हलोपो, मुय्हन्ति सत्ता एत्थाति मोघो=तुच्छो। सी-सये, एत्ताभावो, सेति लहु हुत्वा पवत्ततीति सीघं=आसु। अह-भस्मीकरणे, निपुब्बो, हलोपदीघा, निदहतीति निदाघो=गिम्हो। महीस्स हलोपो, महीयति पूजीयतीति मघा=नक्खत्तं, एवमञ्ञेपि।

(इति कवग्गपच्चयविधानं)।

३९. चुसरवरा चो।

चु-चवने, सर-गति हिंसा चिन्तासु, वर-वरण सम्भत्तीसु, एयेहि चो होति। चवति रुक्खाति चोचं=उपभुत्तफल-विसेसो। सरति आयतिं दुक्खं हिंसतीति सच्चं=अवितथं। वारेति सुखन्ति वच्चं=गूथो।

४०. मरा चुईची च।

मर-पाणचागे तीमस्मा चुईची होन्ति चो च। मरणं मच्चु=मरणं। मारेति अन्धकारं विनासेतीति मरीचि=रंसि, मिगतण्हिका च। मरतीति मच्चो=सत्तो।

४१. कुस पसा छिक।

कुस-अक्कोसे, पस-बाधने, एतेहि छिक होति। कुसीयति अक्कोसीयतीति कुच्छि=उदरं। पसीयति बाधीयति एत्थाति पच्छि=भाजनविसेसो।

४२. कस उसा छुक।

कस-विलेखने, उस-दाहे, एतेहि छुक होति। कसन्ति विलेखन्ति एत्थाति कच्छु=पामं। उसति दहति सन्तापन्ति उच्छु=रसालो।

४३. अस मस वद कुच कचा छो।

अस-खिपने, मस-आमसने, वद-वचने, कुच-संकोचने, कच-बन्धने, एतेहि छो होति। असति छिपतीति अच्छो=भल्लूको। मसति जलन्ति मच्छो=मीनो। वदतीति वच्छो=नेलको। कुचीयति संकोचीयतीति कोच्छो=भद्दपीठं। कचीयति बन्धीयतीति कच्छो=तनुपदेसो, अनूपो च।

४४. गुच्छादयो।

गुच्छआदयो छन्ता निपच्चन्ते। गुप-गोपने, ओत्ताभावो, गोपीयतीति गुच्छो=थवको। तुस-तुट्ठिम्ही, तुसन्ति एतेनाति तुच्छं=मुसा। पुस-पोसने, पोसन्ति तनुमनेनाति पुच्छो=वालधि, एवमञ्ञेपि।

४५. अरा जु ञट च।

अर-गमनेतीमस्मा जु होति, अरिस्स उट च। टकारो सब्बादेसत्थो, अरति अकुटिलभावेन पवत्ततीति उजु=अवङ्को।

४६. रज्जादयो।

रज्जुआदयो जुअन्ता निपच्चन्ते। रुध-आवरणे, उस्स अत्तं, रुन्धन्ति एतेनाति रुज्जु-योत्तं। मन-ञाणे, अमञ्ञित्थाति मञ्जु=मञ्जुलं, एवमञ्ञेपि।

४७. गिधा झक।

गिध-अभिकङ्खायमिच्चस्मा झक होति। गेधतीति गिज्झो=पक्खिविसेसो।

४८. वञ्झादयो।

वञ्च्यआदयो झक अन्ता निपच्चन्ते। वन-याचने, वनोति अत्तानं अनुभवितुं याचतीति वञ्झो=अफलरुक्खो, वञ्झा=अपसवा इत्थी, अस्स इत्तं विञ्झो=पब्बतो, संज-सङ्गे, निग्गहीतलोपो, सञ्जियतीति सज्झं=रजतं, एवमञ्ञेपि।

४९. कमयजा ञो।

कम-इच्छायं, यज-देवपूजासङ्गतिकरणदानेसु, एतेहि ञो होति, मस्स निग्गहीतवग्गन्ता, कामीयतीति कञ्ञा=कुमारी। जस्स पररूपत्तं, यजन्त्यनेनाति यञ्ञो=यागो।

५०. पुञ्ञं।

पुनाति पुणतिस्मा वा ञोओत्ताभावो च निपच्चन्ते। पुनाति, पुणति सुन्दरत्तं करोतीति वा पुञ्ञं=कुसलं।

५१. अर हाञ्ञो हास्स हिर च।

अर-गमने, वा-चागे, एतेहि अञ्ञो होति, हास्स हिरञ्चादेसो। अरीयते गम्यतेति अरञ्ञं=वनं। जहाति सत्तानं हीनत्तन्ति हिरञ्ञं=धनं, सुवण्णञ्च।

(इति चवग्गपच्चयविधानं)।

५२. किर तरा कीटो।

किर-विकिरणे, तर-तरणे, एतेहि, कीटो होति। सोभेतुमेत्थ रतनानि विकिरीयन्तीति किरीटं=मकुटं। तरइति निद्देसा

अस्स इत्तं, तरन्ति यन्ति सुरूपत्त मनेनाति तिरीटं=वेट्ठनं।

५३. सकादीह्यटो।

सक-सत्तियं, कस-गमने, कर-करणे, मक्क इति सुत्तियो धातु, देव-देवने, कम-इच्छायं, एवमादिहि अटो होति। सण्णोति भारं वहितुन्ति सकटो=यानं। अकसि निरोजत्तं अगमीति कसटं=निरोजं। करोति अमनापन्ति करटो=काको। मक्कति चलतीति मक्कटो=वानरो। देवीयति पूजीयतीति देवटो=इसि। कमति इच्छति आरोहत्थन्ति कमटो=वामनो।

५४. मकुटावाट कवाट कुक्कुटा।

एते सद्दा निपच्चन्ते। मंकिस्मा उटो, निग्गहीतलोपो च, मंकेति सोभेतीति मकुटं=किरीटं। अवतिस्मा आटण, अव्यते खञ्ञतेति आवाटो=कासु। कु-सद्देतीमस्मा आटो, ओअवादेसा यथायोगं, कवति रवतीति कवाटं=द्वारपिधानं। कुक वक-आदानेतीमस्मा कुटक, कुकति गोचरमाददातीति कुक्कुटो=तम्बचूळो।

५५. कमुस कुस कसा ठो।

कम-इच्छायं, उस-दाहे, कुस-अक्कोसे, कस-गमने, एतेहिठो होति, निग्गहीतवग्गन्ता, ओदनादीनि कामेतीति कण्ठो=गलो। ओक्कपररूपादीनि, ओदनादीसु उण्हेन उसीयती ति ओट्ठो=दन्तच्छदो, करभो च। कुसीयति अक्कोसीयतीति कोट्ठो=धञ्ञनिलयो। कसति याति विनासन्ति कट्ठं=दारु।

५६. कुट्ठादयो।

कुट्ठआदयो सद्दा ठन्ता निपच्चन्ते। कुसिस्मा ठो, ओत्ताभावो च, कुसीयति अक्कोसीयतीति कुट्ठं=छविरोगो। कुण-सद्दे, पररूपाभावो ओत्ताभावो च, कुणति नदतीति कुण्ठो=अतिखिणो, कुणीयति अक्कोसीयतीति कुण्ठो= छिन्नहत्थपादादिको। दंसिस्स दा, दंसति एतायाति दाठा=दन्तविसेसो। कमिस्स अक च। कामीयाति दीनेतीति कमठो=भिक्खाभाजनं, वामनो, कुम्मो च। फस्सिस्स फुटो, फस्सीयतीति फुट्ठो=फस्सो, एवमञ्ञेपि।

५७. वर करा अण्डो।

वर-वरणे, कर-करणे, एतेहि अण्डो होति। अत्तनि पेफं वारयतीति वरण्डो=मुखरोगो। करीयतीति करण्डो=भण्डविसेसो।

५८. मनन्ता डो।

मकार नकारन्तेहि क्रियत्थेहि बहुलं डप्पच्चयो होति। सम-उपसमे, समनं सण्डं=समूहो। कम-पदविक्खेपे, कमति यातीति कण्डो=सरो, परिच्छेदो च, दम-दमने, दमन्त्व्यनेनाति दण्डो=निग्गहो। अम गम-गमने, अमन्ति उप्पज्जन्ति एत्थाति अण्डो=पक्खिपसवो, कोसो च। गच्छति सूनभावन्ति गण्डो=ब्याधि, वदनेकदेसो च। रमु-कीळायं, रमन्ति एत्थाति रुण्डा=विधवा। मन-ञाणे, मञ्ञन्ति एतेनाति मण्डो=ओदनादिनिस्सावो। खन खण=अवदारणे, खञ्ञतीति

खण्डो=उच्छुविकार विसेसो। लम-हिंसायं, लमति हिंसति सुचिभावन्ति लण्डो=वच्चं, एवमञ्ञेपि।

५९. कुण्डा दयो।

कुण्डआदयो डन्ता निपच्चन्ते। कम मन तनानं अस्स उत्तं, कामीयतीति कुण्डं=भाजनं। मञ्ञति हिताहितन्ति मुण्डो= छिन्नकेसो। तनोति एतेनाति तुण्डं=लपनं। ईर-खेपे, एरंआदेसो। ईरति कम्पतीति एरण्डो=ब्यग्घपुच्छो, सि-सेवायं, सिस्स खमुक, सुगन्धं सेवतीति सिखण्डो=चूळा, एवमञ्ञेपि।

६०. तिज कस तस दक्खा किणो जस्स खो च।

तिज-निसाने, कस-गमने, तस-पिपासायं, दक्ख-वुद्धियं, एतेहि किणो होति, जस्स खो च, तेजयित्थाति तिखिणं=निसितं। कसति पवत्ततीति कसिणं=असेसं। तसनं तसिणा=तण्हा। दक्खति वुद्धिं गच्छति एतायाति दक्खीणा=कुसलं।

६१. वीआदितो णि।

वी-तन्तसन्ताने, सि-सेवासं, सू-पस्सवने, दु-गमने, की-दब्बविनीमये, सा-तनुकरणावसानेसु, एवमादीहि णि होति। वीयतीति वेणि=केसकलापो। सेवनं सेणि=सजातीनं कारूनं समूहो। निपुब्बो, निसेवीयतीति निसेणि=सोपानं। सवति पस्सवतीति सोणि=कटि। दवति वहतीति दोणि=कट्ठम्बुवाहनी, नावा च। नदादिपाठा विम्हि सोणी दोणी तिपि होति। कयनं, कीयते एतायाति वा केणि=कयो साति दुक्खं तनुं करोतीति साणि=तिरोकरणी, एवमञ्ञेपि।

६२. गहादीह्यणि।

गह-उपादाने, अर-गमने, धर-धारणे, सर-गतियिंसा चिन्तासु, तर-तरणे, एवमादीहि अणिप्पच्चयो होति। गण्हातीति गहणि=असितादिपाचको अग्गि। अरीयति गमीयतीति अरणि=अग्गिमन्थनकट्ठं। धारेतीति धरणि=मही। सरीयति गमीयतीति भरणि=मग्गो। तरन्त्यनेनाति तरणि=नावा, सूरियो च।

६३. रीवीभाहि णु।

री-पस्सवने, वी वा-गमने, भा-दित्तियं, एतेहिणु होति। रीयति पस्सवतीति रेणु=रजो। वेति पवत्ततीति वेणु=वेळु। भाति दिब्बतीति भाणु=रंसि।

६४. खाण्वा दयो।

खाणुआदयो णुअन्ता निपच्चन्ते। खण खन-अवदारणे, णस्स आ, खञ्ञति अवदारीयतीति खाणु=छिन्नसाखो रुक्खो। जन-जनने, नस्स वा आत्तं, जायति गमन मनेनाति जाणु, जण्णु=जङ्घोरूनं सन्धि। हर-हरणे, एक, हरीयतीति हरेणु=गन्धदब्ब, एवमञ्ञेपि।

६५. क्वादितो णो।

कु-सद्दे, सु-सवने, दु-गमने, वर-वरणे, कर-करणे, पण-ब्यवहारथुतिसु, ता-पालने, ली-निलीयने, एवमादीहि णो होति। कवति नदति एत्थाति कोणो=अस्सि, वीणादिवादनदण्डो च। सुणोतीति सोणो=सुनखो, नरो च। दवति पवत्ततीति दोणो=परिमाणविसेसो। विरूपत्त वारेतीति वण्णो=नीलादि। सवनं करोतीति कण्णो=सवनं। पणीयति वोहरीयतीति पण्णो=पलासो। लायतीति ताणं=रक्खा। निलीयन्ति एत्थाति लेणं=निलीयनट्ठानं।

६६. सुवीहि णक।

सु-सवने, वी-तन्तसन्ताने, एतेहि णक होति। सुणोतीति सुणो=सुनखो। वीयतीति वीणा=वल्लकी।

६७. तिणादयो।

तिणआदयो णकन्ता निपच्चन्ते। तिज-तेजने, जलोपो, तेजेति एतेनाति तिणं=बीरणादि। ली लिह साद क्लेदानं लो लवा, लीयति रसतो सब्बत्थ अल्लीयतीति लोणं लवणं, लेहीयतीति लोणं लवणं, सादीयतीति लोणं लवणं, क्लेदयतीति लोणं लवणं, गमिस्स ओ, गच्छतीति गोणो=गो। हर-हरणे, णस्सञ्जि, हरीयतीति हरिणो=मिगो। ईर-कम्पने, रस्सत्तं, णस्स ञिच, अत्तनो लूखभावे सम्पत्ते ईरति कम्पतीति इरिणं=ऊसरं। थु-अभित्थवे, दीघो, अभित्थवीयतीति थूणं=नगरं, थूणो=घरत्थम्भो, एवमञ्ञेपि।

६८. रवण वरण पूरणा दयो।

रवण वरण पूरणा दयो अणप्पच्चयेन सिद्धा। रवतीति रवणो=कोकिलो। वारेतीति वरणो=पाकारो। पूरीयते अनेनाति पूरणो=परिपूरी।

(इति टवग्गपच्चयविधानं)।

६९. पावसा अति।

पा-रक्खणे, वस-निवासे, एतेति अति होति। पुब्बसरलोपो, पाति रक्खतीति पति=सामी, वसन्ति एत्थाति वसति=गेहं।

७०. धा हि सि तन जन जर गम सचा तु।

धा-धारणे, हि-गतियं, तन-वित्थारे, जन-जनने, जर-वयो-हानियं, अम गम-गमने, सच-समवाये, एतेहि तु होति। धारेतीति धातु=गेरुकादि। हिनोति पवत्ताति फलं एतेनाति हेतु=कारणं, सेवीयति जनेहीति सेतु=बन्धति (पद्धति)। तञ्ञतेति तन्तु=सुत्तं। जनीयते कम्मकिलेसेहीति जन्तु, जायति कम्मकिलेहीति वा जन्तु=सत्तो। जीरतीति जत्तु=अंससन्धि। गच्छतीति गन्तु=गमिको, सचति समेतीति सत्तु=यवादिचुण्णं।

७१. अरिस्सुट च।

अर-गमनेतीमस्मा तु होति, अरिस्स उट आदेसोच। अरति पवत्ततीति उतु=हेमन्तादि,

७२. पित्वादयो।

पितुआदयो सद्दा तुअन्ता निपच्चन्ते। पा-रक्खणे, आस्स इत्तं, पाति रक्खतीति पिता=जनको। पातिस्सेवादिस्स मो, पायेतीति माता=जननी। भा-दित्तियं, भातीति भाता=सोदरियो। धा-धारणे, आस्स ईत्तं, धारीयतीति धीता=पुत्ती। दुह-पपूरणे, ओत्ताभावो, तुस्स ञ्छिच। दुहति पसवे पपूरेतीति दुहिता=पुत्ती। जन-जनने, अस्स आत्तं, मा चान्तादेसो। पपुत्ते जनेतीति जामाता=दुहितुपति। नह-बन्धने, नहीयति बन्धीयति पेमेनाति नत्ता-पपुत्तो। हु-हवने, हवति पूजेतीति होता=यञ्ञको। पू-पवने, पुनाति आयतिं भवं पवित्तं करोतीति पोता=सोयेव।

७३. जन करा रतु।

जन-जनने, कर-करणे, एतेहि रतु होति, रकारो अन्तसरादिलोपत्थो। जायतीति जतु=लाखा। करीयतीति कतु=सयूपो यञ्ञो।

७४. सका उन्तो।

सक-सत्तियमिच्चस्मा उन्तो होति। सक्कोतीति सकुन्तो=पक्खी।

७५. कपा ओतो।

कप-अच्छादने इच्चस्मा ओतो होति। कपतीति कपोतो=पारेवतो। टो तस्स वा होति कपोटो=सोयेव।

७६. वसादीह्यन्तो।

वस-निवासे, रुह-जनने, भद्द-कल्याणे, नन्द-समिद्धियं, जीव-पाणधारणे, एवमादीति अन्तो होहि। वसन्ति एतस्मिं काले कीळापसुताति वसन्तो=उतु। रुहति जायतीति रुहन्तो=रुक्खो, एवंनामको मिगराजा च। भद्दिस्स संयोगादिलोपो, भजति कल्याणधम्मन्ति भदन्तो=पब्बजितो। नन्दति एतायाति नन्दन्ती=सखी, नदादिपाठा वी, एवमुपरि च। जीवन्ति एतायाति जीवन्ती=ओसधि। सवतीति सवन्ती=नदी। रोदापेतीति रोदन्ती=ओसधि। अवति रक्खतीति अवन्ती=जनपदो।

७७. हिसीनं मुक च।

हि-गतिय, सी-सये, एतेहि अन्तो होति मुक च। ककारो अन्तावयवत्थो, हिमं हिनोति पवत्तति एतस्मिन्ति हेमन्तो=उतु, सयन्ति एत्थ ऊका कुसुमादयो चाति सीमन्तो=केसमग्गो।

७८. हर रुह कुला इतो।

हर-हरणे, रुह-जनने, कुल-पत्थारे, एतेति इतो होति। अत्तनो सिनेहं हरतीति हरितो=वण्णविसेसो। रुहतीति रोहितो=मच्छविसेसो। रुहति सरीरे ब्यापनवसेनाति रोहितं, रस्स लत्ते लोहितं=रुधिरं। अत्तनो गुणं कुलति पत्थरतीति कोलितो=दुतियग्गसावको, एवं नामको मरु च।

७९. भरादीह्यतो।

भर रंज यज पच एवमादीहि अतो होति। भरतीति भरतो=नटो। निग्गहीतलोपो, रञ्जन्ति एत्थाहि रजतं=सज्झं। यजितब्बोति यजतो=अग्गि। पचतीति पचतो=सूपकारो।

८०. किरा दीह्यातक।

किर-विकिरणे, अल-बन्धने, चिल-वसने, एवमादीहि आतक होति, किरतीति किरातो=सवरो, रस्स लक्के कि-लातो=सोव। अलतीति अलातं=उम्मुकं। चिलतीति चिलातो=मलच्छजाति।

८१. अमादीह्यत्तो।

अम मा वर कलादीहि अत्तो होति। अमति कालन्तरं पवत्ततीति अमत्तं=भाजनं। पुब्बसरलोपो, मानं मत्तं=पमाणं परिच्छेदो च। वरन्तुनेनाति वरत्ता=योत्तं। कलति परिच्छिन्दतीति कलत्तं=भरिया।

८२. वादीहि तो।

वा-गमने, ता-पालने, तन-वित्थारे, दम-उपसमे, अ-मगमने, सि-सेवायं, सु-सवने, पू पवने, गुप-गोवने, युज-संयमे, गह-उपादाने, अत-सातच्चगमान, खिप-पेरणे, एवमादीहि तो होति। वायतीति वातो=वायु। तायतीति तातो=पिता। तनुतेति तन्तं=तन्तवो। दमतीति अन्तो=दसनो। अमति यातीति अन्तो=ओसानं, कोट्ठाससमीपावयवा च। सेवीयतीति सेतो=धवलो। सुणन्तुनेनाति सोतं=सवनं। सवतीति सोतो=जलप्पवाहो। पुनीयतीति पोतो=बालो। गोपीयतीति गोत्थं=कलादि। योजन्त्यनेनाति योत्तं=रज्जु। ममायन्तेहि गय्हतीति गत्तं=सरीरं। अबाधं निरन्तरं अतति पवत्ततीति अत्ता=मनादि। खिपीयति एत्थाति खेत्तं=केदारं।

८३. घरादीहि तक।

गर घर-सेचने, सि-सेवायं, दू-परितापने, मिद-सिनेहे, चित-सञ्चेतने, पुस-पोसने, विद-लाभे, एवमादीहि तक ४ होति, घरति सिञ्चतीति घतं=सप्पि। सेवीयतीति सितो=सेतो। दुब्बचत्ता दूयति परितापेतीति दूतो=पेसरकारो। मिज्जति सिनेहतीति मित्तो=सुहदयो। चिन्तेतीति चित्तं=विञ्ञाणं चित्तकम्मादि च। पोसीयतीति पुत्तो=अत्तजो। विन्दन्ति पीति मनेनाति वित्तं=धनं। वर-वरणसम्भत्तीसु, वरणं वत्तं=ब्रह्मचरियादि।

८४. नेत्तादयो।

नेत्तआदयो तक परा निपच्चन्ते। नी-पापने, एत्तं, तुक च निपातना। नयति पापेतीति नेत्तं=नयनं, नेता च। कर-करणे, अस्सु, करणं कुत्तं=किरिया। कमिस्स अस्सु, कमति यातीति कुन्तो=आवुधविसेसो। रम-कीळायं, सुपुब्बो, सुस्सनिच्चं दीघो। सुट्ठु रमणं, सुट्ठु रमतीति वा सूरतो=सुखसंवासो। मिहिस्सइस्सु, मिहति सिञ्चतीति मुत्तं=पस्सावो। पाल=रक्खणे आस्स रस्सत्तं, ञिच। पालीयतीति पलितं=केसलोमानं जराय कतं सेतत्तं, सद्धादित्ता अकारे तं यस्स अत्थि सो पलितो=पुमा, पलिता=इत्थी। म्हिस्स सि, मिहि च, म्हयनं सितं=मन्दहसितं, म्हयनं मिहितं=तदेव, कुस-अक्कोसे तस्स

ईञ, कुसीयति अक्कोसीयतीति कुसीतो=अलसो, सि=बन्धने, दीघो, सेन्ति बन्धन्ति घरावासं एतायाति सीता=नङ्गललेखा, एवमञ्ञेपि।

८५. समादीह्यथो।

सम-उपसमे, दर-दरणे, दम-उपसमे, किलम क्लम-गेलञ्ञे, सप-अक्कोसे, वस-निवासे, आपुब्बो, एवमादीहि अथो होति। समेतीति समथो=समाधि। दरणं दरथो=पीळा। दमनं दमथो=दमो। किलमनं किलमथो=परिस्समो। सपनं सपथो=सच्चकरणं। आवसन्ति एत्थाति आवसथो=घरं।

८६. उपवसा वस्सोट च।

उपपुब्बा वसतिस्मा अथो होति, वस्स ओट चादेसो। उपवसन्ति एत्थाति उपोसथो=तिथिविसेसो, नवमहत्थि कुलञ्च।

८७. रमा थक।

रमतिस्मा थक होति, कानुबन्धकरणसामत्थिया अत कारादोपि मलोपो। रमन्ति कीळन्ति एतेनाति रथो=सन्दनो।

८८. तित्थादयो।

तित्थआदयो थकपरा निपच्चन्ते। तर-तरणे, अस्स इत्तं, पररूपादि, तरन्त्यनेनाति तित्थं=नज्जादिं येनावतरन्ति तं। सिच-रक्खणे, सेचतीति सित्तं=मधुच्छिट्ठं। हस-हसने, हसन्त्यनेनाति हत्थो=करो, नक्खत्ताञ्च। गायतीति गाथा=पज्जविसेसो। अरन्ति पवत्तन्त्यनेनाति अत्थो=धनं। रोगं तुदति पीळेतीति तुत्थं=ओसधं। यु-मिस्सने, दीघो, यवतीति यू- थो=सजातिकानं तिरच्छानानंसमूहो। गुप-गोपने, दीघो, पलोपो, पटिकूलत्ता गोपीयतीति गूथो=वच्चं, एवमञ्ञेपि।

८९. वस मस कुसा थु।

वस-निवासे, मस-आमसने, कुस-अक्कोसे, एतेहि थु होति। वसन्ति एत्थाति वत्थु=पदत्थो। दधिं आमसतीति मत्थु=दधिमण्डो। कुसीयति अक्कोसीयति भेर वनादत्ताति कोत्थु=सिगालो।

९०. सक वसा थि।

सक-सत्तियं, वस-निवासे, एतेहि थि होति। सक्कोति गन्तुमनेनाति सत्थि=ऊरु। वसीयति अच्छादीयतीति वत्थि=नाभिया अधो।

९१. वीतो थिक।

वी वा-गमनेतीमस्मा थिक होति। वीयन्ति गच्छन्ति एतायाति वीथि=आवलि।

९२. सारिस्मा रति।

सारिस्मा ण्यन्ता रथि होति। सारेतीति सारथि=रथ-वाहो।

९३. ता-ता इथि।

ता-पालने, अत-सातच्चगमने, एतेहि इथि होति। तायति पालेतीति तिथि=पटिपदादि, अतति गच्छतीति अतिथि=अब्भागतो।

९४. इसा थी।

इसतिस्मा थी होति। इच्छति इच्छीयतीति वा इत्थी=नारी।

९५. रुद खुद मुद मद छिद सूद सप कमा दक।

एतेहि दक होति। रुदतीति रुद्दो=उमापति। रस्स लत्ते लुद्दो=नेसादो। खुदति असहतीति खुद्दो=नीचो। मोदन्ति एतायाति मुद्दा=सक्खरमङ्गुलियं। मज्जन्ति अस्मिन्ति मद्दो=जनपदो। छिज्जतीति छिद्दं=रन्धं। ऊस्स रस्सत्तं, सूदति सामिकेहि भतिं पक्खरतीति सुद्दो=वसलो। सपन्तुनेनाति सद्दो=सोतविसयो। कामीयतीति कन्दो=मूलविसेसो।

९६. कुन्दादयो।

कुन्दआदयो दकअन्ता निपच्चन्ते। कमिस्स अस्सु, कामीयतीति कुन्दो=पुप्फविधससो, मणिस्स मन, मञ्जतेति मन्दो=जळो। वुणातिस्स बुन, वुणीयति संवरीयतीति बुन्दो=मूलप्पदेसो। निन्द-गरहायं, नलोपो, निन्दीयतीति निद्दा=सोप्पं। उन्द-किलेदने, नलोपो, उन्दति किलेदतीति उद्दो=जलबिळालो। संपुब्बस्स उन्दिस्स च, सम्मा उन्दति किलेदतीति समुद्दो=सागरो। पुल-महत्तहिं साञाणेसु, इमुञ, पुलति हिंसतीति पुलिन्दो=सवरो। एवं-मञ्ञेपि।

९७. ददा दु।

दद-दानेतीमस्मा दु होति। दुक्खं ददातीहि दद्दु=कुट्ठविसेसो।

९८. खनान दम रमा धो।

खन खण-अवदारणे, अन-पाणने, दम-उपसमे, रम-कीळायं, एतेहि धो होति। ञाणेन धञ्ञतेति खन्धो=रासि। अनति जीवति एतेनाति अन्धो=अचक्खुको। दमेतब्बोति दन्धो=जळो, रमन्ति एत्थ सप्पादयोति रन्धं=छिद्दं।

९९. मुद्धा दयो।

मुद्धआदयो धन्ता निपच्चन्ते। मुद-तोसे, ओत्ताभावो, मोदन्ति एत्थ ऊकाति मुद्धा=मत्थको। अर-गमने, अरन्ति यन्ति एत्थाति अद्धा=मग्गो, कालो च, अद्धं=उपद्धं। गिध-अभि कङ्खायं, इस्स अत्तं, गेधतीति गद्धो=गिज्झो। विध-वेधने,

एत्ताभावो, परिवज्झतीति विद्धं=विमलं, एवमञ्ञेपि।

१००. सीतो धुक।

सेतिस्मा धुक होति। सयन्ति एतायाति सीधु=सुराविसेसो।

१०१. वरारकरतरदरयमअज्जमिथसका कुनो।

वर-वरणसम्भत्तीसु, अर-गमने, कर-करणे, तर-तर-णे दर-विदारणे, यम-उपरमे, अज्ज सज्ज-अज्जने, मिथ-सङ्गमे, सक-सत्तियं, एतेहि कुनो होति। ''रा नस्स णो''ति (५-१७१) नस्स णत्तं, वारेतीति वरुणो=एवंनामको इसि, देवराजा, पादपो च। अरति गच्छतीति अरुणो=सूरियो, तस्स सारथि च। परदुक्खे सति साधूनं हदयकम्मनं करोतीति करुणा=दया। बालभावं अतरीति तरुणो=युवा। ''णिणापिन''न्ति (५.१६०) योगविभागा णिलोपो, विदारेतीति दारुणो=कक्खळो। यमेति पावं नासेतीति यमुना=एका महानदी। अज्जति धनसञ्चयं करोतीति अज्जुनो=राजा, रुक्खविसेसो च। मिथो सङ्गमो मिथुनं=पुमित्थियुगळं। सक्कोतीति सकुनो=पक्खी। नदादिपाठा वीम्हि=सकुनी। ''तथनरानंटठ्ठणला''ति (१-२७) वा णत्ते=सकुणो, सकुणि।

१०२. अजा इनो।

अज वज-गमने तीमस्मा इनो होति। अजति विक्कयं यातीति अजिनं=चम्मं।

१०३. विपिनादयो।

विपिनआदयो इनन्ता निपच्चन्ते। वप-बीजनिक्खेपे, अस्स इत्तं, वपन्ति एत्थाति विपिनं=वनं। सुप-सये, सुपन्ति एतेनाति सुपिनं=निद्दा, सुपन्तेन दिट्ठञ्च। तुद-ब्यथने, दस्स हो, तुदति सत्ते पीळेतीति तुहिनं=हिमं। कप्प-सामत्थिये, कप्पति रिपवो विजेतुं समत्थेतीति कप्पिनो=राजा। कम-पदविक्खेपे, अस्स उत्तं, कमन्ति एत्थ मीनादयो पविसन्तीति कुमिनं=मच्छबन्धनोपकरणविसेसो। दा-दाने, देन्ति एतस्मिन्ति दिनं=दिवसो, एवमञ्ञेपि।

१०४. किरा कनो।

किरतिस्मा कनो होति। नस्स णो, किरन्ति विकिरन्तीति किरणा=रंसियो।

१०५. दी जिइमीहि नक।

दी-खये, जि-जये, इ-अज्झेनगतीसु, मी-हिंसायं, एतेहि नक होति। अदेसि खयमगमासीति दीनो=निद्धनो। पञ्चमारे अजिनीति जिनो=बुद्धो। एसि इस्सरत्तमगमासीति इनो=सामी। मीयते हिंसीयतेति मीनो=मच्छो।

१०६. सिधावीवाहि नो।

सि-बन्धने, धा-धारणे, वी वा-गमने, एतेहि नो होति। सेति बन्धतीति सेनो=ससादनो सेना=चमू। धारेतीति

धाना=भज्जितयवो। वेति पवत्ततीति वेनो=हीनजाति। सत्तेसु वाति पवत्ततीति वानं=तण्हा।

१०७. ऊनादयो।

ऊनआदयो नन्ता नीपच्चन्ते। ऊह-वितक्के, हलोपो, ऊहनं ऊनो=अपुण्णो। हि-गतियं, दीघत्तं, हेसि हीनत्तमगमीति हीनो=निहीनो। चि-चये, दीघत्तं, चयन्ति एत्थ रतनानीति चीनो=जनपदो। हनिस्स जघो, हञ्ञतीति जघनं=कटि। ठास्स थे ठाति पवत्ततीति थेनो=चोरो। उन्दिस्स ओदो, उन्दीयतीति ओदनो=अन्नं। अन्नं। रंजिस्स निग्गहीतलोपो, अक च, रंजते अनेनाति रजनं=रागो। रञ्जन्ति एत्थाति रजनी=रत्ति। पदिस्स जुनुक, पज्जति गच्छतीति पज्जुन्नो=इन्दो, मेघो च। गमिस्स गङ, गच्छन्ति एत्थ विहङ्गादयोति गगनं=अन्तलिक्खं, एवमञ्ञेपि।

१०८. वी पता तनो।

वी वा-गमने, पत पथ-गमने, एतेहि तनो होति। वेति पवत्तति एतेनाति वेतनं=भति। पतन्ति एत्थाति पत्तनं=नगरं।

१०९. रमा तनक।

रम कीळायमिचस्मा तनक होति। ‘‘गमादिरानं लोपोन्तस्सा’’ति (५.१०९) मलोपो, रमन्ति एत्थाति रतनं=मणि आदी, हत्थमत्तञ्च।

११०., सू भाहि नुक,

सू-पसवे, भा-दित्तियं, एतेहि नुक होति। पसवीयतीति सूनु=पुत्तो। भाति दिब्बतीति भानु=सूरियो।

१११. धास्से च।

धा-धारणेतीमस्मा नुक होति, धास्स ए च। धारेतीति धेनु=गावी।

११२. वत्ता टाव धमासेह्यनि।

वत्त-वत्तने, अट-गमनत्थो, अव-रक्खणे, धम-सद्दे, अस-खेपने, एतेहि अनि होति। वत्तन्ति एतेनाति वत्तनि=तसरदण्डं। वीम्हि वत्तनी=पन्थो। अटते गम्मतेति अटनि= मञ्चङ्गो। सत्ते अवति रक्खतीति अवनि=मही। धमन्ति एतेन वीणादयोति धमनि=सीरा। दण्डत्थाय असीयते खिपीयतेति असनि=कुलिसं।

११३. युतो नि।

यु-मिस्सनेतीमस्मा नि होति। यवन्ति सत्ता अनेन एतीभावं गच्छन्तीति योनि=भगं, अण्डजादियोनि च।

(इति तवग्गपच्चयविधानं)।

१११४. चमाप पा वपा पो।

चम-अदने, अप-पापुणने, पा-रक्खणे, वप-बीजनिक्खेपे, एतेहि पो होति। चमन्ति अदन्ति एत्थाति चम्पा=नगरं, अपेसि ईसकमत्तमगमासीति अप्पं=अबहु। अपायं पाति रक्खतीति पापं-किब्बिसं। वपन्ति एत्थाति वप्पो=केदारं।

१११५. यु थु कूनं दीघो च।

यु-मिस्सने, थु-अभित्थवे, कु-सद्दे, एतेहि पो होति, एतेसं दीघो च। दीघविधानसामत्थिया ओत्ताभावो। यवन्ति सह वत्तन्ति एत्थाति यूपो=यञ्ञयट्ठि, पासादो च। थवीयतीति थूपो=चेतियं। कवन्ति नदन्ति एत्थाति कूपो=उदपानो।

१११६. खिप सुप नीसू पूहि पक।

खिप-पेरणे, सुप-सये, नी-नये, सू-पसवे, पू-पवने, एतेहि पक होति। खपति खयं गच्छतीति खिप्पं=सीघं। सुपन्ति एत्थ सुनखादयोति सुप्पं=पप्फोटनं। नयन्ति एतस्मा फलन्ति निपो=रक्खो। सवति रुचिं जनेतीति सूपो=ब्यञ्जनविसेसो। पवीयति मरिचजीरकादीहि पवित्तं करीयतीति पूपं=खज्जकं।

१११७. सिप्पादयो।

सिप्पआदयो पकअन्ता निपच्चन्ते। सपिस्स अस्सइत्तं, सपति अनेनाति सिप्पं=कला। वपिस्स अस्सि, विज्जं वपतीति विप्पो=ब्राह्मणो। वस्स बो, वपति बहि निक्खमति हदयङ्गतसोकेनाति बप्पं=अस्सु। छुप-सम्फस्से, उस्से, छुपति अनेनाति छेप्पं=नङ्गुट्ठं। रुप=रुप्पने, पलोप दीघा, रुप्पति विकारमापज्जतीति रूपं-भूतभूतिकं, एवमञ्ञेपि।

१११८. सासा अपो।

सास अनुसिट्ठियमिच्चस्मा अपो होति। सासीयन्ति एतेनाति सासपो=वीहिविसेसो।

१११९. विटपादयो।

विटपआदयो अपन्ता निपच्चन्ते। वट-वेट्ठने, अस्स इत्तं, वटति वेट्ठति एतेनातिविटपो=गुम्बविसेसो, कुथ-पूतिभावे, थस्स णो, अकुथि पूतिभावमगमीति कुणपो=मतको। मण्ड=भूसने, मण्डेति जनं, मण्डीयति जनेहीति वा मण्डपो=जनालयो, एवमञ्ञेपि।

११२०. गुपा फो।

गुपिस्मा फो होति। गोपीयतीति गोप्फो=चरणगण्ठि।

११२१. गरसरादीहि बो।

गरसरादीहि बो होति। गरति अञ्ञे अनेन पीळेतीति गब्बो=अभिमानो। सरति पवत्ततीति सब्बो=सकलो।

फलकामेहि जनेहि अमीयति गमीयतीति अम्बो=चूतो। पुत्तेन अमीयति गमीयतीति अम्बा=माता।

१२२. निम्बादयो।

निम्बआदयो बन्ता निपच्चन्ते। नमिस्स अस्सि, नमति फलभारेनाति निम्बो=अरिट्ठो। वमिस्स वस्स बित्तं। पित्तादयो वमति उग्गिरतीति बिम्बं=सरीरं। कुसिस्स अमुक, तित्तेन कुसीयति अक्कोसीयतीति कोसम्बो=रुक्खो। कदतिस्स अमुक, कदन्ति एतेन द्वारादीनीति कदम्बो=रुक्खो। कुटिस्स उमुक, जनेहि कोटीयति पवत्तीयतीति कुटुम्बं=चतुप्पदो, खेत्तं, घरं, कलत्तं, दासा च। कण्डिस्स कुडु। तण्डुलादयो अनेन कण्डन्ति परिच्छिन्दन्तीति कुडुबो=मानं, एवमञ्ञेपि।

१२३. दरा बि।

दर विदारणेतीमस्मा बि होति। ओदनादीनि दारेन्ति जतायाति दब्बि=कटच्छु, वीम्हि दब्बी।

१२४. कर सर सल कल वल्ल वसा अभो।

कर-करणे, सर-गति हिंसाचिन्तासु, सल-गमनत्थो, कल-सङ्ख्याने, वल वल्ल-संवरणे, वस-निवासे, एतेहि अभो होति। करोतीति करभो=ओट्ठा, पाणिप्पदेसो च। सरति गच्छतीति सरभो=मिगविसेसो। सलति गच्छतीति सलभो=पटङ्गो। कलीयति परिमीयति वयसाति कलभो=हत्थिपोतको। तदमिनादिपाठा ळत्ते कळभो=सोव। वल्लेति संवरणं करोतीति वल्लभो=पियो। वसन्त्यनेनाति वसभो=पुङ्गवो।

१२५. गदा रभो।

गदतिस्मा रभो होति। गदतीति गद्रभो=खरो।

१२६. उसरासा कभो।

उस-दाहे, रास-सद्दे, एतेहि कभो होति। उसति पटिपक्खे दहतीति उसभो=सेट्ठो। रासति नदतीति रासभो=गद्रभो।

१२७. इतो भक।

इ इतिस्मा भक होति। एति गच्छतीति इभो=हत्थी।

१२८. गरावा भो।

गर घर-सेचने, अव-रक्खने, एतेहि भो होति। गरति बहि निक्खमनवसेन सिञ्चतीति गब्भो=पसवो, ओवरको च। अवति सत्ते रक्खतीति अब्भं=मेघो।

१२९. सोब्भादयो।

सोब्भआदयो भन्ता निपच्चन्ते। सदतिस्स अस्स ओत्तं, सीदन्ति एत्थाति सोब्भं=विवरं, सोब्भो=जलासयविसेसो। कमिस्स अस्सु, कामीयतीति कुम्भो=दसम्बणमत्तो, घटो च। (केन जलेन उम्भीयति पूरीयतीति वा कुम्भो=घटो।) कुसिस्स उमुक, कुसति अव्हायतीति कुसुम्भं=महारजनं। कुसुम्भो=कनकं, एवमञ्ञेपि।

१३०. उस कुस पद सुखा कुमो।

उसादीहि कुमो होति। उसति दहतीति उसुमं=उण्हं। कुसति अव्हायतीति सुकुमं=पुप्फं। पज्जति देवपूजादिं यातीति पदुमं=पङ्कजं। सुखयतीति सुखुम=अणु।

१३१. वटुमादयो।

वटुमआदयो कुमन्ता निपच्चन्थे। वजिस्स-न्तस्स टो, वजन्ति एत्थाति वटुमं=पथो। सिलिसस्स लिस्से, सिलिस्सतीति सिलेसुपं=सेम्हं। कमिस्स कुङ्कादेसो, कामीयतीति कुङ्कमं=कस्मीरजं, एवमञ्ञेपि।

१३२. गुधा उमो।

गुध परिवेट्ठनेतीमस्मा उमो होति। गुधति परिवेट्ठतीति गोधुमो=धञ्ञविसेसो।

१३३. पठ चरा अमिमा।

पठतिचरतिस्मा अम इमा होन्ति यथाक्कमं। पट्ठीयति उच्चारीयति उत्तमभावेनाति पठमं=सेट्ठं। चरति हीनत्तं यातीति चरिमं=पच्छिमं।

१३४. हिधूहि मक।

हि-गतियं, धू-कम्पने, एतेहि मक होति। हिनोति पवत्तहीति हिमं=तुहिनं। धुनाति कम्पतीति धूमो=अग्गिपसवो।

१३५. भीतो रीसनो च।

भी-भयेतीमस्मा रीसनो होति मकच। अन्तसरादिलोपो, भायन्ति एतस्माति भीसनो=भयानको। भीमो=सोव।

१३६. खी सु वी या गाहि सा लू खु हु मर धर घर जमाम समा मो।

खी-खये। सु-सवने, वी-तन्तसन्ताने, या-पापुणने, गा-सद्दे, हि-गतियं, सा-तनुकरणावसानेसु, लू-छेदने, खु-सद्दे, हु-हवने, मर-पाणचागे, धर-धारणे, कर-करणे, घर-सेचने, जम-अदने, अम गम-गमने, सम-उपमे, एतेहि धातूहि मो होति। खेपनं निरुपद्दवकरणताय खेमो=निरुपद्दवो। सुनोतीति सोमो=चन्दो। वायन्ति एतेनाति वेमो=तन्तवायोपकरणं। यातीति यामो=दिनस्स छट्ठो भागो, अट्ठमो वा। गायन्ति एत्थाति गामो=संवसथो। हिनोति पवत्ततीति हेमं=सुवण्णं। साति सुन्दरत्तं तनुं करोतीति सामो=काळो। लूयतेति लोमं=तनुरुहं। खूयते उत्तमभावेनाति खोमं=अतसि। हवनं, हूयते वा होमं=हुति। मरन्त्यनेनाति मम्बं=यस्मिं ताळिते न जीवति तं। अत्तानं धारेन्ते अपाये वट्टदुक्खे च अपतमाने कत्वा धारेतीति

धम्मो=परियत्यादि। करणं, करीयतीति वा कम्मं=सुखदुक्खफलादि। सेदो पग्घरति अनेनाति घम्मो=निदाघो। जमेति अभक्खि तब्बं अदतीति जम्मो=निहीनो, अनिसम्मकारी च। अमेति पेमेन पुत्तकेसु पवत्ततीति अम्मा=माता। समेन्ति अनेनाति सम्मा=पियसमुदाचारो।

१३७. अस्मादयो।

अस्मआदयो मन्ता निपच्चन्ते, पररूपादीनमभावो निपातना। अस-खेपने, अस्सतेति अस्मा=पासाणो। भस-भस्मीकरणे, भसति पक्खरतीति भस्मा=छारिका। उस-दाहे, उसति दहतीति उस्मा=तेजोधातु। विस-पविसने, पविसन्ति एत्थाति वेस्मं=घरं। भी-भये, मस्स सुञ, भायन्ति एतस्माति भेस्मा=भयानको। असतिस्स धङ, अस्सति जनेहि चजीयतीति अधमो=निहीनो। करोतिस्स अस्स उत्तं, करोतीति कुम्मो=कच्छपो। एवमञ्ञेपि।

१३८. नीतो मि।

नयतिस्मा मि होति। नयतीति नेमि=चक्कन्तं।

१३९. ऊमि भूमिनिमि रस्मि।

एतेसद्दा मिअन्ता निपच्चन्ते। ऊह-वितक्के, हलोपो, ऊहन्ति वितक्केन्ति एतेनाति ऊमि=तरङ्गो। भू-सत्तायं ओत्ताभावो, भवन्ति एत्थाति भूमि=मही। नि-पापने, एत्ताभावो, सुगतिं नेति पापेतीति निमि=राजा। रस-अस्सादने, पररूपाभावो, रसन्ति सत्ता एतायाति रस्मि=रज्जु।

(इति पवग्गपच्चयविधानं)।

१४०. माछाहि यो।

मा-माने-छा-छादने, एतेहि यो होति। मेति परिमेति अञ्ञेन उत्तमेन गुणेन अत्तनो अगुणन्ति माया=सन्तदोस पटिच्छादन लक्खणा। छेति छिन्दति संसयन्ति छाया=पटिबिम्बं।

१४१. जनिस्स जा च।

जनिस्मा यो होति, जनिस्स जा च, जनेतीति जाया=भरिया।

१४२. हदया दयो।

हदयआदयो यन्ता निपच्चन्ते। हरिस्स दङ, हरतीति हदयं=चित्तं, मनोधातु मनोविञ्ञाणधातु निस्सयो च, तनिस्सअक, अत्तनि पेमं तनोतीति तनयो=पुत्तो। सरतिस्स सुरि, सरति गच्छतीति सूरियो=आदिच्चो। हरतिस्स म्मिङ, सुखमाहरतीति हम्मियं=मुण्डच्छदनपासादो। कस-गमने, कसस्स अलक, अस्स इ च, कसति वुद्धिं यातीति किसलयं=पल्लवं, एवमञ्ञेपि।

१४३. खी सि सि नी सी सु वी कुसूहि रक।

खी-खये, सि-सेवायं, सि-बन्धने, नी-पापने, सी-सये, सु-सवने, वी वा-गमने, कु-सद्दे, सू-पसवे, एतेहि रक होति। खयति दुहनेनाति खीरं=पयो। कुसुमादीहि सेवीयतीति सिरो=मुद्धा। सेति सरीरं बन्धतीति सिरा=देहबन्धनी। नेति, परेहिवानीयतीति नीरं=जलं। सयतीति सीरो=हलं। अनिट्ठफल- दायकत्तं सवतीति सुरा=मदिरा। सुणोति उत्तमगीतादिन्ति सुरो=देवो। वेति उत्तमभावं यातीति वीरो=विक्कन्तो। कवति नदतीति कुरं=भत्तं। भयट्टितानं पठमकप्पियानं सूरत्तं पसवतीति सूरो=सूरियो, विक्कन्तो च।

१४४. हि चि दु मिनं दीघो च।

हि-गतियं, चि-चये, दु-गतियं, मि-पक्खेपने, एतेहि रक होति, दीघो चान्तस्स। हिनोति पवत्ततीति हीरं=तालहीरादि। चयतीति चीरं=वक्कलं। दूयति दुक्खेन गमीयतीति दूरं=अनासन्नं। मीयते पक्खीपीयतेति मीरो=समुद्दो।

१४५. धा तानमी च।

धा-धारणे, ता-पालने, एतेहि रक होति, ई चान्तादेसो। धारेतीतिधीरो=धितिमा। जलं तायतीति तीरं=तटं।

१४६. भद्रायो।

भद्रआदयो रकअन्ता निपच्चन्ते। भद्द-कल्याणे, दलोपो पररूपाभावो, भजीयतीति भद्रं=कल्याणं। भी-भये, नदादिपाठा वी, भायन्ति एतायाति भेरी=दुन्दुभि। चित-सञ्चेतने, विपुब्बो, विचिन्तितब्बन्ति विचित्रं=नानाकारं, या-पापुणने, रस्स तुञ, गमनं यात्रा=यानं। गुप-गोपने, उस्स ओ, पस्स तञ्च गोपीयतीति गोत्रं=कुलादि, भस-भस्मीकरणे, रस्स तुञ, भसति भक्खं करोति तोयाति भस्ता-कम्मारगग्गरी। उस=दाहे, सलोपो, सोकेन ताळिते उसति दहतीति उरो=सरीरेकदेसो, एवमञ्ञेपि।

१४७. मन्दङ्क ससास मथ चता उरो।

मन्द-जळत्ते, अङ्क-लक्खणे, सस-गतिहिंसापाणनेसु, अस-खेपने, मथ मन्थ-विलोळने, चत-याचने, एतेहि उरो होति। अमन्दि असुन्दरत्ता जळत्थमगमीति मन्दुरा=वाजिसाला। अङ्कीयति लक्खीयतीति अङ्कुरो=बीजपसवो। ससति हिंसतीति ससुरो=जयम्पतीनं पिता। असीयित्थाति असुरो=दानवो, अरीहि मथीयति आलोळीयतीति मथुरा=नगरं। चतीयतीति चतुरो=दक्खो।

१४८. विधुरादयो।

विधुरआदयो उरन्ता निपच्चन्ते। विध-वेधने, एत्ताभावो, वेधति हिंसतीति विधुरो=विरुद्धो। उन्द-किलेदने, उन्दति किलेदतीति उन्दुरो=आखु। मंक-मण्डने, निग्गहीतलोपो, मङ्कति अनेन अत्तानं अलङ्करोतीति मकुरो=आदासो, रथो, कक्को, मच्छो च। कुक वक-आदाने, कस्स द्वित्तं। कुकति सलादयो आददातीति कुक्कुरो=सा। मङ्ग-मङ्गल्ये, अमङ्गि पसत्थमगमीति मङ्गुरो=मच्छविसेसो, एवमञ्ञेपि।

१४९. तिम रुह रुध बध मद मन्द वजाज रुच कसा किरो।

तिम-तेमने, रुह-जनने, रुध-आवरणे, बध-बाधने, मदउम्मादे, मन्द-मोदनथुतिजळत्तेसु, वज अज-गमने, रुच-दित्तियं, कस-गमने, एतेहि किरो होति। तेमेतीति तिमिरं=अन्धकारं, आपो च। रुहति पवत्ततीति रुहिरं=लोहितं। जीवितं रुन्धतीति रुधिरं=तदेव। बाधीयतीति बधिरो=सोतविकलो। जना मज्जन्ति एतायाति मदिरा=सुरा। मोदन्ति एत्थाति मन्दिरं= घरं। वजतीति वजिरं=कुलिसुं। अजन्ति गच्छन्ती एत्थाति अजिरं=अङ्गणं घरविसयोकासो च। रोचतीति रुचिरं=मनुञ्ञं। कसीयति दुक्खेन गमीयतीति कसिरं=किच्छं।

१५०. थिरादयो।

थिरआदयो किरन्ता निपच्चन्ते। ठा-गतिनिवत्तियं, ठस्स थत्तं, ठाति पवत्ततीति थिरं=चिरट्ठायी। इस सिंस-इच्छायं, निग्गहीतलोपो, इच्छीयतीति सिसिरो=उतुविसेसो। अद खाद-भक्खने, आस्स रस्सत्थं, खादीयति पाणकेहीति खदिरो=दन्तधावनो, एवमञ्ञेपि।

१५१. दद गरेहि दुरभरा।

दद-दाने, गर घर-सेचने, एतेहि यथाक्कमं दुरभरा होन्ति। अन्तानं ददातीति दद्दुरो=भेको। गरति सिञ्चतीति गब्भरं=गुहा।

१५२. चर दर जर गर मरेहि ते।

चरादीहि धातूहि ते चरादयो होन्ति यथाक्कमं। चरगतिभक्खनेसु चरन्ति एत्थाति चच्चरं=वीथिचतुक्कं, अङ्गणञ्च, दर-विदारणे, दरीयतीति दद्दरं=वादित्तं, भेरी च। जर-वयोहानियं, अजरीति जज्जरो=जिण्णो। गर घर-सेचने, गरति सिञ्चतीति गग्गरो=भिन्नस्सरो, हंसस्सरो च। मर-पाणचागे, मरतीति मम्मरो=सुक्खपण्णं, पत्थपण्णानं सद्दो च।

१५३. पीतो क्वरो।

पी-तप्पनेतीमस्मा क्वरो होति। अप्पिणीति पीवरं=थूलं।

१५४. चीवरादयो।

चीवरआदयो क्वरन्ता निपच्चन्ते। चिनातिस्स दीघत्तं। चीयतीति चीवरं=कासावं। सम-उपसमे, नदादित्ता वी, परिळाहं समेतीति संवरी=रत्ति। धास्स ई, जालकुमिनादीनि धारेतीति धीवरो=कोट्टो, तायतिस्स ई, येन केनचि अत्तानं तायतीति तीवरो=हीनजाति। नयतिस्सी, नयन्ति एत्थ सत्ताति नीवरं=घरं, एवमञ्ञेपि।

१५५. कुतो क्रिरो।

कु-सद्देतीमस्मा क्रिरो होति। कवति नदतीति कुररो=पक्खी, इत्थियं वीम्हि कुररी।

१५६. वसासा छरो।

वस-निवासे, अस-खेपने, एतेहि छरो होति। वसन्ति एत्थाति वच्छरो=वस्सो। संपुब्बो, संवसन्ति एत्थाति संवच्छरो=सोव। असति विस्सज्जेतीति अच्छरा=देवकञ्ञा, अङ्गुलिफोटनञ्च।

१५७. मसा छेरो च।

मस-अमसनेतीमस्मा छेरो होति छरो च। तण्हाय परामसनं मच्छेरं=सकसम्पत्तिनिगुहनं, मच्छरं=तदेव।

१५८. धू वातो सरो।

धुनाति वातीहि सरो होति। धुनातीति धूसरो=लूखो ईसंपण्डु च। वाति गच्छतीति वासरो=दिवसो।

१५९. भमादीह्यरो।

भम तस मन्द कन्दादीहि अरो होति। भमतीति भमरो=मधुकरो। तसति तन्तं गण्हातीति तसरो=सुत्तवेठ्ठनो। मन्दन्ति मोदन्ति एत्थाति मन्दरो=पब्बतो। कन्दति अव्हायतीति कन्दरो=दरी। दिवस्स एत्तं, देवन्ति कीळन्ति एतेनाति देवरो=पतिरो भाता।

१६०. वदिस्स बदच।

वदतिस्मा अरो योति, वदतिस्स बदादेसो च। वदन्ति एतेनाति बदरो=कक्कन्धूफलं। वीम्हि बदरी=कक्कन्धू।

१६१. वद जनानं ठङच।

वद जनेहि अरो होति, ठङ चान्तादेसो। वदतीति वठरो=मूळो वठरं=थूलं। जायतीति जठरं=उदरं।

१६२. पचिस्सिठङच।

पचतिस्मा अरो होति इठङचान्तादसो। पचन्ति एतेनाति पिठरो=थाली।

१६३. वका अरण।

वक कुक-आदानेतिमस्मा अरणहोति। वकेति आददाति एतायाति वाकरा=मिगबन्धनी।

१६४. सिङ्ग्यङ्गाग मज्जकलाला आरो।

सिङ्गिइति नामधातु, अङ्ग-गमनत्थो, अग-कुटिलगमने, मज्जसंसुद्धियं, कल-सङ्ख्याने, अल-बन्धने, एतेहि आरो होति। विज्झनत्थेन सिङ्गं विय सिङ्गं=नागरिकभावसङ्खातस्स किलेससिङ्गस्सेतं नामं, तंकरोति सिङ्गं वा पयुत्तं, तं करोति रागीसु पभवतीति वा, ''धात्वत्थे नानामस्मी''ति (५.१२) इ, पुब्ब सरलोपो, सिङ्गि, ततो आरो, ''सरोलोपो सरे''ति (१.२६)

इलोपो, पुब्बे ''विप्पटिसेधे''ति (१.२२) अनिट्ठप्पटिसेधो, एत्थ हि आरतो अञ्ञत्थ सावकासपुब्बसरलोपोव, इपच्चयतो अञ्ञत्थ च, सिङ्गारो=किलेससिङ्गकरणं, विलासोति वुत्तं होति। अङ्गति विनासं गच्छतीति अङ्गारो=दड्ढकट्ठं। अगन्ति गच्छन्ति एत्थाति अगारं=घरं। लीहनेन अत्तनो सरीरं मज्जति निम्मलत्तं करोतीति मज्जारो=बिळारो। कलाति निद्देसा लस्स ळत्तं, एतेन गुणं कलीयति परिमीयतीति कळारो=पिङ्गलो। दीघत्तं अलति बन्धतीति अळारो=वङ्को विसालो च।

१६५. कमिस्ससस्सु च।

कम-इच्छायमिच्चस्मा आरो होति, अस्स उ च। कामीयतीति कुमारो=बालो।

१६६. भिङ्गारादयो।

भिङ्गारप्पभुतयो आरन्ता निपच्चन्ते। भर=भरणे, भरणं धारणं पोसनञ्च, धारणत्थस्स भरतिस्स भिङ्गादेसो, भरति दधाति उदकन्ति भिङ्गारो=हेमभाजनं। क्लेद क्लिद-अल्ल भावे, ल लोपो, क्लेदयतीति केदारं=खेत्तं, (के जले सति दारो विदारणमस्साति वा केदारं=तदेव, बहुलाधिकारा सत्तमिया न लोपो।) विद-लाभेतीमस्मा कुपुब्बा आरो दस्स ळत्तं इस्स एत्ताभावो समासे कुस्स ओ च निपच्चन्ते, कुं पथविं विन्दति ततुप्पन्नतायाति कोविळारो=दिगुणपत्तो।

१६७. करा मारो।

करोतिस्मा मारो होति। लोहकिच्चं करोतीति कम्मारो=लोहकारो।

१६८. पुस सरेहि खरो।

पुस सरेहि खरो होति। पोसीयति जलेनाति पोक्खरं=पदुमं। सरति विकारं गच्छतीति सक्खरा=उच्छुविकारो।

१६९. सर वस कला कीरो वस्सुट च।

एतेहि कीरो होति वस्स उट च। सरीयतीति सरीरं=देहो। वसन्ति वासं करोन्ति एतेनाति उसीरं=बीरणमूलं। अनेन थूलादि कलीयति परिमीयतिति कलिरो=अङ्कुरो।

१७०. गम्भीरादयो।

गम्भीरआदयो कीरन्ता निपच्चन्ते। गमिस्स भुक, मलोपो वा, पथविं, भिन्दित्वा गच्छति पवत्ततीति गम्भीरो, गभीरो= अगाधो, कुलिस्स लस्स ळो, पादे कुलति पत्थरतीति कुळीरो=कक्कटो, एवमञ्ञेपि।

१७१. खज्ज वल्ल मसा ऊरो।

खज्ज-मज्जने, वल वल्ल-संवरणे, सम-आमसने, एतेहि ऊरो होति, खज्जीयतीति खज्जूरो, वीम्हि खज्जूरी=रुक्खविसेसो। वल्लीयति संवरीयतीति वल्लूरो=सुक्खमंसो। मसीयतीति मसूरो=वीहिविसेसो।

१७२. कप्पूरादयो।

कप्पूरआदयो ऊरन्ता निपच्चन्ते। तुट्ठिमुप्पादेतुं कप्पति सक्कोतीति कप्पूरं=घनसारो। करोतिस्स अस्सु, किब्बिसं करोतीति कुरूरो=पापकारी। पस-बाधने, पसति पीळेतीति पसूरो=दुट्ठो, ब्यञ्जनं, एवंनामको च, एवमञ्ञेपि।

१७३. कठ चका ओरो।

कठ-किच्छजीवने, चक-परिवितक्कने, एतेहि ओरो होति। कठति किच्छेन जीवतीति कठोरो=थद्धो। चकति परिवितक्केतीति चकोरो=पक्खिविसेसो।

१७४. मोरादयो।

मोरआदयो ओरन्ता निपच्चन्ते। मी-हिंसायं, ईलोपो, मयति हिंसतीति मोरो=मयूरो। कस-गमने, अस्सि, कसति गच्छतीति किसोरो=पठमवयो अस्सो। महीयति पूजीयतीति महोरो=वम्मिको, एवमञ्ञेपि।

१७५. कुतो एरक।

कु-सद्देतीमस्मा एरक होति। ''युवण्णानमियङुवङ सरे''ति (५.१३६) उवङ, कवति नदतीति कुवेरो=वेस्सवणो।

१७६. भू सूहि रिक।

भूसत्तायं, सू-पसवने, एतेहि रिक होति। भवतीति भूरि=पहूतं, ङीम्हि भूरी=मेधा। सवति हितं पसवतीति सूरि=विचक्खणो।

१७७. मी कसी नीहि रु।

मी-हिंसायमिच्चस्मा, कपुब्बा सयतिस्मा, नयतिस्मा च रु होति। रंसीहि अन्धकारं मीयति हिंसतीति मेरु=सिरेरु, के जले सयति पवत्ततीति कसेरु=तिणविसेसो। अत्तनिस्सिते सुन्दरत्तं नेति पापेतीति नेरु=पब्बतो।

१७८. सिना एरु।

सिना-सोचेय्येतीमस्मा एरु होति। सिनाति सुचिं करोतीति सिनेरु=पब्बतराजा।

१७९. भी रुहि रुक।

भी-सये, रु-सद्दे, एतेहि रुक होति। भायन्ति एतस्माति भीरु=भयानको। रवतीति रुरु=मिगो।

१८०. तमा बूलो।

तम-भूसनेतीमस्मा बूलो होति। मुखं तमेति भूसेतीति तम्बूलं=मुखभूसनं।

१८१. सितो लकवाला।

सि-सेवायमिच्चस्मा लकवालइच्चेते पच्चया होन्ति। सत्तेहि सेवीयतीति सिला=पासाणो, सेलो=पब्बतो। जलं सेवतीति सेवालो=जलतिणं।

१८२. मङ्ग कम सम्ब सब सक वस पिस केव कल पल्ल कठ पट कुण्ड मण्डा अलो।

मङ्ग-मङ्गल्ये, कम-इच्छायं, सम्ब-मण्डने, सबइति अस्सेव कतमलोपस्स निद्देसो, सक-सत्तिय, वस-निवासे, पिसगमने, केव-सेवने, कल-सङ्ख्याने, पल्ल-गमने, कठ किच्छजीवने, पट-गमनत्थो, कुण्ड-दाहे, मण्ड-भूसने, एतेहि अलो होति। मङ्गन्ति सत्ता एतेन वुद्धिं गच्छन्तीति मङ्गलं=पसत्थं। कामीयतीति कमलं-पङ्कजं। सम्पति मण्डेतीति सम्बलं=पाथेय्यं। सबलं=विसभाग वण्णवन्तं। सक्कोति वत्तुन्ति सकलं=सब्बं। वसतीति वसलो=सुद्दो। पियभावं पिसति गच्छतीति पेसलो=पियसीलो। केवति पवत्ततीति केवलं=सकलं। कलीयति परिमीयति उदकमेतेनाति कललं=अपत्थिन्नं, पल्लति आगच्छति उदकमेतस्माति पल्ललं=अप्पोदको सरो। कठन्ति एत्थ दुक्खेन यन्तीति कठलं=कपालखण्डं, पटति वुद्धिं गच्छतीति पटलं=समू- हो। घंसेन कुण्डति दहतीति कुण्डलं=कण्णाभरणं। मण्डीयति परिच्छेदकरणवसेन भूसीयतीति मण्डलं=समन्ततो परिच्छिन्नं।

१८३. मुसा कलो।

मुसतिस्मा कलो होति। मुसति एतेनाति मुसलो=अयोग्गो।

१८४. थलादयो।

थलआदयो कलन्ता निपच्चन्ते। ठस्स थो, पुब्बसरलोपो, तिट्ठन्ति एत्थाति थलं=उन्नतप्पदेसो। पा-पाने, उपुब्बो, द्विभावसरलोपा, उदकं पिवतीति उप्पलं=कुवलयं। पतिस्स पाटं, पतति गच्छति परिपाकन्ति पाटलं=फलं, तम्बवण्णं कुसुमञ्च। बंहिस्स निग्गहीतलोपो, बंहति वुद्धिं गच्छतीति बहलं=घनं। चुपिस्स उस्स अत्तं, चुपति एकत्थ न तिट्ठतीति चपलो=अनवट्ठितो, एवमञ्ञेपि।

१८५. कुला कालो च।

कुल-पत्थारेतीमस्मा कालो होति कलो च। कुलति अत्तनो सिप्पं पत्थरतीति कुलालो=कुम्भकारो। कुलति पक्खे पसारेतीति कुललो=पक्खिजाति।

१८६. मुळालादयो।

मुळालआदयो कालन्ता निपच्चन्ते। मील-निमीलने, उत्तळतानि, उद्धटमत्ते निमीलतीति मुळालं=भिसं। बल-पाणने, इत्त- ळत्तानि, मूसिकादिखादनेन बलति जीवतीति बिळालो=मज्जारो। कप्पिस्स संयोगादिलोपो, कप्पन्ति जीविकं एतेनाति कपालं=घटादिखण्डं। पी तप्पने। ''युवण्णानमियङुवङ सरे''ति (५.१३६) इयङ, अत्तनो फलेन सत्ते सन्तप्पेतीति पियालो-रुक्खो। कुण-सद्दे, वातसमुट्ठिता वीचिमाला एत्थ कुणन्ति नदन्तीति कुणालो=एको महासरो। विस-पविसने, पविसन्ति

एत्थाति व्सालो=वित्थिण्णो। पल-गमने, वातेन पलति गच्छतीति पलालं=सस्सानमुपनीतधञ्ञानं नाळपत्तानि। सरतिस्स सिगो, ससादयो सरति हिंसतीति सिगालो=कोत्थु, एवमञ्ञेपि।

१८७. चण्ड पता णालो।

चण्ड-चण्डिक्ये, पत पथ-गमने, एतेहि णालो होति। चण्डेति पीळेतीति चण्डालो=मातङ्गो, पतति अधोगच्छतीति पातालं=रसातलं।

१८८. मादितो लो।

मा-माने, इ-अज्झेनगतीसु, पी-तप्पने, दू-परितापे, एवमादीहि लो होति। मीयति परिमीयतीति माला=पन्ति। एति गच्छतीति एला=सुखुमेला। पिणेति तप्पेति एत्थाति पेला=आसित्तकूपधानं। दूयति परितापेतीति दोला=कीळनयानकं। कलसङ्ख्याने, कलनं कल्लं=युत्तं।

१८९. अन सल कल कुक सठ महा इलो।

अन-पाणने, सल-गमने, कल-सङ्ख्याने, कुक वक-आदने, सठ-कितवे, अरह मह-पूजायं, एतेहि इलो होति। अनति पवत्ततीतिअनिलो=मालुतो। सलति गच्छतीति सलिलं=जलं। कलति पवत्ततीति कलिलं=गहनं। कुकति अत्तनो नादेन सत्तानं मनं गण्हातीति कोकिलो=परपुण्डो। सठति वञ्चेतीति सठिलो=सठो। महीयति पूजीयतीति मयिला=इत्थी।

१९०. कुटा किलो।

कुट-कोटिल्येतीमस्मा किलो होति। अकुटि कुटिलत्तमगमीति कुटिलो=वङ्को।

१९१. सिथिलादयो।

सिथिलआदयो किलन्ता निपच्चन्ते। सह खमायं, सहिस्स सिथत्तं, सहितुमलन्ति सिथिलं=अदळ्हं। कम्पिस्स संयोगादिलोपो, परदुक्खे सति कम्पतीति कपिलो=इसि। कब-वण्णे, बस्स पो, अकबि नीलादिवण्णत्तमगमीति कपिलो=वण्णविसेसो। मथिस्स मिथो, मथीयतीति मिथिला=पूरी, एवमञ्ञेपि।

१९२. चट कण्ड वट्ट पुथा कुलो।

चट-भेदने, कण्ड-छेदने, वट्ट-वत्तने, पुथ पथ-वित्थारे, एतेहि कुलो होति। चटति मित्ते भिन्दतीति चटुलो=चाटुकारी। कण्डीयति छिन्दीयतीति कण्डुलो=रुक्खो। वट्टतीति वट्टुलो=परिमण्डलो। अपत्थरीति पुथुलो=वित्थारो।

१९३. तुमुलादयो।

तुमुलआदयो कुलन्ता निपच्चन्ते। तम खेदने, अस्सु, अतमि वित्थिण्णत्तमगमीति तुमुलो=पत्थटो। तमिस्स डुक, तमीयति विकारमापादीयतीति तण्डुलो=वीहिसारो। निपुब्बस्स चिनातिस्स इलोपो, अत्थिकेहि निचीयतेति

निचुलो=हिज्जलो, एवमञ्ञेपि।

१९४. कल्ल कप तक्क पटा ओलो।

कल्ल-सद्दे, कप-अच्छादने, तक्क-वितक्के, पट-गमने, एतेहि ओलो होति। वातवेगेन समुद्दतो उद्धहित्वा कल्लति नदतीति कल्लोलो=महावीचि। कपति दन्ते अच्छादतीति कपोलो=वदनेकदेसो। तक्कीयतीति तक्कोलं=कोलकं। पटति ब्याधिमेतेन गच्छतीति पटोलो=तित्तको।

१९५. अङ्गा उलोली।

अङ्ग-गमनत्थो, एतस्मा उलउली होन्ति। अङ्गन्ति एतेन जानन्तीति अङ्गुलं=पमाणं। अङ्गति उग्गच्छतीति अङ्गलि=करसाखा।

१९६. अञ्जालि।

अञ्ज-ब्यत्ति मक्खन गति कन्तीसु, एतस्मा अलि होति। अञ्जेति भत्तिमनेन पकासेतीति अञ्जलि=करपुटो।

१९७. छदा लि।

छद-संवरणे, एतस्मा लि होति। छादेतीति छल्ली=सकलिका।

१९८. अल्ल्यादयो।

अल्लिआदयो लिअन्ता निपच्चन्ते। अर-गमने, अरति पवत्ततीति अल्लि=रुक्खो। नयतिस्स एत्ताभावो, अत्तिकेहि नीयतीति ४ नीलि, ङीम्हि नीली=गच्छजाति। ''सरम्हा द्वे''ति (१.३४) लस्स द्विभावे रस्सत्ते च निल्लीतिपि होति। पालिस्स पा, पालेति रक्खतीति पालि, ङीम्हि पाली=पन्ति। पालिस्स पलो, पालेति रक्खतीति पल्लि=कुटि। चुद-चोदने, ओत्ताभावो, चोदीयतीति चुल्लि=उद्धनं, एवमञ्ञेपि।

१९९. पिलादीह्यवो।

पिल-वत्तने, पल्ल-गमने, पण-ब्यवहारथुतीसु, एवमादीहि अवो होति। पिल्यतेति पेलवो=लहु। पल्लतीति पल्लवो=किसलयं। पणीयतीति पणवो=मुदङ्गो। एवमञ्ञेपि।

२००. साळवादयो।

साळवआदयो अवन्ता निपच्चन्ते। सल-गमनत्थो, उपन्तस्स दीघो ळत्तञ्च निपातना। सलति पवत्ततीति साळवो=अभिसङ्खतं बदरादिफलखादनीयं। कित-निवासे, एत्ताभावो, केततीति कितवो=जूतकारो, चोरो च। मू-बन्धने, ऊस्स रस्सत्तं, तुञ चावस्स, मुनाति बन्धतीति मुतवो=चण्डालो। वल वल्ल-संवरणे, ळत्तं, वलति, वल्यतेति वा वळवा=तुरङ्गकन्ता। मुर-संवेळने, मुरीयतीति मुरवो=मुदङ्गो, एवमञ्ञेपि।

२०१. सरा आवो।

सरतिस्मा आवो होति। सरति पवत्ततीति सरावो=भाजनविसेसो।

२०२. अल मल बिला णुवो।

अल-बन्धने, मल मल्ल-धारणे, बिल-भेदने, एतेहि णुवो होति। लताहि अलीयतीति आलुवो=गच्छजाति। मलति धारेतीति मालुवो=पत्तलता। बिलति भिन्दतीति बेलुवो=रुक्खो।

२०३. गात्वी वो।

का गा-सद्देतीमस्मा ईवो होति। गायन्ति एतायाति गीवा=गलो।

२०४. सुतो क्वत्वा।

सु-सवनेतीमस्मा क्व क्वा होन्ति। सुणातीति सुवो=कीरो। सुवा=सुणो।

२०५. विद्वा।

विदतिस्मा क्वा पररूपाभावो अ निपच्चन्ते। विदति जानातीति विद्वा=विदू।

२०६. थुतो रेवो।

थु-अभित्थवे, एतस्मा रेवो होति। थवति सिञ्चतीति थेवो=फुसितं।

२०७. समा रिवो।

सम-उपसमे, एतस्मा रिवो होति। समेति उपसमेतीति सिवो=उमापति, सिवा=सिगालो, सिवं=सन्ति।

२०८. छदा रवि।

छद-संवरणे, एतस्मा रवि होति। छादेतीति छवि=जुति।

२०९. पूर तिमा किसो रस्सो च।

पूर-पूरणे, तिम-तेमने, एतेहि किसो होति ऊस्स रस्सो च। पूरेतीति पुरिसो=पुमा। (पुरे उच्चट्ठाने सेति पवत्ततीति वा पुरिसो=सोव।) तेमेतीति तिमिसं=तमो।

२१०. करा ईसो।

करोतिस्मा ईसो होति। करीयतीति करीसं=गूथं।

२११. सिरीसादयो।

सिरीसआदयो ईसन्ता निपच्चन्ते। सरतिस्स अस्सि, सप्पदट्ठकालादीसु सरीयतीति सिरीसो=रुक्खो। पूरिस्स रस्सत्तं, पूरेतीति पुरीसं=गूथं। तलिस्स दीघो, तलति सत्तानं पतिट्ठानं भवतीति तालीसं=ओसधिविसेसो, एवमञ्ञेपि।

२१२. करा रिब्बिसो।

करोतिस्मा रिब्बिसो होति। करीयतीति किब्बिसं=पापं।

२१३. ससास वस विस हन वन मनान कमा सो।

सस-गति हिंसा विस्ससस पाणनेसु, अस-खेपने, वस-निवासे, विस-पविसने, हन-हिं सायं, वन सन-सम्भत्तियं, मन-ञाणे, अन-पाणने, कम-इच्छायं, एतेहि सो होति, ससन्ति जीवन्ति सत्ता एतेनाति सस्सं=कलमादि, असति खिपतीति अस्सो=हयो। वसन्ति एत्थाति वस्सं=संवच्छरो। विसतीति वेस्सो=ततियवण्णो। हञ्ञतेति हंसो=सितच्छदो। वनोति पत्थरतीति वंसो=सन्तानो, वेळु च। मञ्ञतेति मंसं=पिसितं, अनति जीवति एतेनाति अंसो=एकाट्ठासो, भुजसिरो च। कामीयतीति कंसो=परिमाणं।

२१४. आमि थु कु सीतो सक।

आपुब्बो मि-पक्खेपे, थु-अभित्थवे कु-सद्दे, सी-सये, एतेहि सक होति। आमीयति अन्तो पक्खिपीयतीति आमिसं=भक्खं। थवीयतीति थुसो=वीहितचो। कवति वातेन नदतीति कुसो=तिणविसेसो। सयन्ति एत्थ ऊकाति सीसं=मुद्धा, कालतिपु च।

२१५. फस्सादयो।

फस्सआदयो सकअन्ता निपच्चन्ते। फुस-सम्फस्से, उस्सत्थं, फुसतीति फस्सो=कायविञ्ञाणविसयो। फुस्सो=नक्खत्तं। पुस पोसने, पोसीयतीति पुस्सं=फलविसेसो। भू-सत्तायं, भूस्स रस्सो, अभवीति भुसं=तुच्छधञ्ञं, अंकिस्स उक, अङ्केति अनेन अञ्ञेति अङ्कुसो=गजपतोदो। फाय-वुद्धियं, पपुब्बो, यलोपो, फायति वुद्धिं गच्छतीति पप्फासं=देहकोट्ठासविसेसो। कलिस्मा सस्स माञ, कुलिस्मा च, कलीयति परिमीयतीति कम्मासो=सबलो, कम्मासं=पापं। कुलति पत्थरतीति कुम्मासो=भक्खविसेसो। मनिस्स जूक, मञ्ञति सधनत्तं एतायाति मञ्जूसा=कट्ठपेळा। पीस्स यूक, पिणेतीति पीयूसं=अमतं। कुल-संवरणे, इक, कुलीयति संवरीयतीति कुलिसं=वजिरं। बल-संवरणे, इक, लस्स ळत्तञ्च, बलति एतेन मच्छे गण्हातीति बळिसो=मच्छवेधनं। महिस्स एक, महीयतीति महेसी=कताभिसेका पधानित्थी, एवमञ्ञेपि।

२१६. सुतो णिसक।

सुणातिस्मा णिसक होति। सुणातीति सुणिसा=पुत्तभरिया।

२१७. वेतात यु पनाल कल चमा असो।

वेत-सुत्तियो धातु, अत-सातच्चगमने, यु-मिस्सने, पनथुतियं, अल-बन्धने, कल-सङ्ख्याने, चम-अदने, एतेहि असो होति। वेतति पवत्ततीति वेतसो=वानीरो। अतति वातेरितो निच्चं वेधत्तं यातीति अतसो=वनप्पतिविसेसो वीम्हि अभसी=गच्छविसेसो। यवीयति मिस्सीयतीति यवसो=पसुघासो। पञ्ञते थवीयतेति पनसो=कण्डणीफलो। अलीयति बन्धियतीति अलसो=मन्दकारी। कलीयतीति कलसो=कुम्भो। चमति अदति अनेनाति चमसो=होमभाजनं।

२१८. वय दिव कर करेह्यसणसकपासकसा।

वयत्यादीहि असणआदयो होन्ति यथाक्कमं। वयति गच्छतीति वायसो=काको। दिब्बन्ति एत्थाति दिवसो=दिनं। करीयतीति कप्पासो=सुत्तसम्भवो। किब्बिसं करोतीति कक्कसो=फरुसो।

२१९. सस मस दंसासा सु।

ससादीहि सु होति। ससति जीवतीति सस्सु=जयम्पतीनं माता। मसीयतीति मस्सु=पुरिसमुखे पवद्धलोमानि। ‘‘लोपो’’ति (१.३९) निग्गहीतलोपो, दंसीयति बन्धमनेनाति दस्सु=चोरो। असीयति खिपीयतीति अस्सु=बप्पो।

२२०. विदा दसुक।

विदिस्मा दसुक होति। विदति जानातीति विद्दसु=विद्वा।

२२१. ससा रीहो।

ससतिस्मा रीहो होति। ससति हिंसतीति सीहो=केसरी।

२२२. जीवामा हो वमा च।

जीव-पाणधारणे, अम-गमने, एतेही हो होति, वमा चान्तादेसा यथाक्कमं, आदेसविधानं पन पररूपबाधनत्थं। ‘‘ब्यञ्जने दीघरस्सा’’ति (१.३९) रस्सत्तं, जीवन्ति एतायाति जिव्हा=रसना। अमति पवत्ततीति अम्हं=अस्मा। पपुब्बे अमति पवत्ततीति पम्हं=पखुमं।

२२३. तण्हादयो।

तण्हआदयो हन्ता निपच्चन्ते। तस-पिपासायं, सस्स णत्तं, एवमुपरि च, तसति पातुमिच्छति एतायाति तण्हा=लो भो। कस-विलेखने, कसतीति कण्हो=काळो। जुत-दित्तियं, तस्स णत्तं, ओत्ताभावो च, जोतेतीति जुण्हा=चन्द- पभा। मीलिस्स ळो, निमीलन्त्यनेन अक्खीनीति मीळ्हं-गूथं। गाहिस्स ळो, गय्हतीति गाळ्हं, दहिस्स ळो, दहतीति दळ्हं, बहिस्स ळो, दीघो च, बहति वुड्ढिं वच्छतीति बाळ्हं, एते तयो दळ्हत्था। गमिस्स अस्सि, गच्छतीति गिम्हो-निदाघो। पटकलानं अक च, पटति यातीति पटहो=भेरिविसेसो। कलीयति परिमीयति अनेन सूरभावोति कलहो=विवादो। कटवरानं आक, कटन्ति एत्थ ओसधादिं मद्दन्तीति कटाहो=भाजनविसेसो। वरीयतीति वराहो=सूकरो। लुनातिस्स ओ, लुनाति एतेनाति

लोहं=अयादि। एवमञ्ञेपि।

२२४. पणुस्सहा हिही णोळङ च।

पणा उपुब्बसहा च हिही होन्ति यथाक्कमं, णओळङ चान्तादेसा, आदेसविधानसामत्थिया पररूपाभावो, पणीयति वोहरीयतीति पण्हि=पादस्स पच्छाभागो। उस्सहतीति उस्साळ्ही-वीरियं।

२२५. खी मि पी चु मा वाकाहि ळो उस्स वा दीघो च।

खी-खये, मि-पक्खेपे, पी-तप्पने, चु-चवने, मा-माने, वी वा-गमने, का गा-सद्दे, एतेहि ळो होति, उकारस्स वा दीघो च। खीयतीति खेलो=लाला। मीयति पक्खिपीयतीति मेळा=मसि। पिणेतीति पेळा=भाजनविसेसो। चवतीति चूळा=सिखा। चोळो=पिलोतिको। मीयति परिमीयतीति माळो=एककूटसङ्गहितो अनेककोणवन्तो पटिस्सयविसेसो। वाति गच्छतीति वाळो=चण्डमिगो। कायति फरुसं वदतीति काळो=कण्हो, वीम्हि काळी=कण्हा।

२२६. गुतो ळक च।

गु-सद्देतीमस्मा ळक होति ळो च। गवति पवत्तति एतेनाति गुळो=उच्छुविकारो। गोळो=लकुण्डको।

२२७. पङ्गुळादयो।

पङ्गुळआदयो ळक अन्ता निपच्चन्ते। खञ्ज-गतिवेकल्ले, पङ्गुआदेसो, अखञ्जि गतिवेकल्लमापज्जीति पङ्गळो=पीठसप्पी। करोतिस्मा ळस्स खञ, किब्बिसं करोतीति कक्खळो=कुरूरो। कुकतिस्स कुक, कुक्यति पापकारीहि आदीयतीति कुक्कुळं=सङ्कु संकिण्णो सोब्भो। कुक्कुळो=थुसग्गी। मंकिस्स उक, बिन्दु लोपो च, मंकेति वनं मण्डेतीति मकुळो=अविकसितकुसुमं।

२२८. पातो ळि।

पातिस्मा ळि होति। अत्थं पाति रक्खतीति पाळि=तन्ति।

२२९. वीतो ळु।

वीतिस्मा ळु होति। वेति पवत्ततीति वेळु=वेणु।

(इति अवग्गपच्चयविधानं)।

इति मोग्गल्लाने ब्याकरणे वुत्तियं

ण्वादिकण्डो सत्तमो।

सुत्तं धातु गणो ण्वादि, नामलिङ्गानुसासनं।
यस्स तिट्ठति जीव्हग्गे, स ब्याकरणकेसरी॥

समत्ता चायं मोग्गल्लानवुत्ति

सत्तहि भाणवारेहि।

१. यस्स रञ्ञो पभावेन, भावितत्तयमाकुलं।
अनाकुलं दुलद्धीहि, पापभिक्खूहि सब्बसो॥

२. लङ्काय मुनिराजस्स, सासनं साधु सण्ठिकं।
पुण्णचन्दसमायोगा, वारिधीव विवड्ढते॥

३. परक्कमभुजे तस्मिं, सद्धाबुद्धिगुणोदिते।
मनुवंसद्धजाकारे, लङ्कादीपं पसासति॥

४. मोग्गल्लानेन थेरेन, धीमता सुचिवुत्तिना।
रचितं यं सुविञ्ञेय्य-मसन्दिद्ध'मनाकुलं॥

५. असेसविसयब्यापि, जिनब्यप्पथ निस्सयं।
सद्दसत्थ'मनायास-साधियं बुद्धिवड्ढनं॥

६. तस्स वुत्ति समासेन, विपुलत्थपकासनी।
रचिता पुन तेनेव, सासनुज्जोतकारिनाति॥

मोग्गल्लानब्याकरणं निट्ठितं।